CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

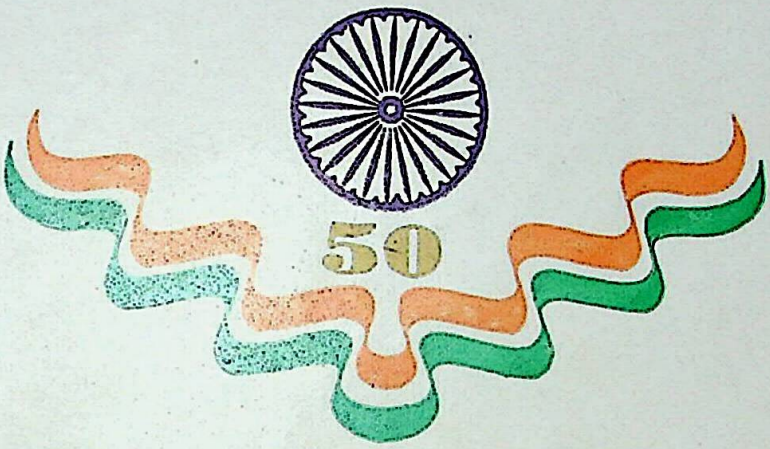


# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

ग्रन्थाङ्क 27

# राजस्थानी साहित्य-संग्रह

## भाग-1

1997

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

*प्रधान सम्पादक*

**पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि**

(सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर)

**ग्रन्थाङ्क : 27**

# राजस्थानी साहित्य - संग्रह

## भाग-1

(खीची गंगेव नींबावत रो दो-पहरो, राजान राउतरो वात-वणाव आदि)

*सम्पादक*

**पं. नरोत्तमदासजी स्वामी,** एम.ए.

(अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर)

*प्रकाशक*

**राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर**

**Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur**

द्वितीयावृत्ति 1997 मूल्य : 43.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

*राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित*

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानप्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

*प्रधान सम्पादक*

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

ग्रन्थाङ्क : 27

# राजस्थानी साहित्य - संग्रह

## भाग-1

*सम्पादक*

पं. नरोत्तमदासजी स्वामी

*प्रकाशक*

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

प्रथमावृत्ति : 1957

द्वितीयावृत्ति : 1997 मूल्य : 43.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# प्रधान सम्पादकीय

संस्कृत साहित्य में गद्यलेखन की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। दण्डी का दशकुमार चरित, सुबन्धु की वासवदत्ता, कादम्बरी एवं हर्ष चरित्र प्राचीन गद्य के निदर्शनरूप में उपस्थापित किये जाते हैं। हिन्दी भाषा में गद्य काव्य की परम्परा सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से मिलती है। हालांकि राजस्थानी एवं गुजराती गद्य काव्य इससे पूर्व के भी मिलते हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन में प्राचीन राजस्थानी की तीन गद्य रचनायें क्रमशः—(1) खीची गंगेव नींबावत रो दोपहरो; (2) रामदास वैरावत री आखड़ी री बात; (3) राजान-राउतरो बात-बणाव, पुनर्मुद्रण रूप में पुनः प्रस्तुत की जा रही है। आशा है राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति में रुचि रखने वाले अध्येताओं हेतु यह उपादेय सिद्ध होंगी।

आनन्द कुमार
आर.ए.एस.
निदेशक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# प्रधान सम्पादकीय वक्तव्य

प्राचीन भारतीय साहित्य में पद्य के साथ गद्य का भी यथोचित रूप में प्रयोग किया गया है। वेदों, जैनागमों, संस्कृत नाटकों और कथा-ग्रन्थों आदि में गद्य की छटा विशेष द्रष्टव्य है। संस्कृत-साहित्य में पंचतंत्र, कथासरित्सागर, दशकुमारचरित्, शुकबहुत्तरी सिंहासनबत्तीसी, बैतालपच्चीसी आदि भी गद्य के अनूठे उदाहरण हैं। राजस्थानी भाषा में भी गद्य-साहित्य का निर्माण विशेष रूप में हुआ है। हजारों की संख्या में ऐतिहासिक ख्यातें, वार्ताएं और वचनिकाएं आदि लिखी गई हैं, जिनमें मुख्यतः राजस्थानी गद्य का व्यवहार किया गया है। साथ ही संस्कृत के गद्य-ग्रन्थों के अनुवाद भी प्रचुर मात्रा में राजस्थानी भाषा में किये गये हैं।

राजस्थानी वार्ताओं में राजस्थानी संस्कृति का बड़ा ही अनूठा चित्रण किया गया है। इन वार्ताओं में राजस्थानी जनता की दिनचर्या, हाट, उपवन, घर-प्राङ्गण, उत्सव, युद्ध, क्रीड़ा आदि का विस्तृत और सजीव वर्णन मिलता है। राजस्थान और बाहर के ग्रन्थ-भण्डारों में राजस्थानी वार्ताओं के छोटे-बड़े कई संग्रह मिलते हैं। राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर (Rajasthan Oriental Research Institute) के संग्रहालय में भी ऐसी वार्ताओं के कई हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं जिनको यथाशक्य शीघ्र ही सुसम्पादित रूप में प्रकाशित किया जावेगा।

प्रस्तुत संग्रह में तीन वर्णनात्मक राजस्थानी वार्ताओं को प्रकाशित किया जा रहा है। इन वार्ताओं में आदर्श राजपूतों की दिनचर्या का विस्तृत वर्णन मिलता है जिससे राजस्थानी संस्कृति के कई अंगों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। वार्ताओं का सम्पादन राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् श्री नरोत्तमदासजी स्वामी द्वारा हुआ है और प्रारम्भ में राजस्थान के प्रसिद्ध अन्वेषक श्री अगरचन्दजी नाहटा के दो निबन्ध भी सम्बन्धित विषय पर प्रकाशित किये गये हैं जिनसे पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य संचालक
राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर

जयपुर
ता० १० अगस्त, १९५६ ई०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# निवेदन

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्राचीन राजस्थानी साहित्य की तीन महत्वपूर्ण रचनाओं का संग्रह किया गया है। इनमें प्रथम दो अर्थात् खीची गंगेव नींबावतरो दोपहरो और रामदास वैरावतरी आख-ड़ीरी वात बहुत प्रसिद्ध और लोकप्रिय रचनायें रही हैं और राजस्थानी कहानी-संग्रहों में स्थान-स्थान पर उनकी प्रतियां मिलती हैं।

'खीची गंगेव नींवावतरो दोपहरो' एक सुन्दर गद्य-काव्य है जिसके काव्यमय वर्णनों की छटा निराली है और सहृदय को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकती। इसमें खीची-वंशीय नींबा के पुत्र गंगेव या गंगा की और उसके साथियों की एक दिन की दिनचर्या का वर्णन है। दुपहर का वर्णन प्रधान होने से इसका नाम दोपहरो या बे-पहरो है। उत्तर-मध्यकालीन राजपूत सामंत के जीवन और रहन-सहन पर इससे अच्छा प्रकाश पड़ता है।

दूसरी रचना में मारवाड़ के राव रिड़मल (रणमल) के पुत्र वैरा के पुत्र रामदास राठौड़ का वर्णन है। रामदास अपने समय में नामी वीर हुआ। इस 'वात' में उसके १९ विरुदों और ८४ आखड़ियों का उल्लेख किया गया है। अन्त में उसके पराक्रम की एक कथा भी दी गई है। 'आखड़ी' का अभिपाय 'न करने की मानता' (मनौती) से अथवा शपथ या सौगन्ध से है। रामदास ने इन चौरासी बातों के न करने की मानता ले रखी थी। इन विरुदों तथा आखड़ियों से राजपूती जीवन के आदर्श का चित्र खड़ा हो जाता है।

तीसरी रचना 'राजान-राउतरो वात-वणावे' में त्रिविध प्रकार के विविध अवसरोपयोगी वर्णनों का विस्तृत संग्रह है। कथाओं के कहने वाले (और लेखक) कथा कहते समय स्थान-स्थान पर ऐसे वर्णनों का उपयोग करते आये हैं। जैनों के प्राचीन आगम ग्रन्थो में इस प्रकार के सुन्दर वर्णन आये हैं। मैथिल विद्वान् ज्योतिरीश्वर ने पंद्रहवीं शताब्दी में वर्ण-रत्नाकर नामक ग्रन्थ की रचना की जिसमें कथा के विविध प्रसंगों और अवसरों के वर्णन संगृहीत हैं। संस्कृत के कवि-शिक्षा नामक ग्रन्थ में भी काव्य के विविध प्रसंगों और विषयों के वर्णन में किन-किन बातों का वर्णन करना चाहिए यह बताया गया है। राजस्थानी में वाग्विलास नाम से अनेक संग्रह अथवा कथाकाव्य तैयार हुए जिनमें विविध प्रसंगों और विविध अवसरों के वर्णनों को संकलित किया गया। जिन-माणिक्य सूरि का पृथ्वीचंद्र चरित्र अपर नाम वाग्विलास (संवत् १४७० के लगभग) इस प्रकार का सुन्दर कथा-काव्य है जिसके विविध वर्णन बड़े ही भावपूर्ण हैं। 'वात-वणाव' उसी परंपरा की रचना है। रचना प्राचीन नहीं है, पर वर्णन प्राचीन है। ऋतु-वर्णन में महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ की 'क्रिसन-रुकमणीरी वेलि' का प्रभाव है, वह वेलि के पद्यों का गद्यानुवाद-सा ही जान पड़ता है। 'दोपहरो' के वर्णनों के साथ भी उसका पर्याप्त साम्य है।

इस 'वात-वणाव' के वर्णन-संग्रह में उक्त अन्यान्य ग्रन्थों के वर्णन-संग्रहों से एक विशेषता है। उन ग्रन्थों में जहां वर्णनों का केवल संग्रह-मात्र है वहां 'वात-वणाव' में उनको एक क्रमबद्ध कथा के रूप में ग्रथित कर दिया गया है, जिससे यह केवल वर्णनों का संग्रह न रह कर एक सुन्दर कथा-काव्य बन गया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



'दोपहरो' का संपादन बहुत वर्ष पूर्व बीकानेर के अनूप-संस्कृत पुस्तकालय के एक कहानी संग्रह की प्रति के आधार पर किया गया था। बाद में दूसरी प्रतियां भी देखने में आई और उनमें यत्र-तत्र पाठभेद भी दिखाई पड़े पर उन पाठभेदों को संगृहीत करने का अवसर नहीं आया। इसी प्रकार 'वात-वणाव' का संपादन अपने संग्रह की प्रति के आधार पर करना आरंभ किया था। पर यह कार्य दो-ही-चार पृष्ठों तक बढ़ सका। मेरे प्रिय शिष्य दीनानाथ खत्री एम. ए. ने जो उन दिनों अनूप संस्कृत पुस्तकालय में राजस्थानी-असिस्टेंट का कार्य कर रहे थे, इसके बाकी अंश की प्रतिलिपि तैयार कर डाली। जब मुनि श्रीजिनविजयजी महाराज बीकानेर पधारे तो उन्होंने इन रचनाओं को देखा और इनको राजस्थान पुरातत्व-मंदिर-ग्रन्थमाला में प्रकाशित करने के लिये मांग लिया। 'वैरावत रामदासरी आखड़ीरी वात' की प्रतिलिपि श्री अगरचंद नाहटा ने अपने संग्रहालय की एक हस्तलिखित प्रति से तैयार करवायी थी।

'दोपहरो' और 'आखड़ी' की प्रतियां कई स्थानों पर मिलती हैं तथा 'वात वणाव' की एक अन्य प्रति भी राजस्थान-पुरातत्व-मंदिर के संग्रह में बाद में निकल आई। अच्छा होता कि इन रचनाओं को प्राप्य प्रतियों के आधार पर संपादित करके पाठ-भेदों के साथ प्रकाशित किया जाता। पर यह कार्य समय-सापेक्ष था और उधर पुरातत्व मंदिर का आर्थिक वर्ष समाप्त हो रहा था। इसलिये यही उचित समझा गया कि रचनाएं जिस रूप में हैं उसी रूप में अभी छाप दी जायं जिससे राजस्थानी साहित्य के ये विविध रूप एक वार साहित्य-प्रेमियों के सामने आ जायं।

राजस्थानी गद्यकाव्यों और वर्णन-संग्रहों की परंपरा का संक्षिप्त परिचय कराने के लिये राजस्थान के सुप्रसिद्ध शोधकर्ता विद्वान् श्री अगरचंद नाहटा के दो निबंधों को उद्धृत किया जा रहा है। इनको उद्धृत करने की अनुमति देने के लिये मैं श्रीनाहटाजी का अत्यंत आभारी हूं।

—नरोत्तमदास स्वामी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# राजस्थानी गद्यकाव्य की परम्परा

भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में कवि की कृति को काव्य माना गया है और कवि को क्रान्तदर्शी मेधावी और पंडित कहा गया है। पीछे से 'कवि' शब्द छन्दोबद्ध रचना करने वाले विद्वानों के लिए रूढ़ हो गया और छन्दोबद्ध रचना 'काव्य' के नाम से सम्बोधित की जाने लगी। प्राचीन विद्वानों ने 'काव्य' शब्द की व्याख्या भिन्न-भिन्न प्रकार से की है। भामह और रूद्रट ने "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्","शब्दार्थौ काव्यम्" अर्थात् शब्द और अर्थ मिल कर काव्य होता है, ऐसा कहा है। किसी विद्वान् ने अलंकारयुक्त शब्द और अर्थ को ही काव्य माना है। विश्वनाथ कविराज ने "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्" काव्य का लक्षण बताया है अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है। मुझे यह व्याख्या बहुत ही उपयुक्त और सुन्दर लगती है। काव्य के दृश्य और श्रव्य, दो प्रधान भेद हैं। नाटकों को दृश्य-काव्य कहा जाता है और श्रव्य-काव्य के गद्य, पद्य और मिश्र ये तीन भेद किये गये हैं। पद्यकाव्य छन्दोबद्ध होता है और उसके महाकाव्य, खण्डकाव्य और कोपकाव्य ये तीन भेद माने गये हैं। महाकाव्य और खण्डकाव्य तो प्रसिद्ध ही हैं। कोषकाव्य में स्तोत्र और सुभाषित संग्रह को माना गया है। गद्यकाव्य में छन्द का बन्धन नहीं रहता, अन्य सब काव्य-गुण पाये जाते हैं। वामन ने गद्य तीन प्रकार का बताया है–वृत्तगन्धि, उत्कलिकाप्रायः और चूर्णक। साहित्य-दर्पण-कार ने मुक्तक नामक चौथा भेद भी माना है। जिस गद्य में किसी छन्द के पाद व पादार्थ मिलते हैं उसे वृत्तगन्धि, लम्बे-लम्बे समास वाले गद्य को उत्कलिकाप्रायः, छोटे-छोटे समस्तपदयुक्त गद्य को चूर्णक और समस्त पदों के अभाव वाले गद्य को मुक्तक के नाम से सम्बोधित किया गया है।

गद्य-काव्य के, कथा और आख्यायिका, दो भेद भी हैं। कादम्बरी को कथा व हर्षचरित्र को आख्यायिका के नाम से सम्बोधित किया गया है। मिश्रकाव्य में गद्य और पद्य का मिश्रण होता है। इसके चम्पू, विरुद और करम्भक, ये तीन भेद हैं। वर्णनात्मक मिश्रकाव्य को चम्पू, गद्य और पद्य में की गयी राजस्तुति को विरुद एवं अनेक भाषा-युक्त मिश्रकाव्य को करम्भक की संज्ञा दी गयी है। गद्य की अपेक्षा पद्य सरलता से कंठस्थ हो सकता है और अधिक समय तक स्मरण रह सकता है, अतः इसकी उपयोगिता व स्थायित्व अधिक है। इस सुविधा को ध्यान में रखते हुए भारतीय विद्वानों ने शब्दकोप, वैद्यक, ज्योतिष आदि विषयों के उपयोगी ग्रन्थ पद्यबद्ध ही अधिक बनाये हैं। पद्य में कल्पना की उड़ान, लयसरसता, मनोहरता व श्रवणसुखदता होने से ग्रन्थकारों का ध्यान उस ओर अधिक जाना स्वाभाविक था। इसी आकर्षण के फलस्वरूप भारतीय साहित्य पद्य-रूप में अधिक मिलता है। मुद्रण-युग के प्रसार के साथ-साथ गद्य-साहित्य निरन्तर अभिवृद्धि को प्राप्त हुआ है। पूर्व लोक-भाषाओं में गद्य- रचनाएँ बहुत ही थोड़ी मिलती हैं। हिन्दी भाषा में तो प्राचीन गद्य राजस्थानी और गुजराती भाषा की अपेक्षा भी अल्प है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri



जैसा कि ऊपर बताया गया है रसात्मक काव्यगुणोपेत विशिष्ट शब्दसंचयरूप, पर छन्दों के बन्धन से रहित रचना गद्यकाव्य के नाम से अभिहित है। साधारण गद्य को इसमें सम्मिलित नहीं किया जा सकता। गद्य होते हुए भी जिसके पढ़ने और सुनने में पद्य का-सा आनन्द या रस मिले वही गद्यकाव्य है।

भारतीय साहित्य में गद्यकाव्य का विकास पद्यकाव्य के साथ-साथ ही हुआ प्रतीत होता है, अतः उसकी प्राचीनता पद्य की अपेक्षा कम नहीं है। वेदों मे कहीं-कहीं वाक्य बड़े ही सुन्दर और पद्य का-सा आनन्द देने वाले मिलते हैं। जैनागमों और महाभारत के समय में तो गद्य को व्यवस्थित रूप मिल चुका विदित होता है। भास और कालिदास आदि के नाटकों में गद्यकाव्य की सुन्दर झलक पायी जाती है। प्राकृत भाषा के कई प्राचीन जैन-ग्रन्थों में कहीं-कहीं गद्य-लेखन में शब्द-योजना की सुन्दर छटा देखते बनती है। ईस्वी पूर्व दूसरी से छठी शताब्दी तक के शिला-लेखों के गद्य में भी काव्य का-सा आनन्द मिलता है, जिसे गद्यकाव्य का पूर्वरूप कहा जा सकता है।

गद्यकाव्य की संज्ञा दी जा सके ऐसे ग्रन्थों में दण्डी कवि का दशकुमारचरित सर्वप्रथम है, जिसका समय ईसा की छठी शताब्दी के लगभग का है। इस चरित की भाषा सरल एवं ललित है। इसके पीछे सुबंन्धु की वासवदत्ता की कथा आती है। कवि के कथनानुसार इसके प्रति अक्षर में श्लेष है। तत्परवर्त्ती गद्यकाव्य बाणभट्ट की कादम्बरी और हर्षचरित्र हैं। कादम्बरी विश्व-साहित्य में उल्लेखनीय गद्यकाव्य है। इसकी कथा छोटी-सी, पर वर्णन के विस्तार से वह बहुत विस्तृत हो गयी है अर्थात् उसमें कथा गौण और वर्णन प्रधान है। ऐसा ही अन्य गद्यकाव्य, जिसे इसी के टक्कर का कह सकते हैं, जैन कवि धनपाल की तिलकमंजरी की कथा है। धनपाल महाराजा भोज के सभा-पंडित थे। पुरातत्वाचार्य मुनि जिनविजयजी ने इस तिलकमंजरी के सम्बन्ध में लिखा है- "समस्त संस्कृत साहित्य के अनन्त ग्रन्थ-संग्रह में बाण की कादम्बरी के सिवाय इस कथा की तुलना में खड़ा हो सके, ऐसा कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है। बाण पुरोगामी है, उसकी कादम्बरी की प्रेरणा से ही तिलकमंजरी रची गयी है, पर यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि धनपाल की प्रतिभा बाण से चढ़ती हुई न हो तो उतरती हुई भी नहीं है: अतः पुरोगामी ज्येष्ठ बन्धु होने पर भी गुण-धर्म की अपेक्षा दोनों गद्य के महाकवि समान आसन पर बैठाने के योग्य हैं। धनपाल का जीवन भी बाण के जैसा ही गौरवशाली रहा है। इस कथन में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है।" तिलकमंजरी के बाद गद्यकाव्य के रूप में दिगम्बरजैन कवि वादीभसिंह का गद्यचिन्ता-मणि ग्रन्थ उल्लेखनीय है। इसके बाद के लगभग चार सौ वर्षों में कोई उल्लेखनीय गद्यकाव्य नहीं है। वैसे फुटकर वर्णन गद्यकाव्य की झलक अवश्य दिखा जाते हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी में वामन भट्ट ने 'वेम भूपाल चरित' नामक गद्यकाव्य बनाया। इसका पद-विन्यास, माधुर्य, सरसालंकार-योजना, विप्रलंभ शृंगार बाण के सदृश माने गये हैं। भाषा सरल और मधुर है। कवि ने अपने लिए 'गद्यकवि सार्वभौम' विशेषण प्रयुक्त किया है।

भारतीय गद्यकाव्य की परम्परा का दिग्दर्शन कराने के लिए ऊपर कुछ संस्कृत गद्यकाव्यों का उल्लेख करना आवश्यक समझा गया। अब मूल विषय पर प्रकाश डाला जाता है।

हिन्दी भाषा में गद्यकाव्य की परम्परा प्राचीन नहीं दिखाई देती। वैसे हिन्दी की गद्य-रचना ही सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से पूर्व की नहीं मिलती! गोरखनाथ की कुछ रचनाएं गद्य में लिखी बतायी जाती हैं। इन रचनाओं की भाषा को तेरहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य की माना गया, पर उसके लिए कोई सबल आधार नहीं प्रतीत होता, इन रचनाओं का गोरखनाथ की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कृतियाँ होना सम्भव नहीं जान पड़ता। किसी प्रसिद्ध साम्प्रदायिक नेता या मत प्रवर्त्तक के अनुयायी स्वयं ग्रन्थ बना कर नेता के नाम से या मतप्रवर्त्तक के नाम से प्रसिद्ध करते रहते हैं। गोरखनाथ के इन ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतियां अद्यावधि अठारहवीं शताब्दी से पूर्व की प्राप्त नहीं हैं। उनके अन्य पद्य-ग्रन्थों की प्रतियाँ भी अभी तक सत्रहवीं शताब्दी से पहले की मेरे अवलोकन में नहीं आयीं। अतः जब तक उनकी हिन्दी गद्य-रचनाओं की इससे पूर्ववर्त्ती प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त न हो जाएँ, वल्लभ सम्प्रदाय के प्राचीन ब्रजभाषा के गद्य-ग्रन्थों को ही हिन्दी के प्राचीन गद्य ग्रन्थ कहा जा सकता है। बीकानेर राज्य की अनूप-संस्कृत लाइब्रेरी में 'कुतुबुद्दीन की बात' संवत् १६३३ में लिखित प्राप्त है, जिसका गद्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

हिन्दी की अपेक्षा राजस्थानी और गुजराती गद्य अधिक प्राचीन मिलता है। जैन-भंडारों की ताड़पत्री प्रतियों में चौदहवीं शताब्दी का गद्य पाया जाता है। संवत् १३३६ के संग्रामसिंह-रचित 'बालशिक्षा' ग्रन्थ में तत्कालीन गद्य के उदाहरण पाये जाते हैं। यह संस्कृत व्याकरण का ग्रन्थ है, जिसमें समझाने के लिए राजस्थानी का प्रयोग किया गया है। पन्द्रहवीं शताब्दी में 'पृथ्वीचन्द चरित' या 'वाग्विलास' नामक विशिष्ट ग्रन्थ मिलता है, जो राजस्थानी गद्यकाव्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस गद्य से वर्णनात्मक गद्य शैली की यह परिपक्वता का पता चलता है। इससे पूर्व भी कुछ ऐसे ग्रन्थ बने होंगे, ऐसी संभावना होती है; पर अब वे प्राप्त नहीं हैं। इसके बाद तुकान्त गद्य वाले और वर्णनात्मक विशिष्ट गद्य-ग्रन्थ राजस्थान में निरन्तर बनते रहे हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय कराना ही प्रस्तुत लेख का उद्देश्य है। संस्कृत ग्रन्थों में गद्यकाव्य के जो लक्षण दिये हुए हैं, उनमें समय-समय पर रचयिताओं की रुचि के अनुकूल परिवर्तन होता रहा है। राजस्थानी में गद्यकाव्य किसे कहा गया है और इनमें कितने प्रकार हैं, यह जान लेना परमावश्यक है।

राजस्थानी के सुप्रसिद्ध छन्दग्रन्थ 'रघुनाथ रूपक' में प्रसिद्ध छन्दों एवं गीतों के लक्षण एवं उदाहरण देने के पश्चात् गद्य के दो भेद दिये हैं-दवावैत और वचनिका। इन दोनों के भी दो-दो भेद किये गये हैं—दवावैत के शुद्धबन्ध और गद्बन्ध, (गद्यबन्ध) और वचनिका के पदबन्ध और गदबन्ध। यथा--

तवै मंछ कवि ह्वै तिके, दवावैत विध दोय।
एक शुद्धबन्ध होत है, एक गद्बन्ध होय।।

इसकी व्याख्या करते हुए आधुनिक टीकाकार श्रीमहताबचन्द खारैड़ लिखते हैं-"दवावैत कोई छन्द नहीं है, जिसमें मात्राओं, वर्णों अथवा गणों का विचार हो। यह अंत्यानुप्रास रूप गद्य जाल है। अंत्यानुप्रास, मध्यानुप्रास और किसी प्रकार का सानुप्रास या यमक लिया हुआ गद्य का प्रकार है। यह संस्कृत, प्राकृत, फारसी, उर्दू और हिन्दी भाषा में भी अनेक कवियों और ग्रन्थकारों द्वारा प्रयोग में लाया हुआ मालूम देता है। आधुनिक लल्लूजीलाल के 'प्रेमसागर' आदि ग्रन्थों में तथा उर्दू के 'बहारवेखिजा' 'नोबतन' आदि ग्रन्थों में तथा फारसी के ग्रन्थों में देखा जाता है। यह दवावैत दो प्रकार की होती है-एक शुद्धबन्ध अर्थात् पदबन्ध, जिसमें अनुप्रास मिलाया जाता है और दूसरी गद्बन्ध जिसमें अनुप्रास नहीं मिलाते हैं।

**पदबन्ध का उदाहरण-**

"प्रथम ही अयोध्या नगर जिसका बखाण,
बारै जोजन तो चौड़ै, सौलै जोजनकी धाव,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



चोतरफ के फैलाव चौसठ जोजनके फिराव,
तिसके तलै सरिता, सरिजूके घाट,
अत उतावल सूं वहे, चोसर कोसों के पाट।"

**गद्यबन्ध का उदाहरण--**

हाथियों के हलके खंभू गणाते खोले, अरापत के साथी भद्रजाती के टोले। अत देहु के दिग्गज विन्ध्याचल के सुजाव. रंग-रंग चित्रे सुंडा डंडके बणाव। झूल की जलूस वीर घंटू के ठणके, वादलों की जगमपा मेरे मेरे भोरों की भकी भंणकै। कल कदमूं के लंगर भारी कनक की हूंस, जवाहर के जेहर दीपमाला की रूस।

**वचनिका के दो प्रकार-**

"दोय भेद वचनकारा एक पदवंध दूजी गदवंध, सू पदवंध दोय भेद एक तो बारता दूजी बारता में मोहरा राखणां। दोय गदवंध वचनका है-एक तो आठ मात्रारो पद हुवै, दूजी गदवंध में बीस मात्रारो पद हुवै--"

टीकाकार ने इसके विशेष विवरण में लिखा है कि ये वचनिकाएं दवावैत के ही भेद मालूम होते है। इतना-सा भेद मालूम होता है कि वचनिका कुछ लंबी और विस्तृत होती है और 'गद्यबंध' में तो कई छन्दों के जोटे अर्थात् युग्म वचनिका रूप में जुड़ते चले जाते हैं।

इसके बाद पद्यबन्ध का जो उदाहरण दिया गया है, उपयुक्त नहीं मालूम देता। दूसरे उदाहरण का ही कुछ अंश यहां दिया जाता है--

'तिण सभा में श्रीमुखवाणी, लिखमणजी तारीफ आणी।
आतो साराही जाण पाई, इण बल रावणसू जीतां नैं सीता आई॥"

**गद्यबन्ध वचनिका--**

"चक्री विचाल, रघुवर विसाल, जँपे जरूर, सुण भरथ सूर,
हणमंत एह, इण गुण अछेह, सेवा सुसेव किनी कपेस।
वे कहूं बैण, सुण विगत सैण, पंचवटी प्रीत रहतां सुरीत,
उण ठाँम आय अवसाँण पाय, आसुर अभीत तिण हरी सं...।"

गद्यबद्ध वचनिका के दूसरे भेद को सिलोकों की संज्ञा दी है--

"बोले सीतापंत इसडी जी बाँणी, सुरनर नागाँ नैं लगै सुहाणी।
सैंसाजल हणमंत जिम ही सरसाई, बीरां अंबरारी कीधी बढ़ाई।।"

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि संस्कृत गद्यकाव्यों की अपेक्षा राजस्थानी गद्यकाव्य की व्याख्या में अन्तर है। राजस्थानी गद्यकाव्य में तुक मिलाने का ध्यान रखा गया है। हिन्दी में भी कविवर वनारसीदासजी आदि की वचनिका--संगत रचनाएं मिलती हैं, उनमें तुक नहीं मिलती। साधारण गद्य और विवेचनात्मक टीका ही हिन्दी में वचनिका मानी गयी है। राजस्थानी में वह तुकान्त-प्रधान है।[1]

---

१ रघुनाथरूपक में वचनिका और दवावैत के जो भेद बताये गये है उनके नामों में थोड़ा उलट-फेर हो गया है, गद्यबद्ध को पद्यबद्ध और पद्यबद्ध को गद्यबद्ध कह दिया गया है। टीकाकार ने जो टिप्पणियां दी हैं वे भी भ्रांतिपूर्ण हैं। शुद्ध विवेचन इस प्रकार है।

वचनिका के दो भेद हैं-(क) पद्यबद्ध (या पदबद्ध), जिसमें मात्राओं का नियम होता है। इसके दो भेद होते हैं-(१) जिसमें आठ-आठ मात्राओं के तुक-युक्त गद्य-खंड हों, और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



दवावैत और वचनिका-संज्ञक रचनाएँ तो राजस्थानी भाषा में भी अधिक नहीं मिलती, अभी तक जिनलाभसूरि और नरसिंहदास गौड़ की 'दवावैत' ये दो दवावैतें और अचलदास खींची की वचनिका' और 'रतन महेसदासोतरी वचनिका' ये दो ग्रन्थ ही मुझे ज्ञात है। इनमें से 'रतन महेसदासोतरी वचनिका' एल. पी. तेसीतोरी ने सम्पादित कर के रायल एशियाटिक सोसायटी, बंगाल से प्रकाशित की थी। अन्य तीनों रचनाएँ अप्रकाशित हैं। 'जिनलाभसूरि की दवावैत' की भाषा हिन्दी है। सलोका-संज्ञक छोटे-छोटे देवी-देवताओं की गुण-वर्णनात्मक रचनाएँ पचासों की संख्या में उपलब्ध हैं। राजस्थानी गद्य को कहीं-कहीं वार्ता या वार्तिक संज्ञा भी दी हुई मिलती है। वार्तिक के रूप में 'शिखरवंशोत्पत्ति काव्य' नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित हो चुका है। 'केहर प्रकाश' ग्रन्थ में तुकान्त गद्य की संज्ञा वार्ता में पाई जाती है।

जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है, सर्वप्रथम राजस्थानी गद्यकाव्य 'पृथ्वीचन्द चरित्र' है, जिसका अपर नाम 'वाग्विलास' है। इसकी रचना संवत् १४७८ में जैनाचार्य माणिक्यसुन्दर सूरि ने की है। इसमें पृथ्वीचन्द राजा की कथा तो बहुत छोटी-सी है, पर वर्णन का विस्तार अधिक है। ग्रन्थकार ने कोई भी प्रसंग बिना वर्णन या विवरण के खाली नहीं छोड़ा। विवरणात्मक नामों के अतिरिक्त प्रायः सम्पूर्ण ग्रन्थ तुकान्त गद्य में लिखा गया है, जिसे पढ़ते हुए काव्य का सा आनन्द मिलता है। उदाहरणार्थ दो-एक वर्णन यहाँ दिये जा रहे हैं।

**मरहट्ठदेश वर्णन–**

"जिण देसि ग्राम अत्यन्त अभिराम। भलां नगर जिहाँ न मागीयइं कर। दुर्ग, जिस्यां हुई स्वर्ग। धान्य, न नीपजइ सामान्य। आगर, सोना रूपा तणा सागर। जेइ देस माहि नदी वहइं, लोक सुपहं निर्वहइ। इसिउ देस पुण्य तणउ निवेश गरुअउ प्रदेश। तिणि देसि पहठाणपुर पाटण वर्त्तइं, जिहां अन्याय न वर्त्तइं। जीणइ नगरि कउसीसे करी सदाकार, पाषलि पोढउ प्राकार, उदार प्रतोली द्वार। पाताल भणी धाई, महाकाय षाई, समुद्र जेहनु भाई। जे लिइ कैलास पर्वत सिउं वाद, इस्या सर्वज्ञ देव तणा प्रासाद। करइं उल्लास, लक्षेश्वरी कोटीध्वज तणा आवास आनन्दइं मन, गरुड़ राजभवन। उपारी अपंड सुवर्ण्णमय दंड, ध्वजपट लहलहई प्रचंड।

हिव हूउं प्रभात, फीटी राक्षसनी वात, टलिउ अंधकारव्रात, अदृश्य नक्षत्र पटल, गगन उज्ज्वल, निःशब्द धूक कुल, निर्मल, दिग्मण्डल, आश्रित पूर्वाचल, हूउं रविमंडल, विहसइं कमल, विस्तरइं परिमल, वायु वाइं शीतल, प्रसन्न मही तल, जिस्यां रातां पारेवा तणा चरण, तिस्यां विस्तरइ सूर्य तणा किरण।

---

(२) जिसमें २०-२० मात्राओं के तुक-युक्त गद्यखंड हों। (ख) गद्यबद्ध–जिसमें मात्राओं का नियम नहीं होता। इसके भी दो भेद होते हैं-(३) वारता * या साधारण गद्य (४) तुक- युक्त गद्य।

दवावैत के भी इसी प्रकार दो भेद होते हैं-(१) पद्यबद्ध ( या पदबद्ध )–इसमें २४-२४ मात्राओं के तुक-युक्त गद्य-खंड होते हैं। (२) गद्यबद्ध–इसमें तुक-युक्त गद्य-खंड होते हैं, मात्राओं का नियम नहीं होता।

दवावैत और वचनिका में क्या अन्तर है ? यह अभी तक समझ में नहीं आ पाया है। वचनिका के चतुर्थ भेद और दवावैत के द्वितीय भेद में कोई अन्तर नहीं दीख पड़ता। उपलब्ध दवावैतों की भाषा राजस्थानी से प्रभावित खड़ी बोली हिंदी है जबकि वचनिकाओं की राजस्थानी।

* कहीं-कहीं तुकान्त गद्य के लिये भी वात, वार्ता या वार्तिक नाम का प्रयोग देखा जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



**महोत्सव वर्णन–**

"अलंकरिउ प्राकार, शृंगारिया प्रतोली द्वार। मंच प्रति मंच तणी रचना हुई, स्वर्गपुरी तणी शोभा लई। ध्वज पताका लहकई, पुष्प परिमल वहकई। नाचइं पात्र, राजभवनि आवइं अक्षत पात्र। सोभाई भणतां आवइं छात्र, लोक अलंकरई आभरणि गात्र, उत्सव करिवा एहइज वात। तीणि वेलां नऊइं कोरण, बांधीयई तोरण, बांधीयई वंदरवाल, उत्सव विशाल। गुल घीउ लाहीयइं, मन ऊमाहीयइं। ईण युक्ति जन्म महोत्सव हुआ।"

इस ग्रन्थ के चार वर्ष बाद ही जिनवर्द्धनगणि ने "तपो गच्छ गुर्वावली" लिखी उसमें भी पद्यानुकारि गद्य विशेष रूप से मिलता है। यहाँ उसका थोड़ा-सा उद्धरण दिया जाता है–

"जिम देव माहि इन्द्र, जिम ज्योतिश्चक्र माहि चन्द्र,
जिम वृक्ष माहि कल्पद्रुम, जिम रत्न वस्तु माहि विद्रुम,
जिम नरेन्द्र माहे राम, जिम रूपवंत माहे काम,
जिम स्त्री माहे रम्भा, जिम वादित्र माहे भंभा,
जिम सती माहि सीता, जिम स्त्री माहि गीता,
जिम साहसीक माहि विक्रमादित्य, जिम ग्रहगण माहि आदित्य,
जिम रत्न माहि चितामणि, जिम आभरण माहि चूड़ामणि,
जिम पर्वत माहि मेरु भूधर, जिम गजेन्द्र माहि ऐरावण सिन्धु,
जिम रस माहि घृत, जिम मधुर वस्तु माहि अमृत,
तिम सांप्रति कालि, सकल गच्छन्तरालि,
ज्ञानि विज्ञान तपि जपि शमि दमि संयमि करी अनुच्छ,
ए श्री तपोगच्छ, आचन्द्रार्क जयवंतउ वर्त्तइ।"

इस ग्रन्थ के तीन वर्ष बाद सं. १४८५ में हीरानन्द सूरि द्वारा रचित 'वस्तुपाल तेजपाल रास' में निम्नोक्त प्रकार का गद्य आया है–

इमउ एक श्री शत्रुञ्जय तणउ विचारु महिमा नउ भण्डारु मन्त्रीश्वर मन माहि जाणी उत्सरंग आणी। यात्रा उपरि उद्यम कीधउ, पुण्य प्रसादन नउ मनोरथ सिधउ ॥ ९ ॥

शिवदास-रचित 'अचलदास खीची की वचनिका' का रचना-काल १५ वीं शताब्दी माना जाता है। उसमें पद्य के साथ-साथ वात रूप गद्य पाया जाता है। यद्यपि यह सर्वत्र तुकान्त नहीं है, फिर भी वचनिका-संज्ञक सबसे प्राचीन रचना यही है। उदाहरण–

"पगि पगि पउलि पउलि हस्तीकी गज-घटा, ती ऊपरि सात-सात मइ धनक-धर मांवठा। सात-सात ओलि पाइककी बइठी, सात-सात ओलि पाइककी उठी। खेड़ा उडण मुद फरफरी चूहँचकी टांइ टांइ ठरकी इसी एक त्यापट उडि चत्र दिसी पड़ी, निग वाजि तकइ निनादि घर आकाम चड़हड़ी,। बाप बाप हो ? थारा आरम्भ पारम्भ लागि गढ़ लेयण हार, किना बाप बाप हो ? थारा मत तेज अहँकार, राइ दुग राखण हार।"

१६ वीं शताब्दी में लिखित एक विशिष्ट वर्णनात्मक जैन-ग्रन्थ जैसलमेर के 'जैन-भण्डार' मे अपूर्ण प्राप्त हुआ है। उसका नाम हासिये में 'मुक्तकानुप्रास' लिखा हुआ है। उसके कुछ उद्धरण मैंने अपने वर्णनात्मक 'राजस्थानी गद्य ग्रन्थ' शीर्षक लेख में दिये हैं। यहां उसमें से उदाहरणार्थ ग्रीष्म ऋतु का वर्णन दिया जा रहा है–

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



"महा पिन्नुनउ आलउ, आव्यो उन्हालउ ।
लूय वाजइ, कान पापड़ि दाझइ, ।
झाझूआं वलइं, हेमाचलना शिखर गलइं,
निवांणे खुटइ नीर,पहिरइ आछा चीर ।
एवडऊ ताप गाढउ, भावइ करवउ टाढउ ।
वाइ बाजइ प्रबल, उडइ धूलिना पटल ।
सीयालइ हुंति मोटी रात्र, ते नान्ही थई रात्रि,
सूर्य आपण पइ तापइ, जगत्र संतापइ,
जे जीव थल चरइ, तेहि जलासय अनुसरइ",

यह ग्रन्थ वर्णनों का सुन्दर संग्रह-ग्रन्थ है । सम्भवतः इसकी रचना १५ वीं सदी के अन्त या १६ वीं सदी के प्रारम्भ में हुई है । पूर्ण प्रति मिलने पर इसका महत्व और भी बढ जायगा ।

१६ वीं शताब्दी की अन्य दो रचनाएं 'राजस्थानी' भाग २ में प्रकाशित की गई हैं । इनका भी थोड़ा सा उद्धरण नीचे दिया जाता है-

"रायां माँहे वडउ राउ श्री सातल, जिणइ मालविया सुरताण तणउ दल, भाँजी कीधउ तल्ल । खुदाई-खुदाई तोब तोब करतउ नाठउ, जातउ गणउ धाठउ माल्हाला हिरण तणी परित्राठउ । घणी गालइ घाली वंदि छोडावी, रेख रहावी, खाडइ जइत्र अणावी नव कोटो मारुयाड़ि भली माल्हावी । मोटउ साहस कीधउ, वडउ पवाड़उ सीधउ ।

"श्रीकरणराय रिणमल्लानी, तइं कँपाव्या सेन सुरतानी । तइं हंस-नइ परि निवेडया दूध नइ पाणी, मुकाँवी गुरु करि कहाणी ।

"जिणइ ठाकुरि प्रवेसक महोत्सव कराव्या, तणिया तोरण बँधाव्या, बंदरवालि ठाम-ठाम सोहाव्या, व्यवहारिया साम्हा इणि परि वांदिवा आव्या कुणही जो तस्या वहिलइं कल्होड़ा, कुण ही पल्लाण्या आसण होड़ा, केइ करहि चडी धइ दह दिसि द्रोड़ा, केइ मुखि माणइ तंबोल-लवंग-डोड़ा ।

"तिमरी आविया, पइसारा मोटइ मँडाण करावियां, जांगी ढोल झालरि संखि वादित्र, वजाविया । विहुं पासे पटकूल तणा नेजा लहकावियां, पगि-पगि खेला नचाविया, तणिया तोरण बँधाविया । गीत गान कीधा, पून कलस सूहव सिरि दीधा, भला मांगलिक कीधा । घरि-घरि गूडी उछली, श्री संघतणी पूगी रली ।"

१७ वीं शताब्दी के वर्णनात्मक गद्य के दो संग्रहों की प्रतियां मिलती हैं, जिनके कुछ उद्धरण अपने अन्य लेख में दे चुका हूँ । वर्णन बड़े सुन्दर हैं । लेख-विस्तार के भय से यहाँ इस शताब्दी की अन्य दो रचनाओं के उद्धरण दे करके ही संतोष करना पड़ता है । पहली रचना 'कुतबदीन शहजादे की बात' है । उनकी १७ वीं शताब्दी की लिखित प्रति अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर में उपलब्ध है । हिन्दी गद्य के प्राचीन रूप की जानकारी के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है ।

## कुतबदीन साहिजादेरी वारता—

"अदि-अथ कुतबदीन साहिजादेरी वारता लिख्यते ।'

बडा एक पातिस्याह । जिसका नाम सवल स्याह । गढ मांडव थांणा । जिसकै साहिजादा दाना । मौजे दरियाव तीर । जिसकै सहरमें वसै दान समंद फकीर । जिसकी औरत का नाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मौजूम खातू । सदा वरत का नेम चलातू । जो ही फकीर आवै । तिसकुं खाँणा खुलावै । एक रोज इक दीवान फकीर आया । दावल दाँन घरां न पाया ।

अन्त-बेटे बाप विसराया, भाई वीसा रेह ।
सूरां पुरां गल्लडी, माँगण चीता रेह ॥१०७॥

ऐसा कुतबदीन साहजादा दिल्ली बीच पिरोसाह पातस्याह का साहजादा भया । दांवलदांन फकीर की लड़की साहिबां से आसिक रह्या । बहुत दिनां प्रीत लागी । दुख पीड़ आपदा सहु भागी । पीरौसाहि का तखत पाया साहजादा साह कहाया । यह सिफन कुतबदीन साहजादे की पढै, बहुत ही वजन सुख से बढै । यह बात गाहजुग से रहि । ढढीणी ने जोड़ कर कही ।"

दूसरी रचना राजस्थान के सुप्रसिद्ध कवि समयसुन्दर रचित 'भोजन विच्छित्ति' नामक है । 'कल्प-सूत्र' की टीका में, महावीर के जन्म के पश्चात् कुटुम्बीजनों को जो भोजन कराया गया, उसका वर्णन बड़ी छटापूर्ण भाषा में किया गया है । खाद्य पदार्थों का इतना सुन्दर वर्णन पढ कर पाठकों को भी भोजन करने की इच्छा जाग उठेगी । परोसने वाली स्त्री का वर्णन करके खाद्य पदार्थों का वर्णन किया गया है—

"मांडयउ उत्तंग तोरण मांडवउ, तुरत नवउ । वेसवानउ आंगणउ, तेतउ नील रतन तणउ । सखरा मांडया आसण, बैसतां किसी विभासण प्रीसणहारी पइठी । ते केहवी ?—सोल शृंगार सज्या, बीजा काम त्यज्या । हाथनी रूड़ी, बिहुं बाँहे खलकइ चूड़ी । लघ लाघवी कला, मन कीधा मोकला । चितनी उदार, अति घणी दातार । दउलती हाथ, परमेसर देजे तेहनो साथ । धसमसती आवी, सगलांरइ मन भावी ।

"हिव पकवान आणइ, केहवा वखाणइ—सत्तपुडा खाजा, तुरतना ताजा, सदला नइ साजा, मोटा जाणे प्रासादना छाजा । पछे प्रीस्या लाडू, जाणो नान्हा गाडू । कुण कुण ते नाम, जीमतां मन रहे ठाम । मोतीया लाडू, दालिआ लाडू, सेविया लाडू, कीटीरा लाडू, नांदउलिरा लाडू, तिलना लाडू, मगरिया लाडू, भूगरिया लाडू, सिंह केसरिया लाडू ।"

१८ वीं शताब्दी के सभा-शृंगार, कुतुहलम् आदि कई वर्णनात्मक ग्रन्थ मिले हैं, जिनके उद्धरण अपने अन्य लेख में दे चुका हूं । इस शताब्दी की दो सुन्दर रचनाएं चारण कवियों की भी प्राप्त हैं, जिनमें से 'खिची गंगेव नीवांवतरो दो-पहरो' और 'राजान राउतरो वात-वणाव' बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है । इनका एक एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है । पहली रचना के प्रारम्भ में वर्षा का वर्णन तो बहुत ही सुन्दर है जिसको मैंने 'राजस्थानी साहित्य' में वर्षा वर्णन लेख में दे दिया है । उसे यहां भी दिया जा रहा है ।

"वरखा रितु लागी, विरहणी जागी ।
आभा झर हरै, बीजां आवास करै ।
नद्दी ठेबा खावै, समुद्र न समावै ।
पाहाड़ां पाखर पड़ी, घटा ऊपड़ी ।
मोर सोर मंडै, इन्द्र धार न खंडै ।
आभो गाजै, सांरग वाजै ।
द्वादश मेघनै दुवो हुवो, सु दुखियारी आंख हुवो ।
झड़ लागो, प्रथीरो दलद्र भागो ।
दादुरा डहिडहै, सावण आणवैरी सिध कहै ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



इसी समइयौ वण रह्यौ छै, वरखा मंड. नै रही छै ।
बिजली झिलोमिल कर ने रही छै, वादलाँ झड़ लायौ छै ।

सेहराँ-सेहराँ वीज चमक नै रही छै ।

जाणै कुलटा नायक घरसूँ नीसर अंग दिखाय दूसरै घर प्रवेस करै छै ।
मोर कुहकै छै, डेडरा डहकै छै ।

भाखराँरा नाळा बोल नै रह्या छै ।

पाणी नाडा भर नै रह्या छै, चोटडियाल डहक नै रही छै ।
वनसपतीसूँ वेलाँ लपट नै रही छै ।

परभातरो पो'र छै । गाज-आवाज हुय नै रही छै ।

जाणै घटा घणै हरखसूँ जमींसूँ मिलण आयी छै ।
इसै वखत समइयै में गंगेव नींबावत बोलै छै, मनरी उमंग खोलै छै ।

सैलाँ-सिकारांरो दुवो हुवो छै ।

"तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति हमें आगै वसंत रितरा वणाव बखाणीजै छै, दखिण दिसा मलयाचल पहाड़रो पवँन वाजिओ छै । सीत मंद सुगन्ध गति पवँन मतवाला मैंगल ज्यूं परिमल झौला खावती बहे छै । अढ़ार भार वनसपती मकरंद फूलादिरा रस माँणतौ थकौ वहै छै । अंवर मोरीजे छै, कूँपला फूटीजै छै । वणराइ मंजरी छै । वासावली फूटि रही छै । केसू फूलि रहिया छै । रितिराज प्रगटियो छै । वसंत आयो छै । भमर मधुकर झंकार करी रहिया छै । मधुरी वाणीरा सुर करि कोकिला बोलि रही छै । वार बगीचाँ दरखत गुलकारी झिलि फूल रही छै ।"

सं० १७८८ के लगभग रतनूँ वीरभाण कृत 'राजरूपक' ग्रन्थ राजस्थानी भाषा का एक वृहद् ऐतिहासिक काव्य है, जिसे पंडित रामकरणजी आसोपा ने नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित कराया है । इस ग्रन्थ में कई जगह वार्ता का भी प्रयोग हुआ है । यहां उसका एक उदाहरण दिया जा रहा है । इसमें औरंगजेब का वर्णन है—

"औरंगसा पातसा आसुर अथतार, तपस्याके तेज पुंज एक से विस्तार ।
मापका विहाई सा प्रतापका निदांन, मारतंड आगे जिसी जोतसी जिहांन ।

जापका पैगंबर आपका दरियाव, तापका सेस ज्वाल दापका कुरराव ।
सकसेका जैतवार अकसेका वाई, अरिदल समुद्र आए कुंभज के भाई ।

रहणी में जोगेश्वर वहणी में जगदीस, ग्रहणी में सिवनेत्र सहणी में अहीस ।
जाके जप तप आगे ईश्वर आधीन, ताकूं छल बांह बल कुण करै हीन ।

१८ वीं शताब्दी में ही दवावैत-संज्ञक दो रचनाएं प्राप्त हुए हैं, जिनमें से पहली रचना 'नरसिंहदास गौड़ की दवावैत' भाट मालीदास-रचित है । इसकी प्रति अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में १८ वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध की लिखित प्राप्त हुई है । आदि-अन्त के उदाहरण इस प्रकार है—

आदि–"हींदवाण छात हींदवाण सूर, अजमेर जोधपुर मांण पूर, अजवाल वंस अस गांव अरोड़, ढीलड़ी बीच महिपत्यां मोड़ ।"

अन्त–"रंग छहरते हैं । कपड़े पहरते हैं । तोसक सील्यावता है । हजूरी पावता है । चढ़ते उतरते पाव दे सलाम करांवदे है ।

जरबफत पाटता है । अम्बर फटते हैं । सभा विराजती है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कीरत राजते हैं। घोड़े फिरते हैं। पायक अड़ते हैं।
गुणी जण राग घटता है। वह वषत वणता है।
सोभा बणती है। श्री दिवांण पधारते हैं। दुसमण को जारते हैं।
देसौं दूर डरते हैं। साहो काम सरते हैं।
कवीसुर बोलते हैं। भरणा षोलते हैं।
कामका सूरत। जेतला दिहाड़ा तेतला प्रवाड़ा।
जग जेठराम नरसिंह जेत, कवि मालीदास कहै दवावेत।

दूसरी दवावेत जैनाचार्य जिनलाभसूरिजी की है जिसे याचक विनयभक्ति (वम्तुपाल) ने १९ वीं सदी के प्रारम्भ में बानायी है। इससे पूर्ववर्ती जैनाचार्य जिनसुखसूरिजी की दवावेत उपाध्याय रामविजय ने संवत् १७७२ में बनायी थी। इसका दूसरा नाम 'मजलस' भी है। दोनों दवावेतों के उद्धरण नीचे दिये जा रहे हैं –

"अहो आवो वे यार बैठो दरबार। ए चांदणी रात, कहौ मजलीसकी बात। कहौ कौण कौंण, मुलक कौंण कौंण राजा देषै, कौंण कौंण पातिस्या देषै कौंण कौंण दईवांन देषै, कौंण कौंण महिवान देषै। तो कहै–

दिल्ली दईवांन फररुष्साह सुलतान देषै। चित्तोड़ संग्रामसिंघ दईवान देषै। जोधांण राठौड़ राजा अजीतसिह देषे। बीकाणराज सूजाणसिंघ देषै। आंबेर कछवाहा राजा जयसिंघ देषे। जेसाण जादव रावल बुधसंघ देषै।

ए कैसे हैं- वड़े सु विहान हैं, वडे महिवान हैं, व़डे सिरदार हैं। वडे वूझदार हैं, वडे दातार हैं। जमी आसमान बीच संभू अवतार हैं।

आचार्य श्रीजिनसुखसूरि का वर्णन करते हुए लिखा गया है —

"दुस्मन् दूर है, सव दूनीमें हुक्म मंजूर है। मगरूरांकी मगरूरी दफै करते हैं, छत्र धारीकी सी रौंस धरते हैं। वड़े-वड़े छत्रपति गढ़पती देसोत डंडौत करते हैं, चिकारे मुकारे भुंज मरते हैं। (और) भी कैसे हैं– गुनुनके गाहक हैं, गुनुके जान हैं, गुनुके कोट हैं, गुनुके जिहाज हैं विजैजिनराज है। षट्दर्शनके महाराज हैं सव दुनियां बीच जस नगारेकी अवाज है।"

जिनलाभसूरि – दवावेत उपर्युक्त दवावेत से चौगुनी बड़ी है। इसमें कुछ पद्य व गीत भी सम्मलित हैं। यहां वचनिका-संज्ञक गद्य काव्य के भी कुछ उद्धरण दिये जाते हैं।"

'फिरि जिनुका जसका प्रकास मनु हसका सा विलास,
किधु हरजूका हास किधु सरद पुंन्युका सा उजास।
फिर जिनु का रूप अति ही अनूप मनु सब रूपवतु का रूप,
जाकु देष्यै चाहै सुरनके भूप कामदेवका सा अवतार।
किधु देवका सा कुमार, तेज पुंज की झलक मनु कोटिन सूरन की जलक।"

उपर्युक्त दोनों दवावेतों में फारसी शब्दों का प्राचुर्य है, क्योंकि इन दोनों की रचना सिन्ध प्रांत में हुई है। पंजाब और सिन्ध की भाषा में उस समय फ़ारसी शब्दों का बाहुल्य था।

२० वीं शताब्दी की रचनाओं में 'शिखर वंशोत्पत्ति' नामक ऐतिहासिक काव्य संवत् १९२६ में कविया गोपाल ने बनाया, जिसे पुरोहित हरिनारायणजी ने सम्पादित कर काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित किया है। इसका अपर नाम 'पीढी वार्तिक' भी है। इसका प्रधान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



चिह्न वार्ता नामक है, जिसे श्लोक की तरह मात्राओं आदि के प्रतिबन्ध रहित गद्य ही समझिए। उदाहरण इस प्रकार है –

"स्याम ताज कफनी कमंडलमैं नीर।
डाटी सुपेत सेष सुवरण शरीर ।।१४।।
मोकल राव आतो देषि माथाकौं नवायो।
साँई स्यां भुरांनी सेष नामी पंथ पायो।।१५।।
जंगल में चरे छी सो अव्याई झोटी आई।
मोकलका कनांसू सेष चीपीमें दुहाई।।१३।।
बोल्यो दूध पीकै सेष नीकी भांति रैणां।
तेरे पुत्र होगा राव सेपा नाँव कैणां।।१७।।

इसी कवि का अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थ 'लावा रासा' है, जो राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, से प्रकाशित हुआ है। उसमें भी दवावेत गद्य-छंद प्रयुक्त हैं। इसकी परवर्ती रचना कविराव बख्तावर के सं० १९३६ में रचित 'केहर प्रकाश' है। यह भी एक ऐतिहासिक काव्य है। बीच-बीच में वार्ता एवं वचनिका विशेष रूप से पाई जाती है। यहां उन दोनों का एक उदाहरण दिया जा रहा है।

जवाहर वेश्या की पुत्री कंवलप्रसण के रूप का वर्णन वार्ता में इस प्रकार किया गया है–

"पुत्री जिणरे कंवलप्रसण रूपरी निधान।
सुकेशियासूं सवाई साव रम्भारे समान।।
साहित्या शृंगार काव्य जबानी पर कहे।
रमाताल परिजंत संगीतमें रहे ।।
वीणांधर सहजांई गावे किण भांत।
तराज पर नहँ आवे नारद वीणारी तांत।।
जिणने सुण्यां कोकिला मयूर लाज भाग जावे।
कुरंग औ भमंग वन पातालसूं आवे।।"

उसके रूप को देख कर अन्य नारियों ने उसे बाग-बगीचों में जाने का निषेध करते हुए क्या ही सुन्दर कहा है।

"सुघड़ जठे बोली या नवेली सहल सारे ही सिधावज्यो।
पण बाग वन सरोवर कदे भी मत जावज्यो।
जावेला बाग तो पिक शुक अली उड़ जावसी,
ने बिम्बफल श्रीफल अनाड़ सेवां जो सुखावसी,
जावेला जो वन तो खञ्जन कपोत चोष चूरेला।
मणधर मृगराज गजराज विवर बूरेला।
जावेला सरोवर राज हंस बूड जावसी।
कंवल काला पड़ेला सिवाल अवटावणे आवसी।
रातने या अटारी माथे कदेई जो जावेला।
तो चन्द्रमारे भरोसे राहूसूं खताहीज खावेला।
राहू कदाक न आयो तो चकोर तो आवसी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



जावसी न आग माथे चहराने चूंथ जावसी ।
सावण आयां घरे यांरे हींदा जिको घालेला ।
हींदिया छे तो परियां धोके परियां खांच जावेला ।

**वचनका**

कंवल उरवसी आत आतमें कहात ।
परस्थानी परियों सी सहेल्यों ले साथ ।
जरकस वट जेवर झलामल के जोत ।
हेरी जात चारों ओर चानणी सी होत ।।
छुद्रघण्टा बिछियोंका छूटे छण छणाव ।
ज्यों हंसे बच्चोंकी बाणीका बणाव ।
जां झरूंका झणकार व्है जोरें पर जोर ।
सावणके मौसम ज्यों झिल्ल्योंका शोर ।
फंबणीमें अनुरागूमें अगणितके फैल ।
गुम्मजके महल आई मिजाजोंके गेल ।।६३।।"

आधुनिक शैली के गद्यकाव्य की परम्परा भी राजस्थानी भाषा में चालू है । यहां कविवर कन्हैयालालजी सेठीया के गद्यकाव्यों के हो उदाहरण देखिए —

"आसोजरो महीनूं । नान्हींसी'क एक बादली ओसरगी । रेवड़ वालैरो अलगोजो गूंज उठ्यो । रिमझिम-रिमझिम मेवलो बरसै । अतैमें ही अचाण चूको पूनरो एक लहरो आयो अर बादली उड़गी । करड़ी तावड़ी निकल आई । खेतमें निनाण करतो करसो बोल्यो—आसोजांरा तप्या तावड़ा काचा लोहा पिण गलग्या—'मिनखरी जबानमें कठेई पल कोनी' ।

बादलवाईरो दिन । मधरो मधरो आथूणूं बायरो चालै । खेजड़ी परां बैठी कमेड़ी बोली—'टमरक टूं'' ।

नीचै छियांमें सूतो मिनख सोच्यो किस्योक सोवणूं पंखेरू है ? अतेमें ही कमेड़ी बींठ करी-सीधी आ'र मिनखरे ऊपरां पड़ी मिनख झुझला'र बोल्यो—किस्योक बदजात जीव है ?"

हिन्दी भाषा में तो राजस्थान के कई विद्वानों ने अनेकों गद्यकाव्य लिखे हैं, जिनमें ठाकुर रामसिंहजी (बीकानेर), भंवरमल सिंघी (जयपुर), दिनेशनन्दिनी डालमिया (उदयपुर), आदि प्रधान हैं । श्रीयुत् कन्हैयालालजी सेठिया का मातृभाषा का प्रेम विशेष उल्लेख योग्य है । हिन्दी के अच्छे कवि होने के साथ इन्होंने राजस्थानी भाषा में भी समय-समय पर बहुत सुन्दर रचनाएं कीं । इनके राजस्थानी के गद्यकाव्यों का संग्रह 'पाखड़ल्यां' के नाम से शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है ।

—श्री अगरचन्द नाहटा

---

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# कतिपय वर्णनात्मक राजस्थानी गद्य-ग्रन्थ

वाक्-शक्ति मनुष्य को दी हुई प्रकृति की विशेष देन है। वैसे तो नेत्रधारी सभी प्राणी वस्तुओं और घटनाओं को निरंतर देखते ही रहते हैं, पर मनुष्य का देखना उनकी अपेक्षा बहुत महत्व रखता है। देखने के पीछे अनुभव करने की विशेष शक्ति आवश्यक है और वह केवल मानव को ही प्राप्त है। इतर प्राणी उन्हें देख भर लेते हैं, पर जैसा अनुभूतिपूर्ण वर्णन मानव कर सकता है अन्य कोई भी प्राणी नहीं कर सकता। वस्तुओं का ज्ञान कर लेना एक बात है और अपने अनुभव को सुन्दर एवं साकार रूप में दूसरों के समक्ष वाणी द्वारा उपस्थित करना दूसरी बात है। किसी भी बात का वर्णन करते समय श्रोता के सामने उसका चित्र-सा उपस्थित हो जाय-यह वर्णन करने की विशेष कला है। वैसे रसीले व चमत्कारपूर्ण वाक्य लिपिबद्ध हो जाने पर वे साहित्य की संज्ञा पाते हैं।

भारतीय प्राचीन साहित्य में वर्णन करने की विशेष छटा स्थान-स्थान पर देखने को मिलती है। कहीं कहीं तो निरूपण शैली इतनी सजीव होती है कि पढ़ने और सुनने वाले बरबस आकर्षित हो कर मंत्र-मुग्ध से हो जाते हैं। यह वर्णन-शैली कई प्रकार की होती है। किसी में वस्तु के बाह्य रूप की, किसी में भीतरी गुणों की, और किसी में भेद-प्रभेदों के विस्तृत विवरण की प्रधानता होती है। किसी किसी रचना में भाषा का चमत्कार देखते ही बनता है। शब्दों का चयन बड़ा सुन्दर होता है और वर्णन गद्य में लिखे जाने पर भी (तुकान्त होने से) पढ़ने वाले को पद्य का सा आनन्द मिलता है। संस्कृत में गद्य-काव्य में जिस प्रकार लंबे-लंबे समास प्रधान होते हैं उसी प्रकार लोक-भाषा के वर्णनात्मक गद्य-ग्रन्थों में तुकान्त शैली बहुत विस्तृत पाई जाती है। इसमें एक के बाद एक तुकान्त शब्द ऐसे सुन्दर एवं सहज ढंग में सजाये जाते हैं कि मानों मोतियों को चुन चुन कर माला ही पिरो डाली हो। सहृदय पाठक व श्रोता उस तुकान्त शब्दावली और वर्णन-शैली का चमत्कार देख कर आनंद विभोर हो उठते हैं और लेखक के प्रति बरबस उनके मुंह से 'वाह वाह', 'खूब.खूब' शब्द फूट निकलते हैं।

प्राचीन जैनागमों का अध्ययन करते समय आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व की वर्णन शैली का अच्छा पता चलता है। भेद-प्रभेदों का विवरण देने वाले स्थानांग, समवायांग प्रश्न-व्याकरण आदि आगम तो ज्ञानवर्धक हैं ही, पर उववाई सूत्र जैसा कई ग्रन्थों में वर्णनों की अच्छी बहार है। उववाई सूत्र में चम्पानगरी, पूर्णभद्र चैत्य, वनखंड, अशोक वृक्ष, महाराजा श्रेणिक, के पुत्र भंभसार (कोणिक-अजात शत्रु), धारणी राणी, भगवान् महावीर का आगमन, समवसरण महाराजा कोणिक का वंदनार्थ गमन, श्रमणों की तप साधना आदि का अच्छा वर्णन है। इसी प्रकार अन्य जैनागमों में भी प्रसंगानुरूप अनेक प्रसंगों के सुन्दर वर्णन पाये जाते हैं। जैसे कल्पसूत्र में भगवान् महावीर की माता चौदह स्वप्न देखती है-उनका विस्तार से वर्णन मिलता है इस संबंध में स्वतंत्र लेख द्वारा प्रकाश डाला जायगा अतः लेख-विस्तार भय से यहां उदाहरण नहीं दिये जा रहे है।

परवर्ती संस्कृत काव्य आदि ग्रन्थों में प्राचीन वर्णनशैली को और अधिक आगे बढाया गया है। जैसे देश वर्णन, नगर वर्णन, हाट बाजार वर्णन, राजा और राज सभादिक का वर्णन,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



फिर राणियों और अन्य नगर की रमणियों के रूप का वर्णन, वनखंड, आराम, उद्यान, महल आदि के वर्णनों के साथ साथ छः ऋतुओं, उत्सवों और क्रीड़ाओं आदि का वर्णन भी कविगण अपने काव्य में अवश्य ही करते हैं। सुकवि वर्णन-योग्य प्रसंगों को कभी खाली हाथ नहीं जाने देते, जिससे काव्य में सजीवता व सरसता आ जाती है और श्रोता एवं अध्येता विविध रसों का पान कर निमग्न हो जाते हैं। पद्य ग्रन्थों की भांति गद्य काव्यों (कादम्बरी, तिलकमंजरी आदि) में भी स्थान-स्थान पर वर्णनों की छटा देखते ही बनती है। कहीं-कहीं तो वर्णन बहुत ही चमत्कारिक एवं कलापूर्ण पाये जाते हैं।

कई ऐसे स्वतंत्र ग्रन्थ भी भारतीय-साहित्य में पाये जाते हैं। जिनका उद्देश्य केवल वर्णन करने का ही होता है। ऋतुसंहार आदि ऐसे ही काव्य हैं। कतिपय ऐसे संग्रह-ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं जिनमें भिन्न भिन्न वस्तुओं के वर्णन संगृहीत मिलते हैं। उनके वर्णनों का उपयोग दूसरे ग्रन्थ प्रणेता अपनी रुचि के अनुकूल घटा बढ़ा कर स्वरचित ग्रन्थों में कर लेते हैं। कथा-चरित्र आदि ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर ऐसे सजीव वर्णन जुड़ जाने से उसकी शोभा बहुत अधिक बढ़ जाती है[1]।

संस्कृत-प्राकृत की भांति लोक-भाषाओं में भी ऐसे वर्णनात्मक ग्रन्थ समय समय पर रचे गये हैं। मैथिली भाषा का "वर्ण रत्नाकर" ग्रन्थ इसी प्रकार का है। यह डा. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या और बाबू मिश्र द्वारा संपादित हो कर एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता द्वारा सन् १९४० में प्रकाशित हुआ था। यह १५ वीं शती की रचना है और इसमें भेद-प्रभेद रूप वर्णन ही अधिक है। संजीव कथात्मक महत्वपूर्ण वर्णन ग्रन्थ सं. १४७८ में माणिक्यसुन्दरसूरि रचित पृथ्वीचंद चरित्र है। लोकभाषा में वर्णनों का ऐसा सुन्दर संदर्भ ग्रन्थ अन्य नहीं है। इसका सार्थक व अपर नाम "वाग्विलास" रचयिता ने स्वयं रखा है। क्योंकि पृथ्वीचन्द्र के चरित्र की अपेक्षा इसमें वाग्विलास रूप चमत्कारिक वर्णनों की ही प्रधानता है। पाठकों को इसकी शैली का रसास्वाद कराने के लिये दो चार उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

**वर्षाकाल वर्णन—**

"विस्तरिउ पर्वाकाल, जे पंथी तणउ काल, नाठउ दुकाल।
जिणिइ वर्षाकालि, मधुर ध्वनि मेह गाजइ, दुर्भिक्ष तणा भय भाजइ,
जाणे सुभिक्ष भूपति आवता जय डंका वाजइ।
चिहुं दिशि बीज झलहलइ, पंथी घर भणी पुलइ। वीपरीत आकाश, चन्द्र सूर्य परियास।
राति अंधारी, लवइं तिमिरि। उत्तर नऊ उनयण, छायउ गयण। दिसि घोर, नाचई मोर।
सधर वरसइ धाराधर। पाणी तणा प्रवाह खलहलइ, वाड़ी ऊपर वेला वलइ।
चीखलि चालतां सकट स्खलइं, लोक तणा मन धर्म ऊपरि वलइं।
नदी महापूरि आवइं, पृथ्वी पीठ प्लावइं। नवा किसलय गहगहइं, वल्ली वितान लहलहइं।
कुटुम्बी लोक माचइं, महात्मा बैठा पुस्तक वांचइं।
पर्वत तउ नीझरण विछूटइं, भरिया सरोवर फूटइ।
इसिइ वर्षाकालि।

---

१. कविवर सूरचन्द्र के 'पंचदंड छत्रशति' कथा-संग्रह ग्रन्थ की अपूर्ण प्रति हाल ही में मुनि श्रीजिन-विजयजी से अवलोकन को मिली है। मूल ग्रन्थ संस्कृत में है, पर स्थान-स्थान पर सुन्दर वर्णन राजस्थानी-गद्य में दिये हैं। वे कवि के स्वयं रचित भी हो सकते हैं, पर कई वर्णन अन्य प्राप्त प्रतियों वाले भी हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



वसन्त ऋतु वर्णन–

तिसिह आविउ वसंत, हूउ शीत तणउ अंत ।
दक्षिण दिशि तणउ शीतल वाउ वाइं विहसइं वणराइं ।

दोहा

सव्वे भला मासड़ा, पण वइसाह न तुल्ल ।
जे दवि दाधा रूखड़ां, तीहं माथइ फुल्ल ॥

मउरिया सहकार, चंपक उदार ।
वेउल बकुल, भ्रमर कुल संकुल, कलरव करइं कोकिल तणा कुल ।
प्रवर प्रियंगु पाडल, निर्मल जल, विकसित कमल ।
राता पलास, सेवंत्री वास । कुंद मुचकुन्द महमहइं, नाग पुन्नाग गहगहइं ।
सारस तणी श्रेणि, दिसि वासीइं कुसुम रेणि । लोक तणे हाथि वीणा, वस्त्राडंबर झीणा ।
धवल शृङ्गार सार, मुक्ताफल तणा हार । सर्वांग सुन्दर, वन माहि रमइं भूप पुरंदर ।
एकि गीत गवारइं,, दान विवारइं । विचित्र वाजित्र वाजइं, रमलि तणा रंग छाजइ ।
एकि वादिइं फूल चूटइं, वृक्ष तणा पल्लव खूंटइं । हिंडोलइं हींचइ, झीलतां वादिइं जलिइं सींचइं ।
केलिहरां कउतिग जोअइं, प्रीतमंत होअइं ।
वनपालकि अवसर लही, वसंत अवतरिया तणी वार्ता कही ॥[1]

उपमा व तुलना आदि प्रधान विभिन्न शैली के वर्णन–

१. तुम्हें करुवउ धर्म पणि नथी जाणता मर्म । सांभलउ-वन ते वणवीइ जे वृक्षवंत,
नदी ते जे नीरवत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे समावंत,
महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रसाद ते जे धजावत, धर्मी ते जे दयावंत, आदि ।

२. माहरी लक्ष्मी इह सरींखी हुइ । तउ कहीइ–
आभ तणी छांह, कुपुरिस तणी बांह, । दासीनु स्नेह, शरद कालनु मेह ।
थोड़ा मेह नउ नेह, वहिलु आवइ छेह ।

३. जेटलु अंतर राणी अनइ दासी, जेतलु अंतर दही नइ छासि,
जेटलु अंतर मधुर ध्वनि नइ धासि । जेटलु अंतर समुद्र नइ कूया,
जेटलु अंतर सोनइया नइ रूपा, जेटलु अंतर बाप नइ फूपा ।
जेटलु अंतर लूण नइ कपूर, जेटलइ अंतर वजुइआ नइ सूर ।
जेटलइ अंतर डाकिली नइ तूर, जेटलइ अंतर खाल नइ गंगा पूर ।
जेटलइ अंतर साधु नइ चोर, जेटलइ अंतर हार नइ दोर ।

४. सूर्य पाखइ दिवस नही, पुण्य पाखइ सौख्य नहीं,
पुत्र पाखइ कुल नहीं, गुरु उपदेश पाखइ विद्या नहीं,
हृदय शुद्धि पाखइ धर्म नहीं, भोजन पाखइ त्रिपति नहीं ।
साहस पाखइ सिद्धि नहीं, कुलस्त्री पाखई घर नहीं ।

---

१. इस वाग्विलास ग्रन्थ के कई वर्णन प्रस्तुत लेख में दिये गये अन्य वर्णनात्मक ५ प्रतियों में भी ज्यों के त्यों मिलते हैं व कई वर्णनों में शब्दों का बहुत अधिक साम्य पाया जाता है । भेद-प्रभेद रूप वर्णनों को इस लेख में उद्धृत नहीं किया गया, जैसे कि जातियों का प्रसंग आया तो वहां ८४ जातियों के नाम हैं । आदि आदि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



५. जिमि विलंब विणसइ काज, कुठाकुरी विणसइ राज।
कुसंगति विणसइ संतान, स्वर पाखइ विणसइ गान।

वर्णनात्मक ग्रंथों के प्रति मेरा आकर्षण–

श्वेताम्बर जैन समाज में कल्पसूत्र का वाचन प्रतिवर्ष पर्युषणों में होता है। बचपन से ही मैं उसे सुनता रहा हूं। बीकानेर में उसकी खरतरगच्छीय 'लक्ष्मीवल्लभी' टीका ही विशेष रूप से बांची जाती है। इस टीका में व इससे पूर्ववर्ती 'कल्पलता' टीका में भगवान महावीर के जन्माभिषेक के प्रसंग में भोजन विच्छित्ति आदि का लोकभाषा में सरस वर्णन आता है। जो मनोविनोद के लिए अच्छा है। उसमें विस्तार से जानने के लिए "वाग्विलास"* ग्रन्थ का निर्देश होने से उक्त ग्रन्थ के प्रति मेरा आकर्षण बढ़ा। जब उस ग्रन्थ के दो चार वर्णन जो इस संस्कृत टीका में दिये हुए हैं वे इतने सुन्दर हैं तो वाग्विलास ग्रन्थ में तो न मालूम ऐसे कितने सुन्दर वर्णन संगृहीत होंगे। यही उस आकर्षण का कारण था। कुछ बड़े होने पर (साहित्यान्वेषण एवं अध्ययन की वृद्धि के समय) उपर्युक्त माणिक्यसुन्दरसूरि का 'पृथ्वीचन्द्र चरित्र' देखने में आया जो बड़ोदा ओरियंटल सिरीज से प्रकाशित "प्राचीन गुर्जर काव्य संग्रह" और मुनि जिनविजयजी द्वारा संपादित "प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ" में प्रकाशित हुआ है। इस चरित्र का अपरनाम 'वाग्विलास' भी है। यह जानने पर वाग्विलास ग्रन्थ का स्वरूप तो स्पष्ट हो गया, पर लक्ष्मीवल्लभी टीका में उल्लिखित भोजन विच्छित्ति आदि का वर्णन इस ग्रन्थ में नहीं मिलने से वह वाग्विलास नामक ऐसा ही कोई अन्य ग्रन्थ होना चाहिये–यह अनुमान किया गया। पर कई वर्षों तक ऐसा कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुआ। फिर क्रमशः ५ ग्रन्थ उपलब्ध हुए जिनका परिचय प्रस्तुत लेख में दिया जा रहा है।

## १ कुतुहलम्—

बीकानेर के जैन ज्ञान-भंडार में एक 'कुतुहलम्" संज्ञक प्रति सर्व प्रथम मिली जिसमें गज नाम, सभा नाम, वस्त्रनाम आदि नाम और वर्षाकाल आदि का कुछ वर्णन था। इसके अन्त में 'इति कौतूहलम्' शब्द लिखे थे जिससे चमत्कारपूर्ण वर्णन वाली रचना को कौतूहलोत्पादक होने से 'कौतूहल' नाम दिया गया प्रतीत हुआ। इस ग्रन्थ के चार वर्णन पाठकों की जानकारी के लिए यहां दिये जाते हैं।

१. वर्षाकाल वर्णन–

ऊमटी घटा, बादला होई एकठा, पड़ई छटा, भाजइ भटा, भीजइ लटा।
मेह गाजइ, जाणे नाल गोला वाजइ. दुकाल लाजइ, सुवाव, इन्द्र राजइ, ताप पराजइ।
बीज झबके, मेह टबके, हीया दबके, पाणी भभके, नदी उबके, वनचर लबके, आभो अबके।
बोलइ मोर, डेड करे शोर, अंधार घोर, पेइसर चोर, भीजई ढोर।
खलके खाल, वहै परनाल, चूये साल साप गया पयाल।
झड़ लागी, लोक दसा जागी, घर पड़े, लोक ऊंचा चड़े। आभा राता, मेह माता।

२. एता किसी काम का नहीं–

ऊनाल्यानो मेह, दासीनों नेह, रोगीनी देह, स्त्री विण गेंह।
पर घरनी छासि, कंठ विहूणो रासि, अवसर विना भास, कुकुलनो दास।
फूसनी आग, जमाइनो भाग, काचों ताग, पाणीनो साग।
दीवानो तेज, दुर्जननो हेज। उधारानो वैपार, रांडनो सिणगार। पावइयानो प्यार।

---

* अथ पुनः वाग्विलास ग्रन्थाइ भोजन युक्ति कथ्यते(पंचम व्याख्यान)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



३. विशेषताएँ–

प्रथम पिंड पाणीरो, रूपो तो जावररो, दरसण तो परमेसररो. ताल मानसरोवररो, हस्ती तो कजलो वनरो: पदमणी तो सिंहल द्वीपरी, चतुराई गुजरातरी, वासो तो हिंदुस्तानरो, स्वाद तो जीभरो, मतो तो पंचांरो, खेती तो बाड़री, धीणो तो भैंसरो, देणो तो माथारो, गाळ तो मातारी, चूड़ो दांतरो, आदि-आदि।

४. ये वस्तुएँ भली–

अमल खारा भला, खड़ग धारा भला, हेत मांरा भला, धात पारा भला, हाथ वहता भला, माल खरचता भला, दांन मांनसूं भला, काथा पानसूं भला। साहिब जससूं भला, खेत नींचा भला। घर ऊंचा भला। रांणी, पांणी पातळा भला। अमल जोरका भला। निसांण थोरका भला। इत्यादि।

## २–सभा शृङ्गार

इस प्रति की प्राप्ति के पश्चात् 'सभा-शृङ्गार' नामक ग्रन्थ की एक प्रति सं० १७६२ में महिमा विजय लिखित ७५९ श्लोक परिमाण की मिली जिसमें पूर्व प्रति से वर्णन बहुत अधिक व सुन्दर प्राप्त हुए। यहां उसमें से दो चार वर्णन देकर हमें संतोष करना पड़ता है। वैसे इस ग्रन्थ में बहुत से वर्णन पाठकों का मनोरंजन कर सकते हैं। वर्षा का वर्णन इसमें दो बार आता है। जिसमें पहला वर्णन उपर्युक्त प्रति जैसा है, पर अधिक विस्तार से है। दूसरा वर्णन इस प्रकार है–

१. वर्षाकाल हुउ, न्हितौ रहिउ कुयउ, वावि पाणी भरता रया। बादल उनया।
मेघ तणा पाणी वहै, पंथी गामइ जाता रहै। पूर्व ना वाजइ वाय, लोक सहु हर्षित थाय।
आकाश धड़हड़ै, खाळ खड़हड़ै। पंखी तड़फड़इ, वडा माणस लड़थड़इ,
काठ सड़इ, हाळी हळ खड़इ। आपणा घरि कादम फेड़इ, बीजा काज मेड़इ।
पार पार न लीइं, साध विहार न करीइं।
अनेक जीव नीपजै, विविध धान्य ऊपजै। लोकनी आस पूजै, गाय भैंस दूजै। इत्यादि।

२. धनी और निर्धनी का अन्तर–

### निर्धनी वर्णन

ऊंचो तो एरंड, खाटरो तोहि नाग, घणो भोळो लांफु, वहु वोले तो लबोळ। घणुं जीमे तो भूखो, थोड़ो जीमे तो अभोगियो। भला वस्त्र पहिरे तो इतर, सामान्य पहिरे तो दरिद्री। गोरो तो पांडु रोगियो, काळो तो कबाड़ी। व्यापारी तो भड़ङ्ग, बीखै तो सर्वधन बाह्य, विषयहीन तो नपुंसक।

### धनी वर्णन

ऊंचो तो अर्जुन बाहु, वामनो तो वासुदेव, गोरो तो कंदर्प, कालो तो कृष्ण, घणो जीमे तो अहारी, थोड़ो जीमे तो पुण्यवंत, ऊंचा वस्त्र पहिरे तो राजेश्वर, सामान्य पहिरे तो चूमो, दाता तो कर्णावतार, जो न दे तो छाना पुण्य करइ, घणो बोले तो भोळो, न बोले तो मितभाषी, जौ लंपट तौ भोगी, जो नपुंसक तो परनारी सहोदर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



३. प्रभात व संध्या वर्णन–

प्रभात

हवइ कूकड़ा बोल्या, लगारेक नींदथी डोल्या ।
नींदइ झकोल्या, मूकी संभोगनी लोल्या, स्त्री भर्त्तार डमडोल्या ।
आवइ नारि, बारि उघारि, राति अंधारि । दही संभाल्यूं, विलोवणो घाल्यूं ।
रातिज दीसै छै, घटी पीसइ छैं । इतरइ संख वाग्या, झंवकीने जाग्या ।
तितरई झालर वागी, स्त्रियो पण जागी, उठवाने लागी ।
मुंहड़े बोली-उठो भाई ! जागो भाई ! राति विहाई ! प्रह पीळी थई !
राति डरी गई ! चड़कलड़ी चहचई ! मालण वाड़ी गई !
नोवत गड़गड़े छै, पारसी भणे छै, खुदा खुदा करे छै ।

संध्या

सूरजना किरण पच्छिम ढल्या, पंथी सगां नइ मिल्या ।
विरहीना हीया वल्या, गीवाळ घरे वल्या ।
चौपूं लाव्यां, आप आपना घरे आव्यां ।
पंखी टळवल्या, माळे जावा ने खळभल्या, चोर सळसल्या, आवइ हळफल्या ।
आकास राता, मेह करि माता । क्यां किण नीला, क्यां किण पीला ।
वाना प्रकारना रंग, भला सुरंग । वाधै अनंग, जंगी करै जंग, भोगी पीये भंग,
स्त्री वंछै संग । आदि ।

४. शीतकाल वर्णन–

भोगी भमरनै प्यारो, जोगीश्वरांनै न्यारो ।
महा टाढो, वाजइ गाढो, जावानो नहीं मिळे किहां सांढो ।
दाहे रूंख बाल्या, सज्जन ही साल्या । स्त्री सूं घणी गोठ, खावा लाडू सोंठ ।
वासइ सगड़ी धखइं, अवल चीज भखइं, ठारे करि ठर्‌या, हाथ सोड़ में धर्‌या ।
हाथे न लेवइं वस्त्र, आधा ओढै वस्त्र । लोक सीसिआट करइं, चौपूं उछरइं, ताढइ न चरइं
धूजे बाळगोपाळ, विरहीमां पड़इ हवाल, सहु बैठा चौसाल,
साचव्या देहरा नइ पोसाळ, एहवो सीतकाळ ॥

५. उनालो–

गयो सियाळो आयो ऊनाळो । लू वाजइ छै, सीत लाजइ छै, पग दाझइ छै ।
तावड़ो तपीजइ छै । पंथी पसीजइ छै, चन्दण घसीजइ छै ।
रूंख पात झड़इ छै, पणिहार पांणी माटइ लड़इ छै ।
वाव कूवा सूके छै । पंथी मारग मूकै छै, कंठ सूकै छै । आदि २ ।

६. अंधारी रातरो वर्णन–

सांझ परी गई, गुदड़ी परी थइ, दीवइ जोति भई ।
चोहटइ भीड़ मिटी, व्यापारीनी महिमा घटी, हाटइ ताला जड़इ ।
आप आपरै घर आया, कूंची लाया । स्त्री सोलह सिंगार सजै, गणिका जारने भजै ।
हाथे हाथ न सूझइ, कोई कोने न बूझइ, विचोर माणस मूझइ ।
चोर ते धसइ छै, कूतरा ते भुसइ छै ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri


७. वस्तु स्वभाव–

चंद्रमाने कुण शीतल करइ, अग्निने कुण दाह करइ।
दूधने कुण धोळे छै, समुद्रने कुण हिलोळे छै।
मयूर पखनै कुण चितरै। लक्ष्मीने कुण नोतरे, गंगोदक कुण पवित्र करे।
हंसने गति कुण सिखावे, वृहस्पति नै कुण वंचावे। कृपणनै कुण संचावै।
तिम सज्जननै स्वभावे जाणवो।

८. शोभा–

कुल वहू ते शीळे शोभै, रजनी चन्द्रमा शोभै, आकाश सूर्य करि शोभै,
वदन चंदनै शोभै, कुल सुपुत्रे शोभै! कटकइ राजा शोभै, इत्यादि।

९. न शोभे–

जिम लवण रहित रसवती, वचन रहित सरस्वती, कण्ठ रहित गायन, नृत्य रहित वादन,
फल रहित वृक्ष, तप रहित भिक्षुक। वेग रहित घोड़ो, केस रहित मोढ़ो,
वस्त्र रहित सिणगार, स्वर्ण रहित अलंकार। इत्यादि।

१०. पणिहारी–

वइरांनी भीड़, हुई पीड़, तुटई चीड़।
एक उंतावळि दौड़इ छै, एक माथइ वेहडुं चउड़इ छै, लुगडूं ते माथे ओढई छै,
वेहडूं ते फोड़इ छै। एक एक नइ अड़इ छै, धड़ाधड़ पड़इ छै-मांहो माह लड़इ छै,
हवइ नानी लाड़ी, चीखलथी पड़इ आड़ी, वीजानी भीजइ साड़ी, ते माटे करइ राड़ी,
सोक सोकनी करइ चाडी, डीलै जाडी, खीजइ भाड़ी, सासूइ पाछी ताड़ी।
एक पणिहारी भमरइ छै, वातां ते करइ छै, निजर ते अरइ-परइ फिरे छै,
एक एक नइ हसै छै, पाणी मांहे धसै छै। आदि।

## ३–मुत्कलानुप्रास

उपर्युक्त प्रति प्राप्ति के पश्चात् दो वर्ष हुए जैसलमेर के जैन ज्ञान-भंडारों का पुनरावलोकन करने के लिए जाने पर वैद्य यतिवर लक्ष्मीचन्द्रजी के संग्रह की अपूर्ण प्रतियों में १६ वीं शताब्दी के लिखे हुए ८ पत्र प्राप्त हुए, जिनमें १०८ वर्णन लिखे हुए हैं। इनमें से कुछ वर्णन संस्कृत भाषा में हैं, पर अधिकांश राजस्थानी में ही हैं। यहां इस प्रति से भी कुछ वर्णन उद्धृत किये जा रहे हैं। प्राप्त वर्णनात्मक प्रतियों में यह सबसे प्राचीन है।

१. रसवती वर्णन–

उपलइ मालि, प्रसन्नइ कालि। भला भंडप निपाया, पोयणी नै पाने छाया।
केसर कुंकमना छड़ा दीधा। मोतीना चौक पूर्या।
ऊपरि पंच वर्णा चंद्रवा बांध्या, अनेक रूपे आछी परियछीना रंग साध्या।
फूलांना पगर भर्या, अगरना गंध संचर्या।
धान गादी चातुरि चाकळा, बइसण हारा बइठा पातळा।
सारुवा घाट, मेलाव्या आगलि पाट। ऊंची आडणी, झलकती कुंडली।
ऊपरि मेलाव्या सुविसाल थाळ, वाटा वांटली, सुवर्णमई कचोली।
रूपानो सीप ढूकी, इसी भांति मूकी। आदि २।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


फिर विविध रसवतियों के नाम हैं। इससे प्राचीन खाद्य-पदार्थों के नामों की विस्तृत विगत मिल जाती है।

२. विरहिणी–

किसी एक विरहणी हुई विरहावस्था, आहार ऊपरि करइ अनास्था।
सर्व सिंगार, मानि अंगार। तिणइ अबला(अंतर्गत) फूला कीधा वेगला।
चंद तपइ पान, थयां विखवान। विरहानल प्रज्वलइ अंगु, सखिजनसूं विरंगू।
एहवऊं कांई थ्यूं विग्र चित्तू, न वुलगई गीत्तू। न कुणहीसूं हँसइ, सदा नीससइ,
बोलावि खीजइ, दिहाड़इ दिहाड़ देह खीजइ। आदि २।

३. वर्षा–

आसाढ संसाढु मेघ आव्या, कुणइए नइ मनि उछरंगि न भाव्या।
कालंबिणी वली, जगत्रइ नइ मनि रली। उत्तर वाय वाज्या, आकाश मेघ गाज्या।
कूड़ा बहूक्या, केवड़ा महक्या। कुद उलस्या, करसणि हरख्या।
आंब महमह्या, मयूर गहगह्या। बप्पिहा वासइं, विरहणी उसासइं।
वूठा मेह, उलस्या स्नेह। नदी महा पूरि वहिवा लागी, देस विदेसनी वाट भागी।
जल भरिया निवाण, पृथ्वी प्रवर्ती मेहनी आण। आदि।

४. हेमत ऋतु–

अति वसंतु, आवियो रितु हेमंतु। जिहां सीयला भर, सेवइं निर्वात घर।
तुलाइए पुढीइ, भली तुलाइ उढीइ। अति ही मोटी, प्रलंब दोटी।
ओढि वेसइं, सीयाल हुई हसइं।

शरद ऋतु–

उन्हाला नउ भाई अनिलेइ वेश्वानर नइ अंगु कांई न जाणीइ।
किहाई हूंतउ, दिसि सप्रकास शरद ऋतु पहुतउ। फूल्या कास, अगस्ति ऊगउ। आदि।

५. वसत ऋतु–

विरहणी हसंतु, पुहतउ वसंतु। फूलइ वणराइ, नगर माहि न फिराइ।
मेल्हइ वैराग, खेलइ फाग। अति सूविसाल आंबानी डाल।
तिहा वाघहि हिंडोळा, रमइ नर भोळा। आदि।

६. ग्रीष्म ऋतु–

महा पित्र नउ आळउ, आव्यो उन्हाळउ। लूय वाजइ, कान पापड़ि दाझइ।
झाडूआं वलइं, हेमाचलना शिखर गळइं। निवाणे खुटइ नीर, पहिरइ आछा चीर।
एवडऊ ताप गाढउ, भावइ करवउं टाढउ। वाइ वाजइ प्रबल, उडइ धूलिना पटल।
सीयालई हुन्ति मोटी रात्र, ते नान्ही थई रात्रि। सूर्य आपण पइ तापइ, जगत्र संतापइ।
जे जीव थल चरइ, तेहि जलासय अनुसरइ।

७. कलिकाल वर्णन–

इणइ अवसर पिणी काळि, समइ समइ अनंत गुणि हाणि।
रस निरस्वाद, लोक स्तोक मरयाद। अविवेकु वासु, धर्मवंत नासु।
अतुच्छ मच्छर, करकस स्वर, तुच्छ धर्म रगु, गुरुजन प्रसंसा भंगु।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सुकृत करणे प्रमादु, बहु मृषावादु । सांप्रति वर्तइ-इसउ कलिकालु, जिहां को नहीं कृपालु ।
दरसण उच्छृङ्खलु । आर्यजन स्वल्प, घणा कुविकल्प ।
बहु भाराक्रांत देश मंडल, पृथ्वी मंद फल । साधुलोक आंकुल, राजा तुच्छ बल । आदि २ ।

यह प्रति अपूर्ण प्रतीत होती है । किनारे में ग्रन्थ का नाम 'मुत्कलानुप्रास' लिखा है जो ऐसी रचना का सार्थक व प्राचीन नाम प्रतीत होता है ।

## ४–वर्णनात्मक बड़ी प्रति

जैसलमेर से आते समय बड़ोदा युनिवर्सिटी के गुजराती भाषा के प्राध्यापक डा० भोगीलाल सांडेसरा मेरे साथ बीकानेर आये । साहित्य-गोष्ठी के प्रसंग में जब ऐसी रचनाओं की चर्चा चली तो आपने भी ऐसी एक प्रति मिली बतलाई । मैंने उसे उनसे मंगवा कर प्रतिलिपि करवा ली । उपलब्ध प्रतियों में यह सबसे बड़ी है । इसके ४० पत्र हैं । फिर भी अपूर्ण है । लेख-विस्तार भय से इस ग्रन्थ के विशेष उद्धरण न दे कर कुछ वर्णन ही दिये जा रहे हैं—

१. अथ भाद्रपद मास, पूरइ विश्वनी आस । लोक नइ मनि थाइ उल्लास ।
जिह नइ आगमि वरसइ मेह, न लाभइ पाणीनो छेह । पुनर्नव थाइ देह ।
भला हुइ दही, परीक्षयां कोई कहे नवि सही । पृथ्वी रही गहगही ।
साचई कादम माचई, करसणि नाचइ । नीपजइ सातइ धानि, देखतां प्रधान ।
नासइ दुकाळ. भाद्रवे ढूंढइ सुगाळ । आदि ।

२. गंगा पाखइ जल नहीं, बंधु पाखइ बल नहीं ।
मित्र पाखइ हेज नहीं, रवि पाखइ तेज नहीं ।

पुत्री जन्म–

३. जउ पहिलउ बेटी जाई, माइ बाप काळ मुंहा थाइ ।
जसु घर बेटी आवी, पूठि लागि चिन्ता आवी ।
बेटी घर सम्महो पाउ चालइ, दरिद्र वाटि दिखाइइ ।
जां हुई बालि, ताउ हुइ लालि पालि ।
हुई वडेरी, थइ अनेरा केरी । अवाटइ चालती, देह मरोड़इ हालती ।
कुल कलंक आणइ, अणहुंती कलि सामूहि ताणइ ।
आपणु घर सोसइ, पिरयु घर पोसइ । आपणु कुल ईखइ, पिरायु भूखइ ।
घणइ न तूसइ, थोड़लइ अपमान रूसइ । न जाइ बेटी, अनरथ खांणि भेटी ।

## ५–महत्वपूर्ण अपूर्ण प्रति

उपर्युक्त प्रति के बाद जोधपुर के केशरियानाथ के भंडार का अवलोकन करते समय एक अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई जो १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है । इसमें १५७ वर्णन पूरे और १५८ वां अधूरा रह गया है । कई वर्णन बड़े ही अच्छे हैं । अतः चार-पांच वर्णनों के देने का लोभ संवरण नहीं किया जा सकता—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


१. कलिकाल–

सम्प्रति वर्त्तई कलिकाल, महा कूड़ कपट काल ।
धाड़ चवाड़ साक्षात् हलाहलि, सासु बहु परस्पर कलि ।
गुरु शिष्य जाइ खांध वलि, अन्याय कुरीति देश मंडलि ।
राज कुळ रूंधा खलि, राय रांणा वर्त्तइ छलि ।
क्षत्रिय नासइं दीठइ वलि, भला माणस हुइं तांतलि ।
पृथवी मंद फल, मंत्र सर्व निःफल, जड़ी मूळी रस विकल ।
कुल स्त्री निरंगल, न्यायी राय तुच्छ दल । चरड बहुल, वाट पाडा तणा कलकल ।
धर्मगुरु चपल । पापोपदेस कुसल ।
मिथ्यात्व निश्चल, लोक माया बहुल, अल्प मंगल ।
इणि कुकालि, अवसर्पिणी काली । अल्प क्षीर गाइ, निस्नेह माइ ।
भक्ष भोज निरास्वाद, स्त्री तणी जाति अमर्याद ।
रहस भेद, रसच्छेद । क्रूर संचना, गुरु वंचना ।
आउखां स्तोक, निवाणिजा लोक । देव वातली, भक्ति पातली ।
अल्प मृत्यु, पगि पगि अकृत्यु ।
बाप बेटी तणा गरथ सातइं, आपणा छोरू कुखेत्रि धातइं ।
पाप जउ, धर्मी खउ । साचउ अवगणियइ, झूठउ वखाणियइ ।
गुरु शिष्य तणउ खमइ, बाप बेटा नमइ ।
सासू पाटलइ, बहु खाटलइ । ए कलि तणा भाव ।

२. विरहणी–

हार त्रोड़ती, वलय मोड़ती । आभरण भांजती, वस्त्र गांजती ।
किंकणी कलाप छोड़ती, मस्तक फोड़ती । वक्षस्थल ताड़ती, कंचुउ फाड़ती ।
केश कलाप रोलावती, पृथ्वी तलि लोटती ।
आंसू करी कंचुक सींचती, डोडली दृष्टि मीचती । दीन वचन बोलती, सखीजन अपमानती ।
थोड़ई पाणी माछळी जिम तालोचलि जाती, शोक विकल थाती ।
क्षणि जोयइ, क्षणि रोयइ । क्षणि हसइ, क्षणि रूसइ ।
क्षणि आक्रन्दइ, क्षणि निंदइ । क्षणि मूझइ, क्षणि बूझइ ।
तेह तनु, सतापइ चदणु । कंमलनाल, पुण मेलइ जाल ।
चन्द्रकांति ज्वलइ, पुष्प शय्या वलइ । हार भावइ अंगारु, कदली हर, मानइ जमहर,
जे जल सीकर, ते उद्वेग कर । जउ शीतलोपचार, ते करइ विकार ।
इणि परि प्रज्वलित, स्नेह पटल, विरहानल नीपजइ ।

३. युद्ध वर्णन–

विहु पखा बृहत् पुरुष साँचरिया, क्षेम मूडाविउ ।
विहु गमा मनद्ध-बद्ध नीपना, सुभटे जरहिं जीणसाल लीधी ।
मयगल गुडिया, सुडादंडि सुहवडि थातिया ।
पंच वल्लह किसोर पाखरिया. जाति तुरंगम पमाणिया ।
वीर पुरुष महासुभट प्रगुण नीपना, चक्रव्यूह, गरुडव्यूह तणी रचना नीपना ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


आगेवाणी सींगड़िया तणी श्रेणी, पछेवाणी फारक तणी पद्धति ।
ततो हस्ती घट सोत्कार करती, पाखरियानी श्रेणी हैखारव मेल्हती ।
पंच शब्द तणा निर्घोष जमला उच्छलइ, रण तूरी वाजइं ।
निसाण थाय गाजइं । बिहु गमे भाट पढइं ।
बिहुं गमे सुभट तणा सिंघनाद हुवा लागा, सिल्ल, भल्ल, तीर, तोमर, नाराच प्रहरण पड़वा लागा
बिहुं पखा हाकि हाकि, हिणि,-हिणि, मारि-मारि ।
नाठउ-नाठउ, भागउ-भागउ । इणि परि सुभट शब्द नीपजावइ ।
गयण आछादिउ । सूर्य किरण रूंध्या ।
तेतळ समइ- फूटेवा लागा कपाळ मंडळ, भाजेवा लागा धनुर्मंडल ।
जाएवा लागा शिरखंड, पड़वा लागी खांडा तणी झड ।
वाजिवा लागी सुभटनी काट कड़ि, नाचेवा लागा धड़-कबंध ।
पाड़िवा लागा ध्वज चिंध, प्रहार जर्जर कुंजर पड़इं ।
सुनासणा तुरंगम तड़फड़इं, भाले भरड़ीता गजेन्द्र अरड़इ ।
रीरीया करता राउत हथियार हूलइं, घाइ घूमिया सुभट ढलइं ।
पड़िया पाइक न ऊससीयइं । हिव हाथियां आश्वासीयइं ।
मउड़उ धाम उडपडैइं । रैवंत रड़वड़इं ।
पड़िया पंचायणनी परि हाकइ, रोस लगि मुंछ मुंछ फरकावइ ।
रथ चक्र चांपी ती- किरोड़ि कड़हड़इ ।
भाग्यवंत जयलक्ष्मी वरइं, आपणउं काज करइ ॥ ११४ ॥

४. प्रभात वर्णन् –

प्रभात समउ हुउ, अन्धकार फीटउ ।
गाय तणा गाळा छूटा, तारागण विरल हुउ , चन्द्रमा विछाय थिउ ।
कूकडां तणी उळि लवइ, देव तणा बार ऊघड़िया, प्राभातिक तूर्य वाजियां ।
राज भवनि वैतालिक पढइ, विलोणा तणा झरड़का उपजइं. पथिक मार्गि थया ।
ब्राह्मण तणो घरि वेद ध्वनि विस्तरी, धार्मिक लोक प्रतिक्रमण पर हूया ॥ १४८ ॥

५. ऊनालो –

उष्ण काल पहुतउ जिसि दावानळ तणी ज्वाला तिसि लू वाइं ।
जिसिउ बावन्न पळ तणउ गोळउ धमिउ हुई तिसिउ आदित्य तपइ ।
जिसी भाड़ तणी बेलु, तिसि भूमिका धगधगइ ।
मस्तक तणउ प्रस्वेद पान्ही उतरइ, धर्मि जीव लोक गलगलइ, श्रीमंतना चउबारां झळहळइं ।
जलंद्रा शरीरि लगाड़ीयइं, गुलाब तणा अभ्यंग कीजइ, बावन श्रीखंड वसीयइं ।
चउदिसि वींजण फिरइं, द्राक्षा आंबिली पान कीजइ ।
कलम शालि तणा साधउरा करवा कीजइं । आछा कापड़ा पहिरीयइं ।
लूआ हण्यां पाणी पीजइं । १५० । ( फिर संस्कृत श्लोक हैं ) ।

जिन पांचों प्रतियों का परिचय प्रस्तुत लेख में दिया गया है– सभी जैन रचनाएं हैं । इनके अतिरिक्त १५ वीं और १६ वीं शताब्दी की अन्य तीन ऐतिहासिक तुकान्त रचनाएं हमारे संग्रह में हैं जिनमें से सं० १४८२ लिखित तपागच्छ गुर्वावली 'भारतीय विद्या' में प्रकाशित हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



चुकी है और जिनसमुद्रसूरि और शांतिसागरसूरि संबंधित १६ वीं शताब्दी के वर्णन 'राजस्थानी' भाग २ में प्रकाशित हो चुके हैं।

ऐसी ही कतिपय वर्णनात्मक रचनाएं चारण कवियों की प्राप्त होती हैं जिनमें से खिड़िया जगा की 'रतन महेशदासोतरी वचनिका' एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता से प्रकाशित है और 'खीची गंगेव नींबावतरो दोपहरो' और 'राजान राउतरो वात वणाव' राजस्थान पुरातत्व मंदिर से प्रकाशित हो रहे हैं। ये दोनों भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

राजस्थान में लोकवार्ताओं को कहने का ढंग भी बहुत छटादार, वर्णनात्मक, तुकान्त और निराला है। उसका वर्णनीय प्रसंग साकार हो उठता है। बात कहने वाला जहां जहां भी प्रसंग मिलता है उसका वर्णन बड़े ही विस्तार से प्रसंग के अनुकूल करके श्रोताओं को अपनी ओर ऐसा आकर्षित कर लेता है कि वे अन्य सारी बातें भूल कर बात सुनने के रस में निमग्न हो जाते हैं। श्रोता रातभर उसी रस में सराबोर रहता हुआ समय का अन्दाजा भूल जाता है कहानी-कार छोटी सी बात को इतनी लम्बी और छटादार बनाये जाता है कि जिससे कई दिनों तक वह बात चलती ही रहती है। शहरी वातावरण अब इसके अनुकूल नहीं रहने से राजस्थान में बातों के कहने की जो विशेष शैली थी, अब लुप्त होती जा रही है। रसिक व्यक्ति गांवों में आज भी इसका रसास्वाद कर सकते हैं। प्रस्तुत लेख द्वारा विस्मृति के गर्भ में विलीन हो जाने वाली इस वार्ता-शैली और बातों को चिरस्थायी बनाने के लिए ध्यान आकर्षित किया जाता है। गुजरात में लोक-साहित्य और वार्तादि के संग्रह का जैसा अच्छा प्रयत्न हुआ है, राजस्थान के साहित्य-प्रेमियों के लिए भी अनुकरणीय है।

प्रस्तुत लेख में जैसी वर्णनात्मक रचनाओं का परिचय दिया गया है-खोज करने पर और भी कई रचनाएं मिल जाने की पूर्ण संभावना है। जैसा कि पहले कहा गया है उपलब्ध प्रतियों में तीन महत्वपूर्ण प्रतियें अभी अपूर्ण रूप में उपलब्ध हुई हैं। उनकी पूर्ण प्रतियें भी अन्वेषणीय हैं।

ऐसी वर्णनात्मक रचनाओं के विविध नाम प्राप्त हुए हैं। वाग्विलास, सभाशृङ्गार, मुक्तकानुप्रास, वचनिका-ये पुराने नाम तो मिलते ही हैं। स्व० देसाई ने तुकान्त की विशेषता को लक्ष्य करते हुए इनकी संज्ञा 'पद्यानुकारी गद्य' शैली बतलाया है। यद्यपि १५ वीं शताब्दी से पहले की कोई ऐसी रचना लोक-भाषा में अभी तक प्राप्त नहीं है, पर पृथ्वीचन्द्र चरित्र में इस ग्रन्थ से पहले भी यह शैली प्रचलित रही होगी ऐसा प्रतीत होता है। १६ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक राजस्थान और गुजरात की भाषा एक जैसी ही थी अतः इन रचनाओं में से सभाशृङ्गार में गुजराती भाषा का पुट अधिक देखा जाता है। प्रथम शुद्ध राजस्थानी में है और अवशेष तीन अपूर्ण रचनाओं की भाषा दोनों प्रान्तों के लिये समान सी होने से इनका रचना काल १६ वीं शताब्दी ही होना विशेष संभव है।

—श्री अगरचन्द नाहटा

---

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# खीची गंगेव नींबावतरो

## दो-पहरो

गंगेव खीची काग भड़ां किवाड़,
बैरियां जड़ां उपाड़,
जिणकी सेल कहूं वणाय,
सुणियां मन प्रसन थाय.

वरखा रितु लागी,
विरहणी जागी,
आभा झरहरै,
वीजां आवास करै.

नदी ठेवां खावै,
समुद्र न समावै.

पहाडा पाखर पड़ी,
घटा ऊपड़ी.
मोर सोर मंडै,
इंद्र धार न खडै.

आभो गाजै,
सारंग वाजै.

द्वादस मेघ नै दुवो हुवो,
सू दुखियारीरी आंख हुवो.

झड़ लागो,
प्रथीरो दळद्र भागो.

दादुरा डहिडहै,
सावण आणवैरी सिध कहै.

इसो समइयो वण रह्यो छै,
वरखा मंडनै रही छै.
विजळी झिलोमिल करनै रही छै,
वादळां झड़ लायो छै.

सेहरां-सेहरां वीज चमकनै रही छै.
जाणै कुळटा नायका घरसूं नीसर
अंग दिखाय दूसरै घर प्रवेस करै छै.

मोर कुहकै छै,
डेडरा डहकै छै.

भाखरांरा नाळा बोलनै रह्या छै.
चोटड़ियाळ डहकनै रही छै,
वनसपतीसूं वेलां लपटनै रही छै.
परभातरो पोर छै.

गाज-आवाज हुयनै रही छै,
जाणै घटा घणै हरखसूं जमीसूं,
मिलण आयी छै.

इसै वखत समइयैमैं
गंगेव नींबावत बोलै छै;
मनरी उमंग खोलै छै.
सैलां-सिकारांरो दुवो हुवो छै,
भाई अमराव साहणियांनै हुकम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



हुवो छै.
तयारी कीजै छै.

मन-जाणिया हथियार-पोसाख
लीजै छै.

घोड़ा दही कटोळसूं संपड़ाइजै छै,
फेर उजळै पाणी नहाइजै छै.
हजार घोड़ा तयार कीजै छै,
चौकड़ा-लगाम दीजै छै.

सू घोड़ा कुण जातरा छै, कुण रंग भांतरा छै?—अैराकी अारबी तुरकी खंधारी ताजी सिकारपुरी धारी काछी माळवी हबसानी पूरबी टांघण पहाड़ी चिन्हाई—अौर ही अनेक जातरा घोड़ा तयार कीजै छै.

कुमेत नीला समंदा मकड़ा सेली समंद, भूवरबोर सोनेरी कागड़ा गंगाजळ नुकरा केला महुवा घूमरा हरिया लीला गुलदार पंचकल्याण पवण गुरड़ संजाव संदली सीहा चकवा अबलख सिराजी.

फेर ही अनेक रगरा घोड़ा तयार कीजै छै.

साखत जीण काढ़ीजै छै.

तिके जीण किण भांतरा छै—गुजराती कसमीरी कसूरी मारवाड़ी दखणी मिरजाई भटनेरी लाहोरी हजार-मेखी घणां रंग-रंगरो वनात मुखमल कलाबूती सोनै रूपैरा वणिया जीण हाजर कीजै छै.

जीण मांडजै छै.
केसवाळी रंग-रंगरी गुंथजै छै.
अगाड़ी-पछाड़ी खोलजै छै.

रेसमरी बागडोरांसूं अाण हाजर कीजै छै.....किसा हेक घोड़ा छै?

बे पख भला, ऊचा अलला,
कटोरा नखा, अारसी सारीखा.
तिअंगला गाळा, मुठिया बील फळा.
निमंसी नळा, गोडा नाळे र फळा.
उर ढाल अंसा, कूकड़ कंध तैसा.
अांख पाणी मोती तवा,
लिलाड़का बेठा नवां.

जळ अंजळ पीवै,
कनोती लोय दीवै.
मगर लादक अछी,
छोटी पड़छी.
पूठ बाथां न मावै,
पूछी चवर दावै.
फीचा धनख जैसी,
काछ नारंगी तैसी.

अैसा घोडे राव चाकरांरै हाथां में काढणा.

सू मोर ज्यूं तंडव करै छै,
निकुली ज्यूं अंग भांजै छै,
अन ज्यूं उल्हसै छै.
भागा काला मांकड़ां ज्यूं झांफां भरै छै.

निरत कारण ज्यूं नाचै छै,
नट ज्यूं उळटां खावै छै.
डोरमे थका अेकी-बेकी करै छै.
अांखका गोसा सिन्धके जैसा.
मनका गंगाजळ,
सुकलीणी ज्यूं छंदां ऊजळ.

अैसा हजार घोड़े राव अाण हाजर हूवा छै.

तठा उपरायंत गंगेव नींबावतका भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



करै छै. कसूमल केसरिया हरी सबज सपताजू सोसनिया नारंगिया सपेत.

जाणं तिजाराकी वाड़ी फूली छै ऊपर उणहीज वणता हथियार बांधजै छै.

तरवार कटारी ढाल छुरी तरगस बंदूक बरछी गिलोल गोफण चूकमार. और ही भांत भांतरा आवध सझियां थका चौक पधारै छै.

सू किण भांतरा छै—
काल्हीरो कळस,
सतीरो नाळेर,
तोरण आखा,
कुंवारी घड़ारा वींद,
गाहड़रा गाडा,
फौजारा लाडा,
काचा कुंभ ज्यूं काया जाणं,
परायी छठी जागै,
रिड़तो तेज, भूखियो लोह लियां रहै,
काछ-वाच निकळंक.

तठा उपरायंत गंगेव नींबावत बाहर पधारै छै. सू किण भांतरो छै ?

ऊगतो सूरज,
पावासररो हांस,
कुंवरांपत कुंवर,
जळहर जबाध भोगी भंवर;
कसतूरियो सिंघ,
लांघियो सिंघ;
सीळ गंगेव,
दुरजोधन अहमेव;
जुजठळ ज्यूं साच,
दुरवासा वाच;
ग्यानरो गोरख,
सहदेव ज्यूं सारी वात समरथ;
अरजुन ज्यूं बाण,
करण ज्यूं दान-पाण;
वत्तीस आखडीरो निवाहणहार,
वैरियां विभाड़णहार,
पर भोम पंचायण,
घण दियण, जस लियण,
कळायरो मोर,
सूंधै भीनै गात,

केसरिया पौंसाख कियां, पांच हथियारां बांधां आण, घोड़ै असवार हुवै छै.

नगारै इक डंको वागो छै,
मीर सिकारानै हुकम हुवो छै.

वाज, जुररा, कुही, बहरी, सिकरा, लगड़, चिपक, तुरमती साथ लीजं छं.

चीतेवाणानै हुकम हुवो छै.
चीता साथ लीजं छं,
घोड़ारी पूठ तखतां ऊपर बैठा छै.
आंखयां आडी कूल्है छै.
सकळायतरा पटा, रूपैरी भंवर कड़ी, रेसमरी डोर.

तिके चीता कठारा छै ? मरोटरा, आधीरा, देरावररा, रोहरा, थटैरं पहाड़ारां, ईडररा डूंगरांरा, जाळोररा पहाडांरा, पावररा थळांरा, पारकररा विहडांरा. इसा चीता साथ लीजं छै.

....हतरांनै हुकम हुवं छै. कुतांरा डोर छूटै छै. लाहोरी ताजी लूच बाण गिलजा पहाड़ी. जिकांरी मूडहथ मोह नाळ, हाथ भर नस, वड़रै पान जिसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कान, ताजणासेद पूंछ, नाहरसा पंजा, बाघसी आंख, पालळो लीक जाडं आंठूं. इण भांतरा कुता. बनातो पटा, रुपैरी भंवरकड़ी, रेसमी डोर, कानांमें रूपै सोनैरा वेढला, गळैं में निजरा ताइत. इण भांत सूं आण हाजर हुवा छै.

इकां वेहलां रहकलां ऊपर बैसाणजै छै. सू इका वेहला रहकला किण भांतरा छै ? गुजराती, सुरती, खँभाइची, भुज-नगरी, हेसारी, उजीणरा, बणिया घणे सीसूरा, पीतल लोह दांतरा जड़िया, लाल सलहटीरा गदरा बिछाया थका, चांदणी ढालिया थकां आण हाजर हुवा छै. वेहलियांरी फुरणी बाज रही छै. जग घूघरा बाज रह्या छै. सू वेहलिया किण भांतरा छै ? थेट काकरेचरा छै, सोरठरा छै, हालाररा छै, सुवालखरा छै, देस-देसरा इकरंग सपेत छै. जांहरो सपेती आगै बगला ही मगसा नजर आवै, मंहदी सुरंगिया वनातरा मोहरा लाले सुतरी नाथा. रेसमरी रास, सींगा पीतळरी खोळी. वनाती झूलां घातियां रहकलां इकां खड़सलां जूता छ. सू हालियां थकां घोड़ांरी माम पाड़ै. इसा वेहली जूता रहकला इका खड़सल आण हाजर हुवा छ.

तठा उपरायंत भोइयांनै हुकम हुवौ छै. भूजाईरा वासण तयार कर राती नाडी चालज्यो. सू वासण तयार कीजै छ. देगां, चरू, कढाई, कुड़छी, खुरपा, डहोला, झरहर, चालणी, थाळ, कटोरा, प्याला. ढकणी, लोटा, पाला, बाजोट. और ही सब छकेड़ां गाडां घात जै छै.

तठा उपरायंत मौदियांनै हुकम हुवौ छै. भूंजाई मारू सारी ही वसत सीधो मीठाण वेसवार षरब लेय राती-नाडी चालज्यो, म्हे सिकार रम उण नाडी आवां छा. सू मोदी भोई तो पाधरा नाडीरै मारग वहीर हुवा छै. आप रमणंर मारग भाखरांनै खुडांरै मारग चालिया छै. घोड़ारा पोडांसूं जमी गूंज रही छ. खेहरो डोरो आकासनै जाय लागो छः घूघरमाळ घोड़ांरी बाज रही छै. हींस कलल होफ हुयनै रही छै. वहलियांरा घूघरां जंगांरो झमकार हुयनै रह्यो छै. वहलांरा वांस पइयांरो खडबडाट हुयनै रह्यो छै. होकारा हुयनै रह्या छै. नगारै इक डंको हुयनै रह्यो छ सहनायां में मलार राग हुयनै रह्यो छ. निसाण मुहडं आगै फरहरनै रह्या छै. नकीब, चोपदार नजर दौलत. सू सूरजरी किरणनै वरछियांरी अेकै किरण हुयनै रही छै. इसो समीयो वणनं रह्यो छै.

तठा उपरायंत ऊंठां चढियां रबारियां आण मुजरो कियो छै. सू ऊंठ कुण-कुण दिसावररा छै ? काछी वोदला छपरी जालोरी वगरू बलोची सिववाड़िया खाडालिया. और ही अनेक जात-भांतरा ऊंठ छै. सू साथरो घूमरो कियां थका रमणं सिर आण खड़ा हुवा छै.

हमै तीतरां ऊपर बाज छूटं छै.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



करवानकां ऊपर जुररा छूटै छै. तिलारां ऊपर वासा छूटै छै. लवां ऊपर सिकरा छूटै छै. वटेरां ऊपर तुरमती छूटै छै. वोवड़ां ऊपर चिपक छूटै छै. बुरजां ऊपर लगड़ छूटै छै. कुलंगा ऊपर कुही छूटै छै. इण भांत देसौत राजेसर सिकार खेले छै.

घोडा दौड रह्या छै. होकारा हंगामो हय रह्यो छै. जितरै बीच थोहर झाडारा विडा मांहां खरगोस उठिया छै. सू किण भांतरा छै? मोटा घेदा छै. तोवडिया छै. घणी लीलै जडी-बूंटी रा चरणहार, पांहरै पाणी रा पीवणहार. तिकां ऊपर कुनांरी डोर छूटी छै. बांठ-वोझा कूदै छै. धुचली खाय रह्या छै. ठुलीरो, गोफणरी, तीरांरी चोटां हुय रही छै. के घोडा आखड़ छै. घोड़ांरा पगांसूं कांकरा-पथर उछळै छै.

इतरै बीच हिरणांरा डार आय नीसरै छै. तिके किण भांतरा हिरण छै? काळा वडा वेगड़ छै, मुहडांरै डारमें मेघ हुय रह्या छै. मांहे राग छै जिके कूद-उछळै छै, रीगटा हिरण छै. सुरुत आइ हिरणीनै घेचता फिरै छै. सवळो हिरण निवळं नै घेचै छै. इव डार करोलां मुंहडै आगै आग काढियो छै. तिकां ऊपर चीता छूटै छै. कुलफां दूर कीजै छै. तमासो वण रह्यो छै.

इसै समइयैमें भालुवां आण अरज कीवी छै. भाखरांरा खुडां वेहड़ां मांहां सूवर नीचा उतरिया छै. राजानां देसोतां सूवरां सामी वाग लीवी छै. फड़कडां फड़वड़ायां जावै छै. इसैमें सूवर नजरां पड़ै छै. सू सूवर किण भांतरा छै? भूरा, कवळा कैई अवलख छै. डार अेकै पासै छै. अेकल अेक तरफ छै सू अेकल किण भांतरो छै. जैरो वारहं आंगळ खग लीडीकट छै, कांधो-पूठ अेक सारखो, छै. गुळवाड़ गोहूं जव चिणांरो, जुवाररो चरणहार छै. मयमत छै. सू चर चर फरणियां आया छै माछुरांरा संताया. थोहरनै झाड़रा बिड़ां सुखसे छै घूड वाहै छै सू जड़ां समेत उखाड़ नाखै छै. इसा सुवरांरा मोरां ऊपरां राजानां घोड़ा लगाया छै. वरछियांरा धमोड़ा लाग रह्या छै. चूकमारांरी खाटखड़ लाग रही छै. कैई घोड़ा सुवरांरा तूंडांसूं उछळ परै पड़ै छै. तरवारां वहि रही छै. कटारी वहि रही छै. कैई सेल्ह तूटै छै. कैई आधो सलै छै. सुवर मारजै छै. ऊंटां ऊपर घातजै छै.

इसै समइयैमें धूप तपै छै. रातरा अमलांरी खुमारियां देसोतां-राजानांने तिल लागै छै. नद नाडी माम्हीं वाग वाळी छै. सिकार सरव अेक ठोकर रहकलां ऊंठा ऊपर घातजै छै. हांस माणण तळाव आया छै.

तिको तळाव किण भांतरो छै. रानी वरडीरो. पांडरो नीर. पवनरो मारियो फीण आछटनो थको झोला खाय रह्यो छै. लहरां लियै छै. अथग डोंव छै. कड़ियां, मुंवै पाणीमें पैठा पगांरा नख झाखै छै. दूधरै भोळावै विलाव वागीजै छ. ऊपर कुंजां, सारसां गहकनै रही छै. डेडरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



डहकनै रह्या छै.टीटोड़ी टहकनै रही छै. जळ-काग गुटकनै रह्या छै. मुरगाबी तिरनै रही छै. अढार भार वनस्पती झुकनै रही छै. तळावरै छेहड़ां कुंवळ फूलनै रह्या छै. हजार पांवड़ा ईस छै. आठसै पांवड़ा उपळै छै. इण भांतरो तळाव छै.

सू आडा नाळां भरियो छै, जाणै दूसरो मानसरोवर छै. तिण ऊपर घणा वड़ां पींपळां बोरबकायण नींब नाळेर आंवा आंवली मीसूं सरेस खेजड़ जाळ आसापालो खिजूर गूंदी लेसूड़ी केसूला खिरणी मौळसिरी फरवास रायसेण/ महुवा ढाक कुभरा कोकर टूला झुकनै रह्या छै. डाहळांसूं डाहळां अडनै रह्या छै. छायमैं सूरज नजर नावं छै.तावड़ैरी कुण चलावं? आछो सो मेह आवं तो पण छांट पुंहचण न पावं छै.

इसी सांघणी वनसपती मिलनै रही छै.

जाणै दूसरी धरा छै.
दरखतां ऊपर मोर कुहक रह्या छै.
सुवा केळ करै छै.
तूती बोल रही छै.
लाल हाक मार रह्यो छै.

ऊपर बगला पावस बैठा छै, सू किसाहेक सोहै छै, जाणै कलाइण कागोळड़ नाखती आवै छै.

तिकांरी छांहड़ी आय राजानां-देमौतां पागड़ा काढिया छै.

आप-आपरा घोड़ानूं देसौत बाफतारी चादरांसूं पवन कर रह्याछै.

घोड़ा लोह चाव रह्या छै. जीणांरी साखां-जनाखां ऊंची नाखजै छै. तंग खोळा कीजै छै.

तठा उपरायंत पताखांसूं बादळा छौडजै छै. सू किण भांतरा बादळा छै? हळवदरा,मोरवीरा,अंजाररा, भरवछर हालोररा छै. रूपैरी टूंटी सांकळी लागी छै. घणी सिलेहटी अटायणमें वींटिया थका, ऊपरा बेवड़ी-तेवड़ी झालरींमें गरकाब किया थका छै.

सू उण ही बादळांसूं घोड़ांरा लालिया छांटजे छै. फेर बादळा खंखोळ उणहीज तळावरै पाणीसूं छाण भरजै ह उणहीज वड़ां-पीपळांरी साखांसूं टांगजै छै.झौटा दीजै छै. पवन खुवाय पाणी ठंढो कीजै छै.

तठा उपरायंत जाजमां गिलमांरा विछावणा हुयनै रह्या छै. ऊपरा गदरा चांदणी विछायजै छै. तै ऊपर सुजनी ढाळजै छै सू किण भांतरी छै? भड़ोछी वाफतैरी, घणै कलावूत रेसमरै कार-चोभीरै कामरी. गुजरातरे कारीगररी कीवोछै. तकिया लगाजै छै.

तठा उपरायंत देसौत राजान आपरा टोळी मजलरा जुंवान लियां विराजमान हुवा छै.कमरां खोलजै छै. वरछीरा झूला कीजै छै. सू वरछी कुण भांतरी छै. ताड़रा, वड़ पीतळरा भर तावूड़ा गजवेल दाणैरा फळ रामपुरैरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



घड़ियोड़ा, रूपैरा सौनेरा नकस छै. फोफलिया रूपैरा लागा छे. फळां ऊपर बनातरा मुखमलरा चकारा लगायजै छै.

तठा उपरायंत तरगसांरा कुलावा छूटै छं. सू तरगस कुण भांतरा छै ? लाहोर कसूररी वणी ठावी, घणी वनातमें लपेटी थकी, घणै कलाबूतसूं गूंथी थकी, रूपैरी कुहरी फुलड़ी जीभी लागी थकी, तिके ठावी साठ-साठ तीरासूं भरी थकी. तिके किण भांतरा तीर छे? गुजरातरी नीपनी सांठी, गाडे गाही, सात वार संचै मारी, लाल स्याह रंग, गजवेल दाणैरा पैगाम छै, ऊपर सोन्हैरी नकस छै, खुरसाणरा उतारिया, माठीरा तिलारिया, ऊपर रूपैरा सांवा छै, पीतळ तांबैरा छला छै, दांतरी चौकड़ी छै, तिलौररा पंखारा छं, दांतरा सुफाळा छै, सोन्हैरी हळ लिखी छै, नचमूठरा तीर छै. इसा तीरांसूं ठाठा भरिया थका. सू उणहीज बड़ां-पींपळांरा दरखतांसूं नांगळजै छै.

तठा उपरायंत कमाणां कुरमाणां मांहे मेलजै छै. तिके कमाणां किण भांतरी छै ? बारै वरस दरियावां मांहि जहाजां हेठं बंधी आइ चिलेवाइ हकारा करती गुण-भार-बंकी अढार-टंकी असली जादी पठाणरी वेटी ज्यूं तुही-तुही करती थकी, बलोचणी ज्यूं लचकार करती थकी, इण भांतरी कमाणां उणहीज दरखतांरी साखांसूं नागळजै छै.

तठा उपरायंत ढालांरा अलीबंध खुलै छै. सू ढालां किण भांतरी छै. सिलहटी छै. सुध गैंडांरी आरणांरी छै. घणांरी मारी बधै छै. वाहरै महीनां संचै में रहै छै. मोहर तोलैरो रोगान रंग लागो छै. तरवार कटारी वरछीरा दाव ही न लागै छै. सुवररी दांतरी लागै तो पण रड़क न ऊतरै. गोळी लागै तो उछळ पाछी पड़ै. सौनै-रूपैरा चांद-फूल, मुखमलरी गादी, सांवरा हथौसा, बोयदाररी डावां कसा इण भांतरी ढालां सूं उणहीज दरखतांरी साखासूं नागळीजै छै.

तठा उपरायंत तरवारियांरा कमसारिया खुलै छै. सू तरवार्यां किण भांतरी छै ! सीरोहीरी नीपनी, वे आं अगला बाढ मेरिया थकां जनैब मगरेब पुड़तकाळ सेफ विलायती मुजरी बिरांणपुरी हबसानी फिरंगी. सू म्यान माहां काढ घासमें नांखजै तो पाणीरै भौळावै जनावर ठूग बाहै. वगतरमें वाही दोय टूक करै. चौरंगमें वाही थकी सीकसिरो चलणिया सार बाढै. लोहमें वाह्यां थकां आलछो ही न पड़ै. सू घणै मुखमल वनातरा म्यानां मांहे लपेटी थकी, घणी सौनै- रूपैमें जड़ी थकी, घणी बुलगाररै साज में लपेटी थकी, उणहीज ढालांरा गड़गदांमें मेलजै छै.

तठा उपरायंत कटार्यांरा कमर बांधा छूटै छं. सू कटारी किण भांतरी छं? विराणपुररो, रामपुरारी, बूंदीरी, राजासाही, ओडारी, अढाई, भोगलीरी, कोताखानी, पाडाजीभी, घणै सोनैमें झकोळी थकी, नव नगां राछांसूं भरी थकी,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



उणहीज सेल्हां बाफतांरा कमरबंधांमें लपेटी थकी, उणहीज ढालांरी आंचामें मेलजै छै.

तठा उपरायंत पेटीरा कसा छूटै छै. सू पेटी कुण भांतरी छै? असल दाणांदार बोयदाररी छै. तैरी खसबोयरा लिया भंवरा गुंजार करै छै. वीस-वीस पांवड़ां खसबोयरा डोरा छूटै छै. जाणै गांधी हाट पसारी छै.

तठा उपरायंत बागांरा चिहरबंद छूटै छै. सू किण भांतरा बागा छै? सिरोसाप भंरव चोतार कसबो महमूदी फूलगार अध-रस सेला बाफता डोरिया मोमनी तनजेब सासाहिबी तरै-तरैरै कपड़ै रा बागा छै. सू उतार-उतार उणहीज दरखतांरी साखां ऊपर उरळा कीजै छै.

तठा उपरायंत चरणांरा गिरदाना मोकळा कर जाजमां गिलमां ऊपर बैसजै छै. पाघां लपेटा उतार ढालांरा गड़गदामें राखजै छै. बाफतांरा सेलांरा रूमाल केसरिया छै सू माथां ऊपर राखजै छै. वीझणांसूं वायेरा लीजै छै. सू किण भांतरा वीझणां छै? लाहोररा कियोड़ा छै. रूपैरी डांडी जरीसूं मढी, टुकड़ीरी झालरी. सू वणी थकी खवास-पासेवाणांरै हाथ छै, फरास वडां फरासी पंखांसूं वायेरो घात रह्या छै. मातै हाथी ज्यूं हींड रह्या छै. तीन भांतरो पवन वाज रह्यो छै-सोतळ मंद सुगंध. गरमी मिटायजै छै.

तठा उपरायंत राजानां मलूक कुंवरांरै साथ साल कलालीरो हुकम हुवो छै. तिजारो मंगायजै छै. तिको तिजारो किण भांतरो छै? तासणीरी बाड़ीरो नींपनो इकतीस ताड़ीरो, नाळै रसो मोटो, खोपरा वढरो, गरीरै ढळरो, हाथसूं छूट पड़ै तो काचरी सीली ज्यूं किरचा-किरचा हुय जावै. पाणीमें घातियां थकां ढहि जाय. इण भांतरो तिजारो सू गोरो भूवरियां पुंहचांसूं दुजण साह्यां कटोरांमें भला जुवान मचकावै छै. बेवड़ी गळणीसूं खिची चाढ छाणजै छै. ऊजळा रूपोटांमें घात मुनहारां हुयनै रही छै.

तठा उपरायंत अमल मंगायजै छै. सू अमल किण भांतरो छै? थेट आगरा ही काळू केकीनरो नीपनो. भूरो थटाई अरोड़ी नहलिया भोजपुरावटी. सू आगराही अमलरी चकी बंक्यां चुरयांसूं मिरोवढ कीजै छै. केसरिया पोतां रूमालांमें घातजै छै. अरोड़ी गाळजै छै. भोजपुरीरा पला कीजै छै. मुनहारां हुयनै रही छै. अमलांरा जमाव कीजै छै. अमलांरा तंडल रोपजै छै. अमलांरी नीवां दीजै छै.

इसैमें भांगेसुर मंगायजै छै. सू किण भांत छै? केसरी क्यारी दोलळी, वामग-माथारी. थोहररा विड़ारी, भाखररा लुड़ारी, भूरै मोररी, काळै पानरी, आवूरा विहड़ारी, भमरमार मिरघमाळ लरियाळ चिड़ियाळ चोटडियाळ, अेक पान अडगरियां पान अेक पान अहमदावाद. पान-पानरो दम लीजै छै तिण भांग सारू मसाला

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मंगायजै छै. जायफळ लांग इळायची मिरच विरहाळी अजूं नागकेसर भमरटंटी नज तमालपत्र तंबोल प्रत संथी. और ही मसाला मंगायजै छै. मिश्री कालपी गंगापाररी मंगाय कोरा घड़ांमें भिजोयजै छै.

तठा उपरायंत इलूरारी कूंडी तेजवळरो घोटो धोय तयार कीजै छै. भांगण वीरा मोकळा पाणीसूं धोयजै छै. फेर कोरी हांडीमें रांधज छै. तठा पछै घोटजै छै. भला मोटियार होसनाक जुवान वणाव छै. वेवड़ा गळणांसूं मचकाय काढजै छै. इसी जाडी काढ़जै छै माथै टीको काढ़जै तो नीसरै, पवनरी मारी सींक ठाहरै. इण भांतरी भांग काढ तयार कीजै छै. कसूंबांनूं होसनाक पवन करै छै. सू रूपोटां में लियां खवास पासेवाण हाजर करै छै. मुनहारां हुवै छै. देसौत आरोगै छै. अमलां चाक हुयजै छै.

तठा उपरायंत जांगड़ियांनै हुकम हुवै छै. सू भजन ख्याल गावै छै. माता हाथी गजराज पटाभर ज्यूं झोला खावै छै. सहनायची सहनायां मांहे सारंग वणायो छै.

तठा उपरायंत सिरदारां देसौतां तळावमें झूलणरी हांस करै छै. लाल लांगीरी पोतां पहरजै छै. घड़नांवा वणायजै छै. सू लै तळावमें वड़जै छै. हासो-तमासो कर रह्या छै, मांथैरा जड़ा केसांरा छूटा छै. सू किसा नजर आवै जाणै काळा वासग तिरै छै. जळ डोहि रह्या छै. जाणै रेवा-नदीनै हाथ डोहळ रह्या छै. इसौ समइयौ वणनै रह्यो छै. जिसैमें पाणीमें तिरता मुरगावी नजर आवै छै. तिकांरै सिकारै पगा वंदूकां गिलोलां मंगायजै छै. सू वंदूकां किण भांतरी छै. ? गगा-पाररी, सीहनंद-समियाणैकी लाहोररी करनाटकरी फिरंगरी थटारो. घणै सोनै-रूपैमें गरकाब कीवी थकी. नकसदार जाणै गोडियै नागण लांवी कीवी छै. दूसरो वीजरो सळाव सीसूं पीळियै दुधैरी लकड़ीरा कुंदा छै.रूपैरी तारांरा कोकड़ी सीरम सपेतरा वंध छै. वोयदाररी डावां छै. कसूमल सूतरी लपेटी जामकी छै. रूपैरी वनातरी मुखमलरी कुंदारे पीदी वण रही छ. सुइया सांकळी रूपैरा चमकनै रह्या छै. सात-सात विलंदांरी लांबी खोळी मेण कपड़रीसूं बाहर काढजै छ. जाणै बादळ मांह वीज नीसरी, आकासरी, कना तीजरै तमासै मारू पातळी कामणी पोसाख कर नीसरी, इण भांतरी वंदूकां मोटयार तिरता-तिरता लेय उण घड़नांवां आया छै.

गिलोलां किण भांतरी छै ? घण सींग लकड़ीरी जोड़ी, घणी पय सरेसरी पचायी, कमाणरै घाटरी, दांतरां मोगरां लागां थकां घणी सोनैरी हळरी लिखी जंगाळी रंगरी, नवे चड़ावरी तांत, रेनमैरो मेदान गूंथियां थकां. राजानां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



देसौतांरै हाथां दीजै छै. कुंभारी कमायोड़ी, हथाळीरा मारिया, धुईरा पचाया, नींबुवै घाटरा. इण भांतरा गिलोला हाथ दीजै छै.

उणहीज बंदूकां गिलोलांसूं मुरगाव्यांनै चोटां कीजै छै. तमासो हुयनै रह्यो छै. सिकार मुरगाबी अेकठी कर तळावसूं बाहर पधारजै छै. लीली पोतां दूर कीजै छै. चरणा पहरजै छै. सू किण भांतरा चरणा छै? इलायचैरा मिसरूरा गुलबदनरां मालनेरीरा बाफतांरा, चाळीस चाळीस हाथांरा छै. गिरिया डोबरे समा नाडा छै. सू चरणा पहर जोड़ी पगां घातजै छै. सू जोड़ी किण भांतरी छै? लाहौररी पिसोरी घणै वनात मुखमलरी लपेटी थकी, घणै कलाबूतसूं गूंथी थकी, पैहरजै छै.

तठा उपरायंत पाछलै पोहररी ढळती छायारी विसायत कीजै छै. देसौत सिरदार जाजलमां पधारै छै. केस सुंवारै छै. मोगरैरी वेल केवड़ैरे तेलसूं केस सुथरो कीजै छै. दांतरा छलांरा चंदणरा चखड़ीरा कांगसियांसू केस सुंवारजै छै. केसांरां जूड़ा बांधजै छै. ऊपरा मखहूलरा डोरा बांधजै छै.

तठा उपरायंत गोठ सारू बाकरा मगायजै छै. रबारियांनै हुकम हुवै छै. परगना मांहां बाकरा दही ले आवो. सू रबारी ऊंठां आवै छै. किण भांतरा रबारी छै?

डीघा लांबा जुवान दीसता राजान,

बांकी मूंछां, राता नैण,

सासी डाढी, मोटा वैण,

जाडा पुंहचा लांबा हाथ,

भूखै सिंघनै घातै बाथ,

इण भांतरां रबारी ऊंठांनै झालै छै. सू ऊठ किण भांतरा छै? थापवी तळीरा, सुपवी नळीरा, नाळैरा गोडांरा, वीलफळ इरकीरा, हथाळियै ईडररा, ससा सेरी बगलांरा, घाट बाजोटरा, बाथमे कांधैरा, कसतूरिया पटांरा, कोरवं कानरा, टामकसै माथैरा, लोकवे नाकरा, तजियै होठरा, कवाडियां दांतां उधरै पीडरा, परघळां आसणांरा, कांगरै थूबरा, मोटै पूठैरा, छोटै पींडांरा, झामरै पूंछरा, भुवरियै रूंरा, चोळमै रंगरा, लांघियै सीह ज्यूं लंकां चढिया थका, भागा गाडा ज्यूं बठठाठ करता थका, वेस्या ज्यूं झाला करता थका, मातै हाथी ज्यूं हुंकारा करता थका. इसा ऊंठ झेकजै छै. हाथ फेरजै छै. पीतळरा गीरवांण रूपैरा कड़ा छै. ता मांहे मोहरा बोलचं मोहरा घातजै छै. लूबां कवडाळा वळैवड़ा घातजे छै. लाल सिलेहटीरां पडेछयां गाद्यां घातजै छै. ऊपरां पलाण मेलजै छै. सू किण भांतरा पलाण छै. सीसूरै काठरा, घणै लोह पीतळसूं जड़िया थका, रूपैरी फूलड़ी लागी छै. दांतरै कामसूं वणिया थका. वनातरा मढिया औ कुपीतळरा वाजणा पागड़ा, कड़ी कुहटै गाढी ओकढ़ा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सांतरा,पटाडांरा चोलुवा बणायां थकां, कागा कसणा कीयां थकां, चढ खड़िया छै.

गांव-गांव मांहां दहीरा कळस मेल्हजै छै. अेवड़ां मांहां बाकरा उठायजै छै.सू किण भांतरा बाकरा छै. रातड़ियै रिणारा, उजळां थळांरा,घणी गांगुवण हींगवणरा चरणहार, घणै काचर तूंबैरा चरणहार, गुवार चिड़ी-मोठरा खावणहार,भाहरै सादरा, कड़कती नळीरा, कबाड़िया दांतांरा, कमरसूंवा ऊचा, चिलकता मोरांरा, माडरै खेतरा, मादळियां पेटांरा, बालखासी वोकड़ा, खोड़ खील्हैरीरा चरिया फुरणियांरो बैसणहार, कूभटे-कंकेड़ रा सुरड़णहार,आयबेरा चरणहार. सो उहां ऊठां ऊपर मसकांरी पर दोय-दोय बांधजै छै. चलायां आया छै. राजानांसू आय मुजरो कियो छै.

बाकरांनूं वरको करणरै पगां अलवळिया मोट्यारांनू हुकम कीजै छै. सू असीलां मीरोहियां लेनै ऊठिया छै. मलकती वीखां भरै छै.जाणै पावासररो हंस मोती चुगण चालियो छै.दोय दोय बाकरांरी सिल्हाड़नै ठरका हुवै छै. तरवारांरा छणकार हुयनै रह्या छै. चौरंगांरी खाटखड़ हुयनै रही छै.कटोरां मांहे फूल लोजै छै. वाकरा होसनाकां वसू कीजै छै. देसौत रवां धोय हाथ ऊजळा कर विसायतां ऊपर विराजमान हुआ छै.

तठा उपरायंत हुकांरी होंस कीजै छै. चाकरांनै हुकम हुवौ छै. हुका तयार कीजै छै.किण भांतरा हुका छै?सोनैरा, रूपैरा, विदरी, खांखोळ ठाढा पाणीसूं भरजै छै. नींचै सुथरा विछायजै छै. ऊपर हुका मेल्हजै छै. नमचा सरद कीजै छै.

सू नमचा किण भांतरा छै? वीटीवा, चौगानिया, घणै वनातरा लपेटिया. सालूरा लपेटिया, बोयदारररा मढिया,चैतरा,कलाबूतरै कामरा,सोनै-रूपैरै वळांरा,रूपैरा कुलाबा लागा थका, सोनैरी टूटी, रूपैरी चिलम, चिलम-पोस छै.

तमाकू वणायजै छै. सू किण भांतरो तमाकू छै? सूरत नीपनो,तांबैरै रंगरो, जाडै पानरो.करड़ी डांवळीरो,सू इण भांतरो तमाकू.सू चिलमां भरजै छै. ऊपरां थोहररा आकरा कोयलांरा चिलमिया मेल्हजै छै. जाणै सहिजादैरा ताइत, बभूत लगायोड़ा जोगीसा छै. तिणारी होंस माणजै छै. मधरो-मधरो खांचजै छै.घरराटा हुयनै रह्या छै.जाणै आभो मधरो गाजै छै.घुंवैरो डोरो लाग रह्यो छै.सू जाणै आसाढरी खाली ओमां वहै छै.

तठा उपरायंत खसबोय मंगायजै छै, सू अतर किण भांतरो छै?गुलाबरो चनणरो फितनरो वुररो खसरो करणैरो, सू सीसी खुली छै. सीकां भर-भर काढजै छै,लगायजै छै,मुनहारां कीजै छै.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तठा उपरायंत पुराणै अगररो चिकायो सूंधो मंगायजै छै. सीसी खुलै छै. मोतीपुड़ैरी सीपरा प्यालां मैं घात हाजर कीजै छै. सूधो बगलां लगायजै छै.

तठा उपरायंत केसर मंगायजै छे. सू केसर किण भांतरी छै ? अेराकरी किसटवाडरी, कासमीरी, जाडो पांखड़ीरो वटवों डांडीरो. सू केसर चंदणारा सूकड़ासू जेलळमेररा ओरीसां में होसनाक जुवान घसै छै, ऊजळ रूपोटां में उतारजै छै. देसौतांरै मुंहडै आगै राखजै छै. तिणरा तिलक कीजै छै. आड़ा काढजै छै.

तठा उपरायंत बाकरा उणहीज दरखतासूं टांगणा कीजै छै. बाकरा खुल्है छै. जाणै रूईरी बरकी वौपारी खोली छै. मांस उतार उतार पासे राखजै छै. तरवाररा पटदळां माहिसूं कटार्यां मोहासू छुरी काढजै छै. मांस छुन-छुन पासै कीजै छै. मोरां पसवाड़ां पींडारो मांस देगचामें घातजै छै. हडोईरा मांस पासे चरुवामें घातजै छै.सीरा होसनाक सुधारै छै. दुयजै छै. गरम पाणीसूं धोयजै छै.चीर-चीर देगचांमें घातजै छै. ओझरा धोय-धोय मांहे मसालां मारियो मांस घात दवगर कीजै छै. फूल आंतां अवल धोयजै छै. ऊपरा दूसरी आंतांरी साटां गूंथजै छै. मसाला चरायजै छै. रजवो दहीरो दीजै छै.

तठा उपरायंत मुवर खोलजै छै. माटां उतारजै छै. सू कुण भांतरा दीसै छै ? जाणै रंगरेजरी हाट खुली छै. जुदो जुदो देगचांमें वणायजै छै.

तठा उपरायंत हिरण खुलै छै. सू जाणै धोबीरै घर कपड़ा मोकळा किया छै. मांस उतार-उतार दुकड़ियांमें घातजै छै. मिरच धाणा सूठ लूण हळदी वेसवार दीजै छै. दहीरो रजबो दीजै छै. लकड़री कठौती मैं सुदवक राखजै छै.

तठा उपरायंत खरगोस होसनाक वणावै छै. मछळांद मिटायजै छै. नान्हो छन देगचांमें घातजै छै. मांहै वेसबार हळद धाणा सूंठ मिरच जाइफळ तज लांग छै. सींधो लूण दही साथ दीजै घातजै छै. तिलोर तीतर करचानक मुरगाबी होसनाक वणावै छै. पोटा चीरजै छै. पेटाळजो चीरजै छै. मुहड़ैमें हींग भरजै छै. पेटमें जीरो भरजै छै. पांखां समेत देगचामें बाफजै छै.

तठा उपरायंत तीतररो मांस सिला ऊपर वांट पलीधो कीजै छै. दूसरो मांस न्यारो-न्यारो वणायजै छै, घणा मसाला दीजै छै. लवांरो मांस होसनाक सुधारै छै. बकरांरा फीफर गरम पाणीसू धोयजै छै. ललाई मिटायजे छै. पासे देगचांमें रांधजै छै. घणो घी वेसवांरां मसालांसूं वणायजै छै. सीकां पासै वणै छै. आडा डोरा घीरा दीजै छै. मांस रभतैरी खसवोय फूंठने रही छै. त्यांरी खसवोय लेवणनूं तेतीस कोड़ देवतागण गंधव होसां खाय रह्या छै. भांत-भांतरो मांस वणायजै छै. सेदैरा मांडा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



करजै छै. तैमें घणो नान्हो छुनियो मांस मंदी आंच कढाईमें तळजै छै. वेसवार मसाला घात उहां मांडांमें वातजै छै. तठा पछै मांडा गूंथ समोसा वणाय तळजै छै.

तठा उपरायंत सीरो-पूड़ी वणै छै. सोहिनै सारू देवजीभि जोयजै छै, विरंजै सारू चोखा मंगायजै छै, पुलाव सारू कमोद वीणजै छै. काठां गोहुवांरो आटो मंगायजै छै. सू नाळेर-गरा गोळवां रोटा वणायजै छै. मूंगांरी पातळी दाळ घणा मसालांसूं कीजै छै. तुवररी दाल छूटां चावळांरै पगां देगचांमें कीजै छै. छूटा चावळ रांधणरै पगां वासमती मंगायजै छै. पातळा रोटा जुदा ही वण रह्या छै. ठाम-ठाम देगचा-चरू चढ रह्या छै. मूंग जुदाहीज देगचेमें सीझै छै.

सू मूंग किण भांतरा छै ? मगरैरा नीपना, भरतरै खेतरा, हरियै रंगरा, चुंवळां जेवड़ा, इण भांतरा मूंग हाथांसूं रळकायजै छै. चुण-वीण कांकरा काढजै छै. सू मूंग होसनाक वणावै छै.

अनेक भांतरा छतीस भोजन वणै छै. निजारैरै पाणीसूं आटो गूंदजै छै. तैरा रोटा करजै छै. रोटा भोर पींडो कीजै छै. तठा पछै कढाहीमें तळजै छै. फेर भोर कूट छाण मांहे बूरो घातजै छै. घात चूरमो कुनवी वणायजै छै.

तठा पछै सिखरणरै पगां दही वांधो थो तैरी गळणी खुलै छै. मांहे बूरो घात अधोतररै रूमालसूं छाणजै छै. मसालां मांहे लांग इळायची मिरच घातजै छै. इण भांतरो सिखरण कर माटकी भरीजै छै.

हडोई ऊपर चीलकां कागला झड़ाफड़ करनै रह्या छै. तिका कागलानूं मलूकजादा कुंवर गिलोलांरी चोटां कर रह्या छै.

इणभांत तमासो करतां पाछलो चौघड़ियो आय रह्यो छै अमलांरो वखत हुवो छै. तद खिजमतगारांनै हुकम हुवो छै– सताबी सूं हर-संकरो तयार कीजै. सू हरसंकररी तयारी कीजै छै. सू हरसंकरो किण भांतरो छै. भांगसुर घोटियारी पींडी घणै मसालां समेतरी आणजै छै. गळिया अमल में भांग गाळजै छै. फेर दारुसूं उलटाय काढजै छै, रूमालसूं तिवारा छाणजै छै. तयार कर पीतळरा कळस भरीजै छै. मिरदारां आगै आण मेलजै छै. ऊजळा रूपोटांमें घात मुनहारांसूं सारा साथनै पायजै छै.

सू किसा-अेक सरदार जुवान छै ? पाकां पाकां वरियामांनूं, अजरायलांनूं, खींवरांनूं, डाणहुलां डाकियांनूं, करड़यंतांनूं, लोह घड़ां लाह पर डाहलांनूं, लोली देना, कटारी उगराड खाता, पचासां बोळावियां आधे आध वाढ उनरियां. जियांरा पांच-पांच हजार दाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पाटा-बंधाईरा पाटैदार खाय चुका छै. पांच-पांच सै हाथ कोरी पाटांनै लागी छै. इण भांतरा रजपूतांनै अमल सिरदार आपरा हाथां करावै छै. घणै चोजसूं मन लियां मनहारां कीजै छै. दिल हाथ लीजै छै, अमलां गहतंत हुवा छै. मातै हाथीज्यूं झोटा खाय रह्या छै. फुरणी वाज रही छै. कोसा लाल चिरमी हुवा छै. आंख्यां छिटक रही छै. मधरै-मधरै हुक्कांसूं तमाखू खायजै छै. गल्हां कीजै छै.

तठा उपरायंत सूळांगरियां होसनाकांनै हुकम हुवै छै-जाजमां कनारै सूळां तयार करो, सू हिरणांरा मगर पसवाड़ा पींड़ांसूं मांस उतारजै छै, छुर्यांसूं छुणजै छै. सू छुरी किण भांतरी छै? पेसकवज चकचकी रूमी विलायती म्यानां मांहां काढजै छै. तिकांरा दस्ता किण भांतरा छै? मोहरैरा गुरड़ोदगाररा संगरेसमरा माहीदांतरा रूपैरा सीपरा जड़िया तरै-तरैरां दसतांरीं भांत तिकां छुर्यांसूं मांस छुनजै छै. मसाला वेसवार लूण चरायजै छै. दहोरो रजबो दीजै छै. तरगसां मांहां सीकां काढजै छै. बेवड़ां ठीहां चाढजै छै. बीच खीसरी भरती दीजै छै.सू तसु वीढ सीकां ऊपर चाढजै छै. आड हाथ डोरा धीरा दीजै छै.इण भांत सूळां वणै छै.वडी देवगिरी थाळीमें उतारजै छै.

तठा उपरायंत देसोत फेरांसारा फिर आया छै.हाथ पग मिटीसूं उजळा कीजै छै. कुरळा कीजै छै. सिभ्या-वांदणारो वखत हुवो छै, वनाती आसण विछै छै. पीतलरा भरतरा धूपिया आगै आण मेलजै छै. गूगळ वतीसं मसालं सहित खिवै छै. खसबोई महक रही छै. देई-देवता खसबोय ले रह्या छै.बनातरी गऊ-मुखीमें हाथ घातियां आपरै इष्टरो ध्यान-सुमिरण कर परवारिया छै. जाजमां आय विराजै छै.

तठा उपरायंत मसालां हुई छै. दुसाखा हुवा छै. मसालचियां आण मुजरो कियो छै. नजर दौलत छड़ीदार कर रह्या छै. अमरावां सिरदारां खिजमतगारां सारां ही आण जुहार-मुजरो कियो छै. सारा ही मुंहडै आगै विराजमान हुवा छै.

तठा उपरायंत दारूरा घड़ा मगायजै छै. सू दारू किण भांतरो छै? अैराकरो वैराक संदलीरो कंदली फूलरो अतर बाती वभैधु वाधोर तिवारारो काढियो,बोदी बाड़में नाखियां जग उठै. बापरो पियो बेटो छिकै.असवाररो पियो प्यादो छिकै. राजा पीवै परजा छिकै. इण भांतरो पहलड़ो तोडेरो धातो, सू दारू केसरिया गुलाबियारां दाव दीजै छै. मुजरा कीजै छ. मूनहारां हुवै छै. मतवाळा हुयजै छै. उपरा उण भातरां सूळांरो थाळ वीचमें लाया छै. मोछण-ठुंगार हुय रह्यो छै. चोळबोळां हुयजै छै.

तठा उपरायंत हवलदारां अरज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कीवी छै – भुजाई तयार हुयी छै. आप फुरमायो छै – पांतोटा नाखो, बाजवट थाळ मंगावो. पांतोटा नाखिया छै, आगै बाजवट मेलिया छे. त्यां ऊपरै रुपैरा पीतळरा थाळ जळसूं खंखोळिया मेलिया छै. सिरदार पांतोटां आय बैठा छै. रहड़वां घातिया देगचा चरू आणजै छै. परीसारारो हुकम हुवो छै. सारै साथने सरब वसतरो परीसारो हुवै छै. पांच-पांच दस-दस इकलाळिया दांइदा भेळा बैठा छै. मुनहारां हुय रही छै. घणी फीनसताई चोज लियां आरोगजै छै. दारूरा दाव वीच-वीच लीजै छै. गोळियांरी खाटखड़ लागनै रही छै. मुसालांरो चानणो वणनै रह्यो छ, जाणै सरदरी पुरणवांसी खुली छै.

फेर हुकम हुवै छै. महताबांरो चांदणो हुवै. सू महिताबां पचास सव सांवठी ही लागी छै. जाणै जेठरो दो - पहरो खुलियो छै. इण भांतरै चांदणै में जीमणरो होंस माणजै छै. दारूसूं मतवाळा सिरदार लाहरता बोलै छै.

इण भांतसूं आरोग परवारिया छै. थाळ बारियां उठाया छै. हाथांरी चीकणाई उतारणरै पगां मूंगांरा थाळ मंगायजै छै. तिण मांहे हाथ मारजै छै. मसळ चीकणाई उतारजै छै.

तठा उपरायंत पाला झारा चळू करणरै पगां मंगायजै छै. चळ कीजै छै. कुरला कीजै छै. हाथां लोहणनूं रूमाल हाजर हुवा छै. हाथ पूंछजै छै.

इतरैमें तंबोळी वीड़ां आण हाजर किया छै. तिके पान किण भांतरा छै. मघी दखणी तोडैरी बाड़ीरा नीपता. तिकांरी बीड़ी बभै छै. मांहे कपूर चूनो काथो सोपारी घात वीड़ी सिरदारांनै दीजै छै. खुस वखत हुवै छै.

कवीस्वर आसीस दियै छै-अखै अन - दाता ! ध्रुव - मेर ज्यूं अटळ, चँद सूर पवन पाणी ज्यूं जुगे-जुग राज करंता

जुजठळ-वाळा जाग ज्यू,
अन घ्रत छिलै अपार ।
दिल घाई आसीस दे,
कवि जंपै जै - कार ।।
दस कूप समो वापी,
दस वापी समो सर ।
दसां सर - वरां समी किन्या,
अन - दान विसेखत ।।

इण भांतरी अनेक आसीस दियै छै. अैसो गहरै साद कविराव बोलै छै जाणै नगारै डंको हुवो कना भेर घाव हुवो. इण भांत कवराव आसीस देवै छै.

तठा उपरायंत अरगजो मंगायजै छै. सू अरगजो किण भांतरो छै ? चौखै चदगरा मुठिया गुलाबरै पाणीसूं रगडीजै छै. मांहे कपूर कसतूरी घातजै छै. केसररो रंग दीजै छै. सूंघै चमेलीरै

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मेलवणी दीजै छै. इण भांतरे अरगजो रूपेरा रूपोटां मांहि घात आण हाजर कीजै छै. अरगजो लगायजै छै.

तठा उपरायंत माळा फूलांरी छाबां आण हाजर कीजै छै. सू फूल कुण भांतरा छै? हजारा नौरंग तुररो मेहदी किलंगो सोनजुही इसकपेचो खेरी कोयल मालती चांदणी मुखमल परगस हवास गुलअनार दाऊदी केवड़ो. और ही अनेक भांतरा फूलांरी माळा किलंगी छड़ी सेहरा गूंथिया छै. सू सारै साथनै वकसजै छै. फूलांरा चोसरा घातजै छै. छड़ी हाथांमें विराज रही छै.

तठा उपरांयत कवरावांनै नवाजस हुवै छै. घोड़ा ऊठ माळा कड़ा सिर-पांव थिरमा वकसीजै छै.

तठा उपरांयत ओळगुवां वाजदारांनै इनाम दीजै छै. मालीनै मोहतादं दीजै छै. सारांहीरी आस-उमेद वर आणजै छै.

इत्तरैमें सात घड़ी वाजी छै. आठवींरो अमल छै. सिरदारां-रजपूतां अरज करायी छै—असवार हुयजै, साथ सारो अमलां गाढो सदोरो छै. तरां आप उठिया छै. मातै गजराज ज्यूं हींडता थका खवास-पासवाणांरै हाथ ऊपर हाथ दियां घूमता थका घोड़ै पधारै छ. ताहणी घोड़ो आण हाजर कियो छै. पागड़ै पग दियो छै. असवार हुवा छै. नगारै-भेर घाव हुवा छै सादियाणा वाजै छै. जाणे गाभां गाजै छै तुरी करनाळ रणसींगो वाज रह्या छै. सहनाय मांहे खंभायची हुय रही छै. साथ सारो अमलांसूं लल्हरतो थको वहै छै. वधाईदार आगै वधाइयां छै. सू वधाई आण दीवी छै.

तठा उपरांयत कामणी हरख मण उबटणो करै छै. पीठी सिनान करै छै. खसबो लगायजै छै. सीस गुथायजै छै. बाळ-बाळ मोती सारजै छै.

हाम काम लोचनी आंभेरी वीज.
भादुवैरी आकासरी परी. मोतियां सरा.

ऋत्यांरो भूंबखो. पून्यरै चंदसो मुख.
थाकी हंस. असील वंस.
बे पख सुध अैसी मुध.

सू आभरण पहरै छै. जरकसी साढी, अतलसी चरणो, केसरी अगिया, घणै विराणपुरैरी कोर पटै लागी थकां. सीस ऊपर हीरारो सोस-फूल बणायजै छै. मोतियांरी मांग भरजै छै. ललाड़ ऊपर अरधचंद्र विराज रह्यो छै. केसर सी खोळां कीजै छै. हींगळूरी बंदी दीजै छै. वांका लोयणामें अणियाळो ठास सजै छै. जड़ावरी लड़ी दांवणी झूंटणा झूंबरा अलोक वण रह्या छै. मोतियांरो हार चीढ पंच-लड़ी विराज रह्या छै. जड़ावरा बाजूबंध कांकण रतन-चौक आरसी वींटी विराज रही छै. वळै चूड़ो सोनैरी बंगड़ीदार विराजै छै. जाणै काळी घटामें वीज चमकै छै. कट-मेखळा जड़ाव री सोहे छै. सोनैरी पायल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पग-पान पोलरी अणखट पगां विराजै छै. आभूखण अैसा विराजमान हुवा छै जाणै मेर - गिर दोळी नखत - माळ विराज रही छै.

हाम काम लोचणी उलाळी आकास जावै.

चावळरो चौथो हैंसो खावै.

तंबोल विना खाधां आहारा विकार थावै.

माडी मोडो कटारीरी पड़चळी समावै.

उतररो वाव वाजै दखणनै नुळं.
चोवा रोवा जेतो बीचसूं भाज जावै.
इसी - इसी खोडस वरसांरी मुगधा मध्या प्रोढा रूपरो निध्यान.
जाका मलूक हाथ - पांव.
जंघा कदळीका ग्रभ.
बांह चंपारी डाळ.
सिंघ सी कमर.
कुच नारंगी.
नख लाल मलोला.
ग्रीवा मोर सी. बोली कोकल सी.
अधर प्रवाळी. दांत दाड़मी-कुळी.
नाक सुवारी चांच.
नाथरा मोती जाणै सुक्र ब्रिहमपत नारखा दीपै छै. जाणै लाल कंवळरी खुसबोय लेवण सेत भवर आया छै.
अध सा नेत्र. मीन जैसा चपळ.
भूंह जाणै इंद्र-धनख छै.
मूख पून्यूं रै चंद ज्यूं सौळहं कळा संपूरण छै.
पेट पींपळरो पान छै.
पासा माखणरी लोथ छै.
नितंव कटौरा सा छै.
नाभी-मंडळ गुलाबरो फूल सो छै.
साख्यातरो पदमणी.
कना रंभा सी. सरगरी उरवसी.

अैसी कामणी पोसाखां कर मोहला मांहे मैणवतीरी पील चोसां च्यारां खुणां जगाय पान चावै छै. चांदणीरा विछावणा खुल रह्या छै. ऊपर वनातरी कलावूती चांदणी रूपैरी चोभांसूं खड़ी की छै.

सोनारो पिलंग कसणां कसियो छै. सो कैंसोहेक सोभायमान दीसै छै? जाणै खीर-समुद्ररा झाग छै. ओसीसा गींडवा कैंसा विराजै छै? जाणै सीगीमल काछवा समुद्रमें केळ करै छै. इण भांत कामणी पोसाख विसायत कियां विराजै छै. जिसैमें असवारो आण उतरी छै. सारो साथ मुजरो-जुहार कर घरांनै पधारै छै. घोड़ा पायगा लगायजै छै. गंगेव नींबावत भीतर पधारै छै. खमा-खमा हुय रही छै. आण ढोलियै विराजमान हुवा छै. मुंहडं आगै पातरां पोसाख कर साज वाज लियां खड़ी छै. हुकम हुवो छै. राग-रंग हुवै छै. छह राग, तीस रागणी. मूरतवंत खड़ा हुवा छै. सात सुर तीन ग्रामरो भेद वणियो छै. भाव दिखावै छै.फेर दारूरी मुनहार राज-लोक करै छै.

तठा उपरायंत सारो राज-लोक मुजरो कर बोहड़ै छै. जिणरो जाको जै

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सू हजूर रहै छै. सुख कीजै छै, रस लीजै छै. केसरिया दुपटा ओढ सुखसूं पौढजै छै. परभात हुवौ छै. अमलांरी बायड़सूं आंख खुली छै. दरबार पधारै छै. साथ सारो मुजरै आवै छै. मुजरो लीजै छै. अमल कीजै छै. गोठ मजलस अमलांरा बखाण हुयनै रह्या छै. फेर ही कोई राजवी माणगर हुवै सू इण भांत ऐस माणज्यो.

नर सुर नाग न घट्टियां,
काळै केहरियांह ।
जळ पूरिय पखाण ज्यूं
गल्हां ऊबरियांह ।
भलियूं भलां, नरांह
लांबीयूं लांबां नरां ।
मुळवा मुवां पछांह
वातां रहिसी वोच उत ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# रामदास वेरावतरी आखडीरी वात

अथ राव रामदास वेरावतरी आखडीरी वात लिखते।

गांव दुधोड हुवो राव श्री रिडमलजी रे पुत्र हुवा. वेराजी रे पुत्र रामदासजी हुवा. गांव दुधोड़रे खेड़े थापना कीनी. वडो एक आखाड़सिध रजपुत हुवो. विरदधारी रजपुत हुवो. रामदास वेरावतने उगणीस विरुद हुवा. तिके विरदांरा नांव—

१. प्रथम पाखरीयां विना रहणो नहीं.
२. दुजो सबलां उथांपण
३. तीजो निबलां थांपण.
४. चोथो जाचक जण तरवर.
५. पांचमो परनारी सहोदर.
३. छठो चरु सुगाळ.
७. सातमो सुखी.
८. आठमो सरणाई सोहड.
९. नवमो विरद अणभंग.
१०. दसमो पंथरी बोर.
११. इग्यारमो वेरी बकारने मारे.
१२. बारमो पराइ लुगाइ माता समान.
१३. तेरमो अगंलीयां गंजण.
१४. चवदमो छतीस आवध ढावण.
१५ पनरमो आखाड़ सिध.
१६. सोलमो गजघटा भांजण.
१७. सतरमो आसेसरमने.
१८. अठारमो मनोहर.
१९. उगणीसमो लाखां परछभा पंचायण.

उगणीस विरद कया. हिवे चोरासी आखडी कहे छे–

१. च्यार लुगाइ उपरंत परणयारी आखडी.
२. रुपा सोनारा थाळ विना जीमणरी आखडी.
३. पोतळरा में जोमणरी आखडी.
४. मलयुद्ध कीयां विना रहवारी आखडी.
५. तलवार पकडवारी आखडी.
६. जेठीमधु विना दांतण करवारी आखडी.
७. खांडो खरसाणरो सेल सेर पनरेरो बाधणो, नहीं तो वीजो बांधवारी आखडी.
८. छतीस आवध चालतां सेर बीसरो आहार करने चालणो, नहीं तो आखडो.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



९. दिनमें पोहर सुवणो, उपरंत आखडी.
१०. रातरे पोर एक सुवणो उपरंत आखडी.
११. बाजरी भुंजाइमें वापरवारी आखडी.
१२. गोव भुंजाइ सगला साथने हुवा विना जीमणरी आखडो.
१३. सकर विना भुंजाइ करवारी आखडो.
१४. पाछलो रात हल उछरतां भुंजाइ कीयां विना रहवारी आखडी.
१५. होके कीयां विना रहवारी आखडी.
१६. सगला साथने अमल कसुंवो कीना विना रहवारी आखडी.
१७. कटारी बांधवारी आखडो.
१८. साप सापणी भेला पकडवारी आखडी.
१९. लुगाईरे नांवे वसा आभडवारी आखडी.
२०. सरसे घोड़े चढवारी आखडी.
२१. काछी घोड़े चढवारी आखडो.
२२. पालची चढवारी आखडी.
२३. कपूर विना पान चाबवारी आखडो.
२४. लुगाइसुं रातमें एक वार भोग करणो, उपरंत करवारी आखडी.
२५. किसतुरी विना रहवारी आखडी.
२६. फटा कपडा सींवणरी आखडो.
२७. साथने वल हुवा विनां जीमणरी आखडी.
२८. वावड़ीरो पांणी पोवणरी आखडी.
२९. वेहती नदीरो पांणी पीवणरी आखडी.
३०. भूखारो मुंहडो देखणरी आखडी.
३१. दूधको वोलणरी आखडी.
३२. मारग हालतां टलवारी आखडी.
३३. अऊतरो धन लेवारी आखडी.
३४. खटकनसे माल लेवारी आखडी.
३५. गांव फिलसो देवारी आखडी.
३६. सीव मांहसुं बलद गांवमें लावारी आखडी.
३७. विखे विमांण गांव छांडवारी आखडी.
३८. काम पडीयां वगतर टोप पेरवारी आखडी.
३९. केसरीया वागा विना पेरवारी आखडी.
४०. दांतरा चुडा विना वडारण राखणरो आखडी.
४१. घुडवेल वेसवारी आखडी.
४२. गांयारी घासमारी लेवारी आखडी.
४३. चोर दीठां मेलणरी आखडी.
४४. कांमरे माथे रजपूत निकले तिणरो मुढो देखणरी आखडी.
४५. रजपूतरो रोजगार राखणरो आखडी.
४६. सरणे आयां कांढ देणरी आखडी
४७. रजपूतरो मुकातो लेणरी आखडी.
४८. चोहटे घोडो नखुरी करावणरी आखडी.
४९. पिणघट ऊभा रेहणरो आखडी.
५०. सोमवार विना खिजमत करावणरी आखडी.
५१. बारे वरस तांइ वेटो कंवारो राखणो उपरंत राखवारी आखडी.
५२. तुरवने बेटी देणरी आखडी.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



५३. वेर वाढ विना वाढीया रहवारी आखडी.

५४. कूड बोलणरी आखडी.

५५. चडचां ऊभां जुत पिहरणरी आखडी.

५६. सांढोयां दीठां मेलवारी आखड़ी,

५७. ढोल वाजीयां ऊभा रेणरी आखडी.

५८. सातसे वेरी माथे राखीयां विना रहवारी आखडी.

५९. वांसे खेद दीठां जायगासुं खिसवारी आखडी.

६०. दोनां दलां विचे पग चतारदारीं आखडी.

६१. रोला में निकलवारी आखडी.

६२. भांजे तिण लारे जावारी आखडी.

६३. आगलाने विना वकरीयां लोह करवारी आखडी.

६४. लोहडा विना मारवारी आखडी.

६५. एक घाव विना लोह करवारा आखडी.

६६. माल खाय जाय तिणने मारीयां विना रेहणेरी आखडी.

६७. धोला केल दीठां जीवणरी आखडी.

६८. पोतारो मुढो दीठां जीवणरी आखडी.

६९. घाडो आणीयां वासी राखणरी आखडी.

७०. मेवासीयांरा गांव मारीयां विना रहवारी आखडी.

७१. देसरा धणीने काम पडे तरे ऊभा रेणरी आखडी.

७२. सूरजरो मुंढो दीठा विना जीमणरी आखडी.

७३. मुंहडासुं किणने गाल काढणरी आखडी.

७४. चारण भाटने विना काम विदोखणरी आखडी.

७५. लुगाइने विना खुंन मारवारी आखडी.

७६. मोज देने पाछी लेणरी आखडी.

७७. जीमतां भाणे मांहे कालो नीकले तो भेटो मेलणरी आखडी.

७८. रुपीयांरो व्याज लेवारी आखडी.

७९. धन सचवारी आखडी.

८०. तमाखु पीवणरो आखडी.

८१. जुवा रमणरी आखडी.

८२. विना चुप हसवारी आखडी.

८३. निबलाने मारणरी आखडी.

८४. आपसुं चढतो हुवे तिणसुं लडवारी आखडी.

इतरी आखडी रामदास वेरावत आखाढ सिध रजपुत सुरवीर दातार तिण इसडी आखडी पाली गांव दुधोड़रा दरवार आगे सिला उगणीस गज लांवी छे, आठ गज चवडी छे, तिण ऊपर रामदासजी वेसता तिकी सिला पडी छे. तिण ऊपरे रजपुत वेसे तिको इसडी आखडी पाले, तिको इज वेसे नहीं तो तलाक छे. गांवरो धणी पाटवीने छे. और लोक नचंत वेठो व्यापारी नचिंत वेनो देसोतने तलाव छे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



हिवे मीयां बुढण जालोर राज करे, पांच हजारी रो मनसोवो छे, साथ सरांजाम वीजो घणे छे. अमल धरती में निपट करड़ो छे. वडी बढेरो करण-हार छे. तिणरै सांढीयां हजार सात छे. तिको गांव देवु रहे छे. एक समे मीयां बुढण महेचांरे परणीयो छे. तिको उणरो नांम बाइ लाडु छे. उणसुं मीयां बुढण चोपड रमे छे. सो बाइ लाडु रे ड़ांण पड़े नहीं, तरे बाइ पासो वावती कयो पासा तोने रामदास वेरावतरी आण छे. पोबारा पडीया तरे लाडुबाइरी जीत हुई।

तरे मीयां बुढण पुछीयो–रामदास वेरावत कुण छे? कठे रहे छे? तरे महेची कयो– रामदास वेरावत माहरे भाइ छे. बडो रजपुत छे. तिणने चोरासी आखडी छे, उगणीस विरद छे, बडो सतधारी रजपुत छे, माहा सूरवीर छे, वडो आखाडसिध रजपुत छ.

तरे मीयां बुढण कयो–अेसा तुमारा भाइ हे तो हमारी सांढीयां लेवेगा? तरे महेची कयो– हमारा भाइ ऐसा ही हे सो तुमारी सांढीयां लेवेगा. मींयां कयो-खुब हम भी देखेंगे। हमारी सांढीयां लेवेगा तो बडो रजपुत विरद धारी जांणेंगे. तिण ऊपर महेची कयो– तुमारी सांढीयां ले जाय ता तुम रजपुत जाणजो.

तरे मीयां बुढण कयो–हमारी सांढीयां लेवेगा तरे हम तुमसे मुंह बोलेंगे. तरे महेची कयो–मीयांजी हमारा भाइ सांढीयां लेवेगा.

चोपड़ रमतां इसा सामाचार मीयां रे महेची रे हुवा. तरे महेची चारण घर रो बुलायने रामदास जी रे कने मेलीयो ने कयो, इसो तरे– विरदा-यने कहेजो बाइ लाडुरे ने मीयां बुढणरे चोपड़ रमंता इसीं बतलावण हुइ छे, सो जाणसुं राज मोने मोहरे कांचली दीनो अमर कांचली दीवी. ए करसुं मारो बोल ऊमर आंणजो. इसी तरे कागद लिख मेलियो, चारण साथे. सो कागद वांचने रामदास जी तिणहीज वीरीयां हेरु मेलिया. अने कयो अनतो सांढीयां लीयां वसां. चारण ने घोड़ो सिरपाव दे ने सीख दोनी पधारो बाइने जुहार कहेजो,

अबे पाछासुं दुघोडसु तीनसे असवांरां सुं रामदासजी चढीया. असवारां पुरी सिले करने चढीया ए कांम प्यालारो पीवणहार छे कालीरो कलस छे, जाता पवन सुं लडे, जीव ऊपर उठा फिरे, तिमणे पग चांतरे नहीं, पुंठ फेरे नहीं. इण भांतरा असवार चढीया तिके जायने गांव देवुसुं सांढीयां लीवी. पछे रवारी ने कयो–सात हजार सांढीयां तिण घणी ताती सांढ हुवे तिण ऊपरे चढने मीयां बुढण ने जायने कहजो रामदास वेरा-वत सांढीयां लांवी. गांव दुधोड़रो धणी लाडुबाइरो भाइ तिण सांढीयां लीवी. रवारी आयने कयो मीयांने वेगा चढो. तरे मीयांने समाचार हुवा तरे मीयां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



फोजरो घमसांण करने रामदासजी ऊपर चढोयां. रामदासजी ने आखडो छे. खेह दीठां खिसणो नही. सांढ पिण एक व्याइ सो सांढ ऊभी छोडने जांणरी आखडी. तरे तोडीयाने पखालने सांड ऊपरे घाल लियो ने आगी खडीया. इतरे खेह उडतो दीठी, तरे रामदासजी ऊभा रया. इतरे मीयां राइका बाहदर दोय आण पोहचा. तरे इका बोलीया अबे खडे रहो, कहां जावोगे. तरे रामदासजी सोले असवारांसु ऊभा रया. बाजा सारा साथने साख दीवी. कयो सांढीयां ले जावो. आप रामदासजी ऊभा रया. इतरे इका आण पोहता. तरे रामदासजा वकारीया मीयां भलां आया, स्यावास थांने. अवे वाहो. तरे इका बहादरां कयो रामदास तुम वाहो. तरे रामदासजी बोलिया सिरदारां इण इकाने मां पेहली लोह करो मती. तरे रामदासजी कयो तिको कबुल कीयो. इतरे इको घोडा हजार पांचसु चढीयो आयो. हाथ में सांग मण एकरी लीयां थकां आंण पोहतो. सो एकण कांनी हजार पांच फोज, एकण कानी एक इको इसो प्राक्रमी पोरस छे. सावंतरूपी छे. इसा इका प्रोहता तरे रामदासजी बोलीया इका बाह करो. थांहरो धन लीधो छे, सो पेहली तुं वाह. तरे इको मण दोयरी सांग वाही. सो सांग रामदासजी ढालसु ओझाटसु टाळ दीधी. पछे रामदासजी वरछी फेरने बुडीरी दीधी इकारे छातीमें. सो सास जातो रयो. तरे बीजा इकारे ने रामदासजीरे वतलावण हुइ. सो इको सिले ठोय करने आयो छे. सो रामदासजी आवतारे बरछी वाही. सो इको घोडो फुटने बरछी जाती थकी धरतीमे रुपी. दोइ इका मारने रामदासजी आघा खडीया. पाछासु मीयांरी असवारी आइ. फोज हजार पांच सात लारे छे. सो मीयां इकां देखने इका कने आंया. आगे देखे तो इकारे लोह कोइ नहो ने भात समान ऊभा छे. बरछींसु पोया छे. इसी तरे मीयां वुढण लारासु देखने फोजने कयो इण रजपूतसु कोइ हाथ जोडने लडेगा. तब साथरी तो सारारी इका देखने निरासां हुइ. रामदासजी ने किण ही आसंग्या नही. तरे मीयां पाछा वालीया. रामदासजी सांढीयां ले ने दुघोड़ आया. इणाने तो आखडो छे, धाडो बासी राखणो नही. सांढीयां रजपुतांने वेंच दीनी, चारण भाट खटवनांने वेंच दीनी. देतां देतां सुरज आथमाण लागो. रावळा में रसोडो तयार हुवा. इतरे चाकरां आंणने कयो रसोडे पधारो. रामदासजी पुछीयो सांढीयां लारे कितरीक छे, तरे रजपुतां प्रधांनां कयो सांढीयां हजार दोय रही छे. तरे रामदासजी ओडांने बुलायने कयो सांढीयां ल्यो अने तलाव खोदो. तरे सांढीयां ओढांने दीनी. पछे सारा साथसु रसोडे पधारीया. सांढीयांरा भावरो दुहो.

संवत पनरेसे चोपने,
आंणी झोक दरक।
तलाव खणायो वेरा तणे,
जांणे लोक खलक ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



बात - मियां बुढण पाछो जालोर आयो. बीबी महेचोसुं मिलियो, महेची समाचार पुछीयो, मीयांजो हमारा भाइरा हाथ दीठा. मीयांजी बोलिया अब तुमारा भाइ कनासुं सांढीयां मंगाय दो. तब महैची बोली मीयांजी कछु भोला हो? उणने आखडी छे, घाडो आंणीयो वासी राखणो नही, सांढीयां तुरत वेच दीनी, उणहीज वेलां. इसो सुणने मीयां सांढीयांरी आसा छोडी. पछे रामदासजी वरस २५ (?) में हुवा तरे पातसाहरी फोजसुं लडने कांम आया।

॥ इति उगणीस विरुदवारी रामदास वेरावतरी चोरासी आखडी तिके संपूर्ण ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# राजान राउतरो वात – वणाव

परमेसर प्रणमूं प्रथम देवां सिरहर देव ।
सारदा गुणपति समरि सत-गुरचो करि सेव ।।१।।
दिग्यौ सेत वरदान तू परमेसरि प्रसताव ।
राजानांरी रस-कथा विधि कहि वात वणाव ।।२।।

अथ वात

ॐकार महादेव परमातमा परम सिव परम सकति अचळेसर अचळ आसण कियौ. तिण थांनकरी ठौड़ नंदीगिर हेमाचळरौ बेटौ दूसरौ मेर गिर अढार गिररौ राजा आबू गिरंद कहीजै. तिणरै बैसणै ऊपरि ईसवररा अवतार महाराजा राजेसर राज करै. तिण राजेसर राजारै महारांणी महामाया पटराणी तिणरा पेटरौ नीपनौ कुंअर गुर पाटपति कुंअर श्री राजान कुंअर-पदौ भोगवै. कामदेवरी मूरति नव कोटी मुरधररा पति नरेस अनेक विरद विराजमान ।

अथ काव्य

भाले भाग्य-कला मुखे ससिकला लक्ष्मी-कला नेत्रयोः ।
दाने देव कला भुजे जय - कला जुद्धे प्रतिज्ञा - कला ।।
भोगे कोक-कला बले गुण-कला चिंतामणौ सा कला ।
काव्ये कीर्ति-कला तव प्रतिदिनं क्षोणीपते राजते ।।

वात

खट-त्रीस वंस राजकुळी सिरोमणि सुरज वंसी राजान मारवाड़िरा नव कोटरी ठकुराई जळाबोळ राज-पदवी भोगवै. राज-पाट सिंघासण छत्र डंड माथै सेत चामर ढुळावीजै छै. सेत वानां सेत नीसाण सेत झंझा विराजमान हुआ छै. तिण राजांन राजाउतरा वात वणाव वखाणीजै छै ।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति तिण राजांनरी राजवट च्यार ठिकाणै

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



विराजमान दीसै छै. पांच कोट पटं किया छै. राजथान नंदीगिर सिवपुरी मंडोवर अजमेर जालिधर सारीखा पाइतख तवणीजं छ. गदाल सहर गढ कोट बाजार पौळि पगार वाग वावड़ी वगीचा कूआ सरवरांरी वड़ां पींपळारो छिबि सहररी पाखती विराजि नै रही छै. पाखती अरटांरी झींगड़ि चींगरड़ि पाड़ नै रही छै. ढहारो खटाको लागिनै रहिओ छै. पाखती नीळ वझि नै रही छे।

तठां उपरांति करि नै राजान सिलामति गढ कोट चौफेर कांगुरा लागा थका विराजै छै. जाणे आकास लोक गिलणनूं दांत दिया छै. ऊंचो निजरि करि जोइजै तौ माथारौ मुगट खड़हड़ै. तिण कोटरी खाही ऊंडी द्रह नागद्रही सारीखी. जळ छैल पाताळरो जड़ांसूं लागि नै रही छै. तिण गढ माहे वावड़ी कूआ तळाव जळ बहळ धान घ्रित तेल लूण खंड इधण असल कपड़ो घणो अपार संचो किओ छै. कोट भुरजांरा कोसीस नै धमळहर धमळागिर पहाड़ ज्यौं वादळांरा कीरण सारीखा ऊजळा सीकोट सौं निजरि आवै छै. नगररा घर कोट बराबरि ऊंचा विराजि नै रहिआ छै।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति नगर मांहे ऊंचा देव सिव जैनरा देहरा मढ विराजि नै रहिआ छे. तांहरा डंड-कळस धजा पताखा आसमानसूं वातां करै छै. देहरा मांहे कथा कीरतन नाठक पड़िनं रहिआ छै. धूप-दीप कीजै छै. आरती उतारीजै छै. केसरि-चंदण चरचीजै छै. अगरउ खेवीजै छे. पंच सबदा वाजि रहिआ छै. झालरियां झणकार हुइ नै रहिआ छै।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति देवळांरी पाखती धरमसाळा दानसाळा मंडीजै छै. मांहे जोगेसर पवनरा साझणहार त्रिकुटीरा चडावणहार धूम्र पानरा करणहार उरधबाहू ठाढेसरो दिगंबर सेतंबर निरंजनी आकास-मुनी।

दूहौ

ब्राह्मण सेतंबर वळे, जोगी जंगम जाणि।
दान सन्यासी सोफिया, खट दरसण वाखाणि॥

गोदड़ कानफाड़ जोगी जंगम सोफी संन्यासी अविधूत पंचागनिरा झूलणहार अलमसत फकीर जिके संसारनूं भागा थका फिरै. जड़भरत अतीत सम-रसरा छाकिआ राम-रस प्यालैरा पीअणहार दया-धरमरा पाळणहार करम-जाळरा भोड़णहार तापस अस्टांग जोगरा साझणहार सांत-रस मांहे गळताण होइ नै रहिआ छै।

तठा उपरांत करि राजान सलामति तिण सहर मांहे च्यार वरण, च्यार आश्रम अढारै वरण, खट दरसण, परम-ग्यान-पुरायण धरम धरमरा पाळणहार दया-धरमरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



राखणहार देह-साझनारा करणहार वैठा तप करै छै. अनेक सत्रूकार सत धरमरा राखणहार खैराइतांरा करणहार धजबंधी कोड़ीधज लाखेसरी दौलतिवंत चौरंग लिखमीरा लाडिला लोक वडा वापारी वाहवारिया सोदागर वहराम संद साहूकार घणा सुख चैनसूं वसै छै।

तठा उपरांत करि राजान सिलामति तिण सहिर मांहे छत्रीस पवन जाति रहै छै. तिण सहिर मांहे बाजार चौहटा मंडिया छै. सोना रूपा जवहर जड़ाव कपड़ा पट-कूल रेसम पसमरा बाब भांति भांति विसाईजै छै।

तठा उपरांति करि नै सराफ बजाज जोंहरी दलाल भांति भांतिरा बाब भांति भांतिरा पदारथ भांति भांतिरी अमोलिक वसतांसूं मोलावीजै छै. हटवाड़ैरी भीड़ हुइ नै रही छै. चौहटै मांहे रग तंबोलरो कीच मचि नै रहिओ छै।

तठा उपरांति करि नै भोगिआ भंमर लंजा छयल हुसनाक जुवान निजरबाज वाजार मांहै ऊभा जोहां खाए छै. चोहटै मांहै नगर-नायिका वेस्या लाख लाखरी लहण-हार सोलै सिणगार ठवियां थकां पूलांरा चौसरा पैहरियां थकां टोय अणियालां काजळ ठांसियां थकां वांका नैणांरी झाक नांखती पायलैरै ठमकैसूं घूघरैरै घमकैसूं विछीयांरै छमकैसूं रमझोळ करतो अगूठा मोड़ती नखरा करती बाजारि चाली जाए छै. निजरांरा झड़ाका लागां थकां जुवानां छयल्लांरा मन गरेद बाज करै छै. भांति भांतिरी वेस, रसाळ, भांति भांतिरा खेल मंडि नै रहिया छै. भांति भांतिरा तमासा लागि नै रहिआ छै. इण भांतिरा मारू सहर मंडोवर सिवपुरी बिराजमान हूआ छै. कनां इंदपुरी-सी निजरि आवै छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति इण भांतरा सिद्ध खेत गिरंद ऊपरै राज पदवी राजसरा सुख कुंअरपदो भोगवीजै छै. तिण राजान राजकुमार मारूनूं ४ ठौड़रा नाळेर आया छै. एकलंग चित्रौड़ गढ़रा धणीरा. लुद्रपुर पाटणरा, घाट सहररा, पुंगल नगररा डोला आइ पुहकर ऊपर उतरिया छै अढ़ार दोष रहित गोधूळिक साहो सोभाड़ियो छ।

तठा उपरांत करि नै राजांन कुमाररो जांन घणै आडंबरसूं हाथी घाड़ा वहिल सुखासण रथ पायकरा वणाव कियां थकां बघेल जांनियांरे साथ लियां घणैं मोती जड़ाव जरकसीसूं लड़ालंब हुआ छै. घणैं सोंधे घणी केसरि अगरचैसूं गरकाव कियां थकां घोड़ां रजपूतांरै घूमरैसूं आइ तोरण बांदिओ छै. तठै आगै बखांणी तिण भांतिरीं रायजादी गोरंगीआं सोलसिणगार ठवियां वाळ वाळ मोती सारियां तोरण कळस वदावै छै. मोतियै वधावै छै. प्रांखै छै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति नीला आला वंस केलि खंभ सूंना गलिआ थका कांचनांरा कळसांरी वेह करि नैं चौंरी पधराया छै. हथळेवो जोड़ि छेहड़ा बांधिया छै. सु जांणै मन बांधिया छै. जिके वेद सूरति ब्राह्मण छै सु अरणो अगनि लगाड़ि होम करै छै. घणौ गो-घृत नै कपूररी आहूति दीजै छै. वेद ध्वनि कीजै छै. दूलह नैं दूलहनी सेहरा बांधिआ पूरव साहमा बेसाणीआ छै. सेहरा दीजे छै. चार फेरा फेरीजै छै. वीमाह कीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति अनेक राग रंग वधाई वांटीजै छै. राय अंगण घोलहरे गेहणीं घणां मंगलाचार गीत नाद खंभाइची गावै छै. छत्रीस वाजां पंच सबदा वाजै छै. तांहरा नांम तंती १ वीणा २ किनरी ३ तंबूरौ ४ नीसांण ५ एतो पांच सबदा आगै छत्रीस वाजांरा नाम कहै छै. ढोल ६ दमामा ७ भेरि ८ भूंगलि ९ नफेरि १० मदन भेरि ११ सुरणाई १२ झांझ १३ मंजोरा १४ मादल १५ श्रीमंडल १६ डफ १७ ऊड़क १७ रंग तंग १९ मुहचंग २० ताल २१ कसाल २२ तंबूर २३ मुरली २४ रिणतूर २५ संख २६ ढोलक २७ राय गिड़ गड़ी २८ रवाज २९ रावण हथो ३० पूंगी ३१ अलगचौ ३२ झालरि ३३ पिनांक ३४ बरघू ३५ सारंगी ३६ करनाल ३६ इण भांतिसूं छत्रीस वाजा वाजि रहिआ छै. अनेक मंगलाचार हुइ रहिआ छै. अनेक दांन सनमांन दीजै छै. अनेक रंग बधामणां कीजै छै. मोतिअैं चौक पूरीजै छै. वीमाह पूरो कियौ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति वीमाहरै समागम प्रथम दूलह दूलहणी मिलणरौ कोड रंग-रळी बधांमण कीजै छै. रंग महलें धवळहरैं पधरावीजै छै. छेहडेरी राति गांठि छूटी छै. सु जाणैं मनरी गांठि छूटी छै. राजांन कुमार घणैं हरखसूं आणंदसूं उछाहसूं नवल रंग, नवल नेह, नवल नारि, नवल नाह प्रथम समागम सुख सेझरी वात उहां हीज जांणी पिण बीजौ उण सुख उण वातां कुण जांणै. दूलह नैं दूलहणीरी जोड़ी देखि देखि नैं लोक वार - वार वखांणै छै. कहै छै गंगाजी मांहै ऊंड़ै जल पैसि तपस्या करि ईश्वर गवरिजा पूजिया छै. वळे हेमाळै गळिआं कासी करवत लिआं अंगरी असत्री अंगरो भरतार पाईजै छै. सु यां हेलमा तपायो छै।

तठा उपरांति करिनै राजांन सिलामति पनरह दिन तांई जान राखि घणी मनहारि करि भांतिगारी भगति जुगति महिमानी करि सतरह भ्रख भोजनरा वणाव कीजै छै. दोइ भांतिरा अंन १ वायौ २ अड़क, तीन भांतिरा मांस १ जळजीव. २ थळजीव, ३ आकास उड़ण जीव, पांच भांतिरा सालणा १ तरकारी. २ मूलकंद, ३ डाल कूंपल, ४ पान-पत्र ५ फूल-फळी, पंड छालि, भांति भांति गोरस १ दूध, २ दही, ३ मिठाई, ४ लूण, ५ तेल, ६ हींग,७ वेसवार, ८ चरकाई. इण भांतिरा सत्तर भ्रख-भोजन कहीजै अढारमो ठंढो पांणी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कवित्त

दुविधि अंन पल त्रिधा साग पंच मांस धारण ।
गो-रस जुग विधि गिणित मिष्ट गति ए कवि चारण ।।
लूंण तेल साख हींग सात दस भोजन भत्तं ।
तिख्य अनंत गति रचै गान कुण गिणै कवित्तं ।।
संजोग एक अनेक सुचि षट रस षट विधि नेत सुचि ।
सुह विधि रसोइ समुझै भता सुपह अरौगै अन्न रुचि ।।१।।

तठां उपरांति करि नै राजान सिलामति भांति भांतिरा भोजन जाति जातिरा मांस जाति जातिरा पकवांन जिलेबी, लाडू, खाजा, मोतीचूर, सीरो, पूरी, सावूणी खेरां, पंचामृत ।

दूहा

मीठा मोळा रस मिलै, खाटा खारा जांणि ।
कडुआ दान कसाइला, ए षट रस वाखाण ।।

भांति भांतिरा पकवान घणैं सुरैं घीरा झारिअल मुहढ़ै मांहै मेलियां गलि जावै मुंहढामें मेलियां छाती ठाढ़ी हुवै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति भांति भांतिरा अबरस, सिखरण, आंबा, नींबू, सूरण, आदा. भांति भांतिरा आचार अथांणां. भांति भांतिरी तरकारी. गोरस. मीठा मोळा खारा खाटा कडुआ कसाइला भांति भांतिरा षट रस सवाद लीजै छै. ऊपर कपूर वासिया गगोदकरा चळू कीजै छै ।

तठा उपरांति राजान सिलामति घणां घोड़ा हाथो सुखासण रथ पायक जवहर हीरा मोती माणक सोना रूपा दइजें दीजै छै. घणां दास दासी दे नें घरां सांमा ओझणा पधरावीजै छै. धरतीरो इंदु होआ तिण भांति जग छेल कर नें घणैं सोनें रूपैरो मेह होइ नें तूठो छे. कवेसरां गुणी जणां मंगत जणांनु घणा दान दे कोड पसाउ, लाख पसाउ, करि हाथी करह केकांणरा महा पसाउ करि जसरा जांगी घुराइ नै वलियौ. आगे नीली झांप लीआं वधाईदार दोड़िआ छै. नगर मांहै ओछव वधावीजै छै. मंगल गावीजै छै. गळिआं गळिआं फूल विखरीजै छै ।

तठा उपरांति राजांन सिलामति तोरण वांधीजै छै. घणां गज डंबर पेसारा करि मंडोवर महलें पधराया छै. सुभ दिन सुभ घड़ी सुभ मुहरत सुभ वारं सुभ लगन सुभ वेळा मांहि आंणि पाट सिंघासण विराजमान किया छै. माथा ऊपर सेत छत्र विराजै छै. सेत चमर ढुळै छै ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तठा उपरांति राजांन सिलामति तिण राजांन कुंअर राजाउत मारू ठाकररै च्यार पटरांणी छै. नाम सिणगार सुंदरी १, सोभाग सुंदरी २, सरूप सुंदरी ३, मदन सुंदरी ४. साख्यात देवांगनां पदमणी विचित्र सुलखणी चोसठ कलारी जाणणहार विनैनी करणहार लिखमी पारवतो गंगा सरसतीरौ अवतार बारह आभूषन विराजमान हुआ छै. आठे पोहर सोळ सिणगार किआ रहै छै. किण भांतरा आभूषण किण भांतरा सिणगार ।

काव्यं

लज्जा मान कटाक्ष लोचन कला अल्प स्थितो जल्पनी ।
रति भय अभया सु प्रेम रसा गय हंस बुल्लाइन ।।
धैर्य च सुचक्षमा सुचित्त हरखं गुह्य स्थलं शोभनं ।
सील ग्यान सुनीति नित्य तन सा षट् दूण आभूषणं ।।१।।

राजांन कुमार सौळै सिणगार विराजमान हुआ छै. सु प्रथम मरदरा सौळै सिणगार तिके किण भांतिरा कहीजै ।

काव्यं

क्षौरं मंजन चारु-चीर तिलकं गत्रं सुगंधार्च्चनं ।
कर्णे कुंडल मुद्रिका च मुकुटं पादौपि चर्मोचनं ।।
हस्ते खड्ग पटंबरं कटि छुरी विद्या विनै ता मुखं ।
तांबूलं मति सीलवंत चतुरं शृंगारव षोडस ।।२।।

वीजा स्त्रीरा सोळै सिणगार तिके किण भांतरा कहीजै छै ।

काव्यं

आदौ मंजन चारु-चीर तिलकं नेत्रांजनं कुंडलं ।
नासा मौक्तिक पुष्प-हार कुरलं भ्रकार कुन्नूपरं ।।
अंगे चंदन लेपनं कुच मणी क्षुद्रावली घंटिका ।
तांबूलं कर कंकणं चतुरता शृंगारकं षोडशः ।।३।।

इण भांतिरा सोळं सिणगार किआं थकां रहै छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामती तांह अतेउरी आगै ४ बडारणां सहेलिआं रहै छै. १ अनंगमंजरी, २ मदनमंजरी, ३ तनमंजरी, ४ पटुमंजरी. तांह बडारणां सहेलिआं आगै ४ पात्रां सिणगारणी खवास्यां रहै छै. १ गुणमाला, २ फूलमाला ३ विर्जमाला, ४ दीपमाला. तिकां सिंगारणी खवास्यां आगै ४ विलासनी दासी रहै छै.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



केतकी १, चंपकली २, रामकली ३, कामकली ४. त्यां दासिआं आगै सोळै सोळै छोकरी खिजमतदार रहै छै. इण भांतिरा चार राजलोकरा च्यार महलां आगै ४ नाजर खोजा रहै छै. मोहनराइ १, वसंतराइ २, सामरग ३, रामरग ४. महलांरी दोढ़ीरी जाबतां राखै छै।

तठा उपरांति राजांन सिलामति रितिराज वसंत वैसाख मासरा मंगलाचार विमांहरा सुख विलास करतां सरद रित आई छै. आसोज मास आइ संप्रापति हूअै छै. इतरौ गढ़ कोठ चोहटा नगर वीमाहरा मगलाच्यार दान प्रथम प्रस्ताव रा वात वणाव विचार गढ़ कोट नगर वीमाह वात वणावरो प्रथम परिछेद पूरौ हुओ छै।

*

तठा उपरांति राजांन सिलामति षट रितरा वखांण कीजै छै. प्रथम सरद रिति वखाणीजै छै. आसोज लागै छै. पितर पख पूजोजै छै. धरतीरौ मैल कादमजल पखाळ निरमळौ कियौ छै. सरोवरांरा जळ निरमळ हूआ छै. कमल पोइणी फूलि रहिआ छै. सरगरा देवांनैं पितरांनूं मात-लोक प्यारो लागै छै. कामधेनु गायां छै सु धरतीरो पाकी औषधीरा रस चरै छै. दूधांरा सवाद अमृत सरिखा लागै छै. सु कढ़ीरा बड़िआंरा गाटक लीजै छै. पंचामृतरा सवाद लीजै छै।

तठा उपरांति करि नै नवरात होम ज्याग हुई नै रहिया छै. नव दुरगारा नौरतां दसराहौ पूजीजै छै. दसराहैरा वणाव भांति भांतिरा सिणगारीज छै, छत्र डड सिंघासण घोड़ा हाथी दरबाररा वणाव गहमह हुइ नैं रहिआ छै. वाही आळ काढ़ीजै छै. भैंसा ऊपरे तरवारियांरा वाड त्रूटि नैं रहिया छै. खाजरू नीझोड़ीजै छै. जिके दिगपाल रजपूत सामंत अजांनबाह ठाकुर अड़ाबोड़ दरबारे आइ खड़ा रहिआ छै. दरबार दुलीचा बिछाइजै छै. विछात वणि नैं रही छै. दरबार वणियौ छै. हाथी घोड़ा फेरीजै छै. महोलां मुजरा कीजै छै।

तठा उपरांति राजांन सिलामति सरद रितरै समैरी पूनिमरौ चद्रमा सौळै कळा लियां संपूरण निरमळी रैणरौ उजळी चांदणीरै किरण करि नैं हसनूं हंसणी देखे नहीं नैं हंसणी हंस देखै नहीं छै. मिलि सकता नही छै. तारां बार बार माहो माहै बोलि बोलि नैं वेरह गमावता छै. त्रण चांदणीरी सपेतो करि नैं महादेव नदी धमळ ढूंढता फिरै छै सो लाभता नहीं छै. इंद्र एरावति जोतां फिरै छै. इण भांतिरो सरद रितरी सपेती चांदणीरी सोभा विराज नै रही छै. रास मंडलरा महोछव मांडीजै छै. राग रगरा समाज ताइफा लागी नैं रहिआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति उवै चतुरंगी रायजादी त्रितीयांरौ झुंबिखो मोतीआंरी लड़ी हुवै तिणी भांतिरी ऊजळी गोरंगीआं ऊजळै गाति ऊजळै बावनैं चंदनरी खोळि कियां ऊजळा मोतियांरा ग्रहणा पैहरियां ऊजळा वागांरा वणाव कियां ऊजळा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पूलांरा चोसर घातियां हाथें ऊजळा पूलांरा गेंद उछालती थकी ऊजळी सखीयांरै साथै सहेलियांरी टोळी सो रास-मडल रमणरै ओछाह चांदणोरी रातिरी चली जाइ छै. ऊजळा वणाव कियां ऊजळी चांदणी मिलि गई छै. सु आगली सखीआंनूं जावती लखै नहीं छै, लखाव नहीं पड़तौ छै. तिणि सोंधेरै डोरै लगी जाए छै. ऊजळी ठकुराणी ऊजळा ठाकुर प्रीतमसू जाइ जाइ मिलै छै. इण भांति सरद चांदणी रंग विलास मांणीजै छै।

तठा उपरांति देव जागिआ छै. कांती मासरा वरत महोछव कीजै छै. घरि घरि दीपमाळिकारा वणाव हुइ नै रहिया छै. जूआ खेलि मंडि नै रहिया छै. दीवाली पूजीजै छै. चितरांम कीजै छै. भांति भांतिरा अनद बट कीजै छै. गाइखा खरेर मांडीजै छै. कुल संक्रातिरा दिन बरावर हूआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति हेमंत रितरौ वणाव कीजै छै. हेमंत रित लागी पछिरौ वाउ फिरियौ. उतराधो वाउ वाजियौ. हेमंतरा बरफ ऊपड़िआ टाढ़ौ टमकियौ प्राळौ पड़ण लागौ. जिके धरतीरा धणी पताळ वासी भुयंगनैं धणरा धणी दौलतवंत ओ बिहूं एकैं वग हूंता सु धरतीरौ पुड़ भेद नें विमरै पैठा. उठे रहण लागा।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति उणि हेमंत रित मांहै बालीमूंध सुहव गोरी गयां तनांरौ रस छातीरौ रस अधरांरौ सवाद अमृत सरिखौ लागै छै. सु तो सरगांरा सुखासों पणि अधिक सुख जांणीजै छै।

दोहा

सरगे सुरा न बकरा, ना बाजंती बीण ।
नां कांमणि मेमत्तिआं, भूरा डळा अफीण ।।१।।

तठा उपरांति करि नैं जिके बारै बारै वरसरी कांमणी तेरा चउदां वरसां मांहें पनरा सौलै मांहें मुगधा मध्या प्रौढ़ा बीमां पचीसां वरस मांही जिके कुदी जुवांनी कांमरी कंदली कांमरी कली रंगरी बूंटी जीवनरी जड़ी इण भांतिरी कांमणी त्यांरा उरस्थल पाकी नारंगीयां सारीखी अंणहार पाके वरन कोमल कठोर कुच अंसूं भीड़िआं थकां रहै. उवै कांमणी घणै क्रिसनागर कस्तूरी अंबर अंतर सांधेसूं गरकाब हुई थकी उवां राजांरा मलूकजादांरा मन राखती थकी लोट पोट हुइ रही छै. घणैं मंगाय पांन तांबोलरा रस लीजै छै. उजळी सपेत बिछाइत ऊपरैं ऊजळै वणाव कियां ऊजळी रुसनाई लाग रही छै. इण भांतिसूं हेमंत रित मांहै रातरा सुख विलास मांणीजै छै. हमें ससिर रितरा वणाव कीजै छै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तठा उपरांति राजांन सिलामति कर कें हेमाचळरा पहाड़रा टूकां ऊपरें ऊजळा बरफरा टूक बधण लागा. वड़ाई दिन लबुता पाई, इहां नदियांरा जळ जंमि ठंठ हूआ. नदी खीण पड़ी घटी।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति जिण भांत लैणांयत दीठां दैणांयत घटै तिम तिणि भांति दिन दिन निसि दीठें सूरजरो तेज घटण लागो नें सूरजरो तेज घटियो राति मोटी होण लागी. वड़ाई पाई. दिन लबुता पाई. तिणि ओछो हुअ लागो जिमि कोई भलो भूंडे बराबर कीजै तरां घटतो जावै. भूंडो भलै बरावर कीजें वधतो जाए. तिण भांति राति बराबर हुई छै. सूरजजो ठंढ़िरा मारीआ उतर पंथ छोड़ी नें दक्षिण सामां वहण लागा।

तठा उपरांति राजांन सिलामति उण रित मांहै सूरजजी पणि मकर संक्रात भेळा हुआ छै. ठंढ़िरा दबाया आपरै महले आया छै नें आकासनूं पंण राति छोड़ै नहीं. सूखरा पयोधर वधै तिण भांति आंबा दिन दिन वधण लागा. विरहणी कामणीआंरा मुखां कमळ कांमरी दाहसूं बळीआ छै. तिण भांति दाहे बाळिआ छै. कमळ पोइणी वनसपती वणराइ बळी नें रही छै. अगनी जळ सारीखो ठंढ़ी लागै छै. जळ आग दाह सरीखो लागै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति तिण ससिर रितरी माह मासरी रातिरो प्राळो पड़ै छै. उतराधरी पवन ऊतांमळो टीयां खाइ नें रहीयो छै. तिणि रित मांहै छोह ढालिआं ऊडा भोहरां मांहैं ऊंडा तहखाना मांहै खेर कोइलांरो मकालां जगाड़ीजै छै. तपन तापणरा सुख लीजै छै. उणि भांतिरी गरम ठौड़ मांहै ऊची सोड़ तलाई सेझवट तकिया घणूं ऊजळा गरकाब गदरा परांनेरूसूं भरिआ थका घणूं ऊजळी गरकाब बिछात कीजै छै. पीलचोसां अढ़ारदानीआंरी रुसनाई लागि रही छै. तेज पुंज आसप(व) आरोगीजै छै. प्यार कर नें सौंस दे दे नें प्याला दीजै छै. घणां लौंग पान बीड़ारा रस लीजै छै.

तठां उपरांति करि नें राजांन सिलामति घणी कसतूरी क्रिसनागर साख जबाद चोआ चंवेली अन्तर अम्बर भांति भांतिरा तेळ सुगंध सांधैसूं गरकाब हुआ थका ऊवे राजांन आलोजां आलीगारा नाह उल अलबेलिआंरा पदमणीआंरा रमण मांणै छै. तिण भांति गलबाखड़ीआं घातियां थकां बालो जोबन मांणीजै छै. इण भांति सुख बोल करि रात पाछी नाखीजै छै. परभाति बुलगारांरा गदरा पाथरीजै छै. घणीं चंवेली तेलरी मड़दन कीजै छै. हमांमैं गरम पांणीसूं नाहीजै छै. अंगोछी कीजै छै. वागांरा बणाव कीजै छै. सांधाखानेंसूं आंणी सांधा हाजर कीजै छै. भांति भांतिरा साधा लगाड़ीजै छै. सभा मजलस कीजै छै. इण भांति सिसिर वणाव बखांणीजै छै सु कहीजै छै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति हमैं आगै वसंत रितरा वणाव वखाणीजै छै. दखिण दिसा मलयाचल पहाड़रौ पवंन वाजिओ छै. सीत मंद सुगंध गति पवंन मतवाळा मैंगळ ज्यां परिमल झोंला खावतौ वहै छै. अढ़ार भार वनसपती मकरंद फूलादिरा रस मांणतौ थकौ वहै छै. अंबर मोरीजै छै. कूंपळां फूटीजै छै. वणराइ मंजरी छै. वासावली फूटि रही छै. केसू फूलि रहिया छै. रितिराज प्रगटीओ छै. वसंत आयौ छै. भमर मधुकर झंकार करी रहिया छै. मधुरी वाणीरा सुर करि कोकिला बोलि रही छै. बाग बागीचां दरखत गुल कारी झिलि फूल रहो छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति जिके छोगाला छयल छबीला जुआंन हूसनांइक फूलांरा छोगा नाखीआं थकां फूलांरा चोसर पेहरीआं थकां अगरचें मरगचें केसरिआं कचमैलै वागैं कीआं घणैं चोआं अंतर फूलेल गळा मांहि भीनां थकां घणैं अंबीर नै गुलाल मांहै गरकाब हुआ थका झोली भरिआं थकां दिसि दिसि छूटि रही छै. घणैं अंबीर नें गुलाल मांहै गरकाब हुआ थका अंबीर गुलाल उडि रहिआ छै. दिस दिस केसरिआं पिचकारी छूटि रही छै. आकास ऊपरै अंबीर नै गुलालरी अंबरै डंबरी लागि रही छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति सारीखा साथरी टोळियां कियां थकां झूल गैतूल पड़ि नै रहीआ छै. केसरिआ वणाव कीआं थकां आगै वखांणी तिण भांतिरी नाइका पात्रांरा ढूल चलीआ जायै छै. डफ चंग मुह चंग बाजि नें रहिआ छै. वीणा नाल मृदंग बाजि रहिआ छै. वांसली वाजि रही छै. ढोलकां बाजि रही छै. फाग गाइजै छै. फाग खेलीजै छै. नाचीजै छै. हास विणोद कीजै छै. हास रस हुइ नै रहीयौ छै. फागोटांरा मुख सवाद लीजै छै. घरि घरि वसंत राग हुलरावीजै छै. कामदेवरी दुहाई देतां फिरै छै. पंचम राग गाईजै छै. वसंतरा वणाव हुइ नै रहीआ छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति होलिका प्रब पूजिजै छै. आगै वखांणिया तिण भांतिरा अमल मागीजै छै. हमैं ग्रीषम रितरा वणाव कीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति इतरा मां ग्रीषम रित आई छै. सो किण भांतरी वखांणीजै छै. नैरत दिसारौ ऊनौ पवन वाजियौ छै. उन्हालसी प्रगटीओ छै. जेठ मास लागौ छै. सूरिज व्रख संक्राति आयौ छै. सु जांणीजै छै. सूरिज व्रखां नें दरखतांरा ओलो ताकै छै. तो वीजां लोकांरी कौंण बात. सूरजजी उतराध सामां वहै छै. सु जांणीजै छै. हेमाचलरौ सरणो लिआ छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति ग्रीषम रित मांहै पवन पावक समान वाजियौ छै. प्रथी अप नें वायू अकास च्यारि तत पांचमै अगनी तेज तत भेळा मिल नै

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



रहीआ छै. प्रिथीरा लोक विहंगम पंखी छै. सुर तरवरां रूंखारा औला ताकै छै. तरवरांरा पांन झड़िआ छै. सु जांणै वस्त्र विनां नागा डिगंबरां सारीखा नजर आवै छै. निवांणारा पाणी नीठिआ छै. पोइणी वलि नै रही छै ओछै जळ माछळा तड़फड़ी रहीआ छै. गजराज सूका सरोवर ढूढ़ता फिरै छै. सादूला केसरीसिंह ज्वालानल अगनीसूं बळतां थकां वीझा वनरा हाथिआंरी पेटरी छाया सूता विसराम करै छै. भुयंग सर्प नीसरीआ छै. सो लू नें तावड़ैरी बळता थकां द्रौड़ि द्रौंड़ि नें हाथीआंरै सीतल सूंडाला मांहै पेसि पेसि रहीआ छै. इण भांतरा सबळ जीव तिके निबळ हुइ नें रहीआ छै।

हमैं तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति ग्रीषम रित मांहे जिके राजानां ठाकुरनां सुख जेठ मांहै कहीआ तिके सुख सुर जेठ कहतां इन्द्ररी ठकुराई पिण नहीं ऊआं राजांरा सुख कहीजै छै. जो उण वगीचां मांहै हमामार महल छोह पंक ढालीआ घर तहखांना वणाया छै. झरोखा, जालिए, छाणिअैं पवनरी हवा पड़ि नै रही छै. औ महलं केसर गुलावसूं छांटीजै छै. मांहे जळ गुलाबसूं चहबचा भरीआ छै. घणां मलयागर चंदण, केसर, कपूर, घणां गुलाब नें सुरा बरफरा पांणीसूं घसीजै छै. अंगें लेपन लगावीजं छै. अंगे खोळ कीजै छै. वीझणैं वाउ ढोलिआ छै।

तठां उपरांति करि नें राजांन सिलामति उवां हमामां महलां बाहरि बागबगीचांरा रसता लागा छै. चोकीए विछाइत वणी छै. पाखती जळ कूल छूटि नै रही छै. बागें रसतांरा चोहबाचा भरिआ छै. खजानां भरीआ छै. चलत नळांरा फुहारा छूटि नै रहीया छै. क्यारे गुलकारी, रंग रंगरी बूंटी, फुलादरी सबजी लागि नै रही छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति उण बागाइत मांहै ग्रीषम रितरा विलाइती वालेरा खस खानां, ऊंची ठौड़रा बंगळा, रावटी वाळा बंधरा ठांसारा गूंथिआ भांति भांति खसखानां वणाया छै, घणै सीतल पांणीसूं सीचिआ थका वीझणां वाइझांयांसूं हींफा खाइ रहीआ छै. तठै विलाइतरी गूंथी चटाई अमोलक विछाइ रही छै. तिण ऊपरि बैठा छत्रीस रोग हरे ऊपरे ढोलिआ गिलमांरी विछाति वाणि नें रही छै. सेझां ऊपरै घणां फूल कपूर पाथरीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति किण भांतिरा सरबत छांणीजै छै. घणै वेदानै, दाड़िम कुलीरा रस लोजै छै. सो घणी कालपी मिसरीरा भेळसूं घणीं एलची नें मिरचांरै भेळ बौह लागै थकै ऊजळा कपूर वासी गगोदक पांणीसूं ऊजळै गळणै झोळि झोळि झारीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति इकत्रीसमी तारारा पुराणा पोसत. मंडवाईरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



नीपनां, आगै बखांणिआं तिण भांतिरा, तजारी तूंज, घणीं कासमीरी केसर, घणो ऊजळी मिसरीरै भेळि कपूर वासीआं पांणीरी कल्हारी झारीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति तजारैरी बाड़ीरी नीपनी, नीली घणूं पाकी, पुरांणी, आगै बखांणी तिण भांतिरी भांगि घणीं एलची, मिरचां, पांन, जावंत्रीरै मेळसूं पाखांणरो कूंडीआं सरबंगरा घोटासूं ऊजळा प्राचांरी धमोड़ी घणें ऊजळै मिसरीरै भेळ ऊजळा गरणांसूं झारीछै छै. ऊजळां प्राचांरी खवस्यां ऊजळा रूपोटां लीआं हाजरि खड़ी मिसरी, अफींणसूं अरोगाड़ोजै छै. कनाथां पड़दा तांणींजै छै. चोहबचा मांहै जल केलरा रंग तरंग मांणीजै छै. कुंअर पदौ भोगवीजै छै. चौमासो लागौ छै. दूसरौ असाढ़ आइ संप्रापति हूओ छै. तठा आगै वरसात रितरा वणाव कोजै छै, सो आगै बखांणोजै छै।

दोहा

सरद हेम नें सिसर रित, रिति वसंत ग्रोषम्म ।
वरषां दांन बखाणि तूं, ए षट रित ग्रोपम्म ।।

इति श्री षट रितिरै वात वणावरौ दूसरो प्रस्ताव पूरो हूओ।

*

हमैं तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति एकाणि प्रस्ताव महाराजा श्री राजेसररा परमांणा आबू गढ़रा मंडावरि आया छै. अजमेर थांणैरो हुकम हुयो छै. महाराजा कुआर श्री राजान राजाउत मारू मंडोअरसूं अजमेर पधारिआ छै. फौज बंधीरा बणाव कीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति अतरा मांहै पातसाह महमद मुसतफाखांनरा चार दूत विचरिआ हूंता त्यां हकीकत राजांनरा पातसाह आगै पोहचाई. सत्तर खांन बहत्तर उमरावी बांण खड़ा छै. पातसाह श्री राजांन कुअर राजाउत वात पूछै छै. राजांन कुअर किसाएक रजपूत छै. दूत हकीकत कहै छै. जु राजांन कुअर उठती वहीरौ जुवांन आनजांनबाहू राजहंस लीलंग छै. भेदग छै. तिसा ही वागांरा वणाव, तिसाही मूछांरा मरट, तिसा ही भुजांरा आंमला, तिसा ही पोरसरा गाढ़, तिसा ही कामवटरा अंग, तिसा ही रजपूतवटरा आचार देख नें महाराजा राजेसर अजमेररै थांणै राखैआ छै. हसम हुकम सौंपोआ छै. हजरित यूं मालिम छै। राजांन कुअर बत्रीस लक्षणौ छै. तिके कहै छै. सत १, सल २, गुण ३, रूप ४, विद्या ५, तप ६, अलप अहारी ७, वडोचित उदार ८, तेज ९, धनकर १०, दोलवंत ११ सकलनाइक १२, दयावत १३, विचखण १४, दाता १५. बुधिवंत १६, प्रमाणिक १७, जस १८, उदिम १९. लाज २०. धीरज २१. राज सनमान २२, सूर २३, साहसी २४, बलवंत २५. भोगी २६. जोगी २७, भुजायण २८, भाग्यवान २९, चतुर ३०, ग्यानी ३१, देवभगत ३२, पर उपगारी ३३।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कवित्त

सत्त सील गुण रूप विद्या तप अलप आहारी ।
धन उदार जस तेज चतुर नाइक उपगारी ।।
बुद्धिवंत बलवंत राज सनमान विचख्खण ।
भोग जोग गुर भगत भाग परमांण भुजायंण ।।
जस लाभ धीरज साहस धरण दया ग्यांन उद्यम करण ।
रिणि सूर दांन राजांनरा विधि बत्रीस लखण वरण ।।१।।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति फेर पातसाहजी हुकम कीयो. हकीकत इत कहै छै. कवले जिहांनिआं पातसाह सिलामति राजांन कुमार षट भाषा निवास छै. चवदै विद्यारो जाणहार छै।

दोहा

सुर आसुर अरु नाग नर, पसु पंखीकी वांण ।
जोदानां जाणै सुपह, सो षट भाष सुजांण ।।१।।

काव्यं

ब्रह्म ज्ञान रसायणं सुर धुनं वेदं तथा जोतिषं ।
व्याकरणं च धनुर्धरं जलतरं मंत्राक्षरं वैदक ।।
कोकैनटिक वाजवाह नरसे संबोधनां चातुरी ।
विद्या नांम चतुर्दस प्रतिदिनं कुर्वंति नो मंगलं ।।१।।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति तोसरै हुकम दूत अरज कीधी जु राजांन राजेसररो तपतेज परमेसर परब्रह्म, अजनम, निरंजण, निराकार, संसार सिरोमणि, संसार साधार, ईश्वररा अवतार. हिंदू महाराजाधिराज श्री राजांन राजावत मारू अैरावत सूरजवंसी इण भांतिरो छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति इणि भांतसूं राजांनरी वात सुण नैं अजमेररै थांणैरी हकीकत सांभल नै आदि वैर उगराहनूं असुरांण तुरकांणरा दल राजांन ऊपरै विदा हूआ सो किण भांतरा कहीजे छै. रहमांण रहीम अलाह परवर दिगार, पीरां पिकंबरांरी औलाद, चौवीस अवलीआंरो करामात, अवलीए आसतीक कवले जिहांनिआं हजरति पातसाह मुहमद मुसतफाखांनरा उमराउ हुसन हुसेनखां अलीखांन सारीखा गोरी, पठांण, सैद, मुगल, उजबका मुसलमान आकीनदार, त्रीस सीपारारा पढ़णहार, पांच बखत निवाजरा करणहार, सुद्ध कलमेंरा पढ़णहार, पेसता,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



आरबी, पारसीरा बोलणहार, आउखी ढाढी राखाणहार, बालि बाधि कोडीरा मारणहार, अवली मूंठीरा तीरंदाज, असली जादा, कोल बोलरा राखणहार, गाजी बहादर ताजक नीलक तार, जरबाफ बादले, आसावरी, विलाइतां, हजारी कपड़ेरा पहरणहार, देस देसरा, जाति जातिरा, मीरजादा भेळा हूआ छै. माही मुरातवा समेत पोहकर अजमेररा थाणां ऊपरै विदा हूआ छै. आवाज फूट नें रही छै।

तठा उपरांत करि नें राजांन सिलामति पातिसाहरा दळ बादळ मांगर थाट ऊपड़िआ छै. बीस लाख असवार पाखरीआ लोहमीवाड़ किआं बगतर, हाथल, टोप, झिलमें, चिलकतां ऊपरें पूरी सिलहा किआं, गरकाब हूआ थका छत्रीस आउध डाबिया रहै छं।

कवित्त

सर सीगणि छुरि कुंत सांग गेडीहल मोगर ।
गोळी गोफण संख गुरज मूसळ घण तोमर ।।
प्रासी चक्र खड़ग्ग गदा चाबक नें फरसौ ।
कुहकबांण बदूक ढाल कट्टार खपटसौ ।।
सेलह त्रिसूल सांठो धको वली वंसहड़ि कड़ि लगण ।
भूकंत चहुलि सूळो चटक दंडायुध छत्रीस रणि ।।१।।

इण भांति छत्रीस आयुध डाबिआं, नव हाथां जोध खेपांन तुरक, अवला पाघड़ांरा जमरांणेरी जमात सारीखा निजरि आवे छै. जाणें कलिपत कालरौ समद उलटीओ छै. तिण भांतिरी समंद व्यूह सेन्यां कीआं चाली आवे छै. कांही जळजात सेन्या कीधी छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति अठीना सका बंधी हिंदू भाजणी परत राजावत राजांन मारू गुरडव्यूह, ग्रिधव्यूह, चक्रव्यूह, सेना रची छै. बिहूं फोजांरो घड़स चालो जावै. हसमरी धसम पड़ी नें रही छै. सूरजि रथ खांचि नें रहीओ छै. गयणा गरज डंबर छायो छै. सूरिज पीळै पांन सरिखो निजर आवै छै. मुरचांरा मुकामला मंडाया छै. अणीमेत्र हूओ छं. रायजादारा भाला भलकि नें रहीया छं. तबल बंधा मीरजादा बाकां बहादरावां नें तारा तवल बाजि नें रहीआ छं. भेर घाव लिनें रह्यो छै. नोबतरा टकोरा लागै छै. नौबति झींगड़ि पड़ी नें रही छै. भेर नफेर, करनाल भभक नें रह्यो छै. सुरणायांरी ऋहक पड़ि नै रही छै. वडो राग सिधुड़ो वागि नें रहीओ छं।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति किलकिला नालि छूटी सु गोळांरी आगा- ज़मूं धरती धमकि नें रही छै.जबर जंग नाळ्यांरा निहा उपड़ि नें रहीआ छै. गज नाळ्यां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सुतर नाल्यां, जंबूरा नाल्यां, रामचंगी हथ नाल्यांरा चणणाट वाजै छै. आकास छायो छै. सु जांणै तारा छूटै छै. कुहक वांणरी कहक पड़ि नं रही छै. आतस आराबा हवायांरो मारको पड़ि नै रहियो छै. अधार घोर हुइ नैं रहीओ छै. इणि भांतिरो औसर मंडि नै रहोयो छै. रौद्र रस प्रगटोओ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति पचास टांक चिलेरोखा अणहारी कबाणरा घोकार वाजि नै रहिआ छं. त्रींगडा भलोड़ांरा वूम पड़िआ छै. सवायै मेंहरो जोरि सोक बाजै तिण भांनि पंखांरो रुग वाजि नैं रही छै. केवर दुवासू कोरं पंखारै पूट पूट नीसरै छै. तीरां गोळीआं रै मारक पड़तै जिनावर पांख समारण न पावै छै. आकास ऊड़त पंखी पड़ै छै।

तंठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति असवारांरी वाग ऊपाड़ी किलकिला ज्यों ऊपाड़ि ऊपाड़ि हेमरां नाँखीजै छै. झूसणां ऊपरै वरछी चमकि नैं रही छै. रामण गांजा सेलारा धमोड़ा पड़ि नैं रहीआ छ. सरकूंत आर पार हूआ छै. वगतरांरा तवा फोड़ फोड़ पूठी परा अणीआला अणी सीसरं छै. सु जाणां धोवर पूठें जाल मांहे मछा मूंह काढ़ीआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांनं सिलामति जिके सूर सामंत रावताला छै. सु हाथीआंरा कूंभथळा दांतूसलां पाउ दे दे नैं घाउ वाहै छै. झंडा नीसांण पाड़ै छै. पातिसाहरा गूडर गाहीजै छै. गजटला गाहीजै छै. वीरा रस ऊपनो छै. वीरा रस मातो छै. वीर हाक वाजि नैं रही छै. नाराजोआंरी झांट पड़ि नै रही छै. वगतरां ऊरां तरवारीआंरा वांड त्रूटि नै रहोआ छै. जाणों बादळा माहै वीजड़िआंरा सिला ऊपड़िआ पाखरां ऊपरै सारधांरा फूलधारां वाजी सु ठणणणण जाणैं परभातरी झालर ठंणकी, नरबगतर विधंस हुआ. कनां वह भायामी रांति वाही. तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति फ़ैंतकारी गहकि नैं रहो छै. भयानक रस मातो छै. भयानक रस हुइ नैं रहियो छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति राजांन राजाउत मारूरा सामंत राइजादा एक पाखर, लाख पाखर, अणीरा भमर जांहरा पग मेर माथै मंडीआ छै. एकूकैं रावता लैर हाथि हजार हजार मोरजादा पड़ोआ छे. आगलै कवेसरैं कहिओ।

दोहा

सुर असुरा इण आहुड़ै, आहीं एक अवक्क।
पिड़ि जितरा हींदू पड़ै तेता सहस तुरक्क॥

मेछांण कटि घांस हुआ छै. चालीस कोस रिण साथरै पंजा हजार पड़िआ छै. करकारी बाड़ि हुइ नैं रही छै. विणजारांरी वालद पड़ै तिण भांति घोड़ां भड़ां हाथीआंरा गरा पड़ीआ छै. वसंतरा केसू फूलै तिण भांत घणां घायांसूं धाया थका

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



डोलिआं, झोलिआं ऊपड़िआ छै. जिके अवसांण सुध खत्री छै तांहरो अरोगी धिखैं छै. जिके सतवंती छै तिके सांमरै साथ बळण चालीआ छै. तिके सती अंगनि सनान करि नै सरग भोगरा सुख मांणै छै. पूठैं करण रस कीजै छै. जगवासी लोग छै त्यांनां करण रस ऊपनौं छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति राजान राजावत अैरावरै रिणखेत हाथी आयौ छै. रिण जीत नगारा धुवै छै. फतैरा सैवानां वागा छै. जस जैतरा डंका वाजिआ छै. कुसल खेम आणंदरा वधाइदा दौड़िआ छै. घरां साम्हां फौजांरा घड़ूस चालीआ छै. आवै छै सु किण भांत बखांणीजै छै. पातसाह देरा हसंम रखत तखलूआं हूंता सु आंणि थाणैं दाखलि कोआ छै. अजमेररा थाणांरी जमीत कीजै छै. घरि घरि मंगळाचार आणंद वधामणां कीजै छै. घणां माल निजराति उवारीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति तिणि प्रस्तावि, राजानरै सिकारनो असवारी हुइ छै. नोबत टकोरा पड़ि नैं रहिआ छै. बाहरि डेरा कोआ छै. असपका खड़ी हुई छै. तंवू, समीआंणां, सिराइचा, रावटी, वाडि समेत करणाटी, गूडर तांणीआ छै. दळ वादळ लागि नैं रहिआ छै. रजपूतांरा थाट मोगर मिळै छै. महोला लीजै छै.

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति हजार तोपची खंधार, शब्द भेदी आगबर जागरा जाळणहार, आकास उड़ता पंखी पाड़ै. इण भांतिरा नाळ गोळी दारू जामगी साज-बाज किआं थकां, मुंहडा आगलि सजि नैं ऊभा छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति फौज बंधीरौ बणाउ कीजै छै. फौजां आगै आतस चालै छै जबरजंग नाळि, किलकिला नाळि, जंबूरनाळ, गजनाळ, हथनाळ, सुतर नाळ, कुहकवांण, राम चंगी कई भांति भांतिरा आराबा रहडूए घाती आवै छै.

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति हाथी सज कीआं वहै छै. सु किसड़ा बखांणीजै छै. थेट सिंघलदीप अनोप देसरा नीपनां, वेधगरतांह, भद्र जातीआं, हाथी-आंरां कुंभांथळा भांजिआं सवामण मोती आंमळ प्रमाण नीसरै, अढ़ार भार बनसपती मूं ओघसतां थकां हमला खाई नं रहीआ छै. उरै गजराज रेवा नदीरै कांठै द्रह ऊपरै पांचसै हाथीरं हलकै लीआं मोड़ी खर करि नैं रहिआ छै पांणीरी छोळांरा झकोळा खावता थका गज कीला करि नं रहीआ छं।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति कपोलांरै मदगंध करि नैं भौरांरा झोर पड़ नैं रहीआ छै. भौरांनूं वैठा सासहे नहीं, सूंडीर वरां बलाका खाइ नै रहीआ छै. तठै कालवूत हसतणीरै फरस करि नैं छिवितरी खाड मांहै पड़ै छै. पछै लोह सांकळरा प्रास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



नाखि नैं तिके हाथी पकड़ीजै छै. इणी भांतिरा सींघली गजराज वेसास नैं आंणीआ छै. तांहनूं घणां मलीदा, वेसवार, मोगर दे दे नैं पाटि आंणी नैं सझाया छै. तांह गजराजां नूं सार जड़ीआं जंजीरां लौह लंगरां लगाड़ि नै खभू ठाणांसूं छोड़ीआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति वड़ा जूह गयंदा गजराजांनूं गड़ां चरखीआं मारि, पोतारि, नीठ वसांणीआ छै. रूमाल फेर झाड़ीजै छै. आंमळा तेलरो वोह दे नैं काळा जूह कीआ छै. गजराजांरा भाल कपोळ सूंडाहळ घणै लाल सिंदूरसूं चरचिआ छै. जाणैं साख्यात गुणेशजो प्रसन्न हूआ छै. कनां इंद्र धनुष फाविओ छै. तला जोड़ पटा झरत कपोलांरा दांण छूटि नै रहीआ छै. तांह गजराजांरा मद छरित बारेह मास ऊतरै नहीं छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति पाखती सेत चमर विराजिआ छै. जाणैं मेरगिरसूं गंगारी धारा धसी छै तांह गजराजांरा ऊजळा दांतूसल घंगड़ीआंसूं जडिआ छै. जाणैं घटा बीच बगलांरी जोड़ी वडी दीसै छै. देवळरो घटाघळि जेम घंटा ठणक नैं रही छै. जांणै घणां बूठा पावस डेडरा डहक नैं रहीआ छै गजराजांरा डील रेसमी नाड़ीसूं भीड़ नैं जटा-जूट कीआ छै. जरबाफ वणावटरी झूलांसूं ठाकिआ छै. सार पाखरसिरी झालरी लोहनी कोठी ऊपरैं सनाह करि नैं गरकाव कीआ छै. गजराजां ऊपरां गजढालां ढळकि नै रही छै. जांणै पहाड़ां ऊपरैं खजूर कल आंबारी मंजर ढळकि नैं रही छै गजां ऊपरैं धजां, नेजा, चीधां फरकि नैं रही छै. जांणै हेमाचलरै टूकां माथै कसू फूल नै रहीआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति उमां गजराजां आगै गड़ां चरखी वारू आरावा छूटि नै रहीआ छै. जांणै धूंधळै पहाड़ पाखती रांझी लांग रही छै. मदि वहतां मतवाळा ज्यों पग नीठ भरै छै. गड़ांरा तोड़णहार, वरवाजांरा फोड़णहार, दळारा मोड़णहार, दळारा पगार, फोजांरा सिणगार, इण भांति गजराज सिणगार पाखरीआ छै. पीलवांण कूंभाथळां माथै पगारा आंगूठा चलावै छै. गजवागा खेंचे छै. धता धता करै छै. नाग जो छछोहा जांणै वावळांरा लगस पवन जोरसूं चालोआ जावै छै. इण भांतसूं गजराज मुंहडा आगै ही डुलै छै. डोहां करता हमलाखांना वहै छै. इण भांतिरा हाथिआंरा हलका साज वाज सहित साजंति वणाव नैं राखीआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति अजमेर थाणैरो मुकाम किओ छै. सुखासण पालखी चोडाल रथ पाइक वणि नै रहीआ छै. कटकांरा खूर पडि नै रहीआ छै. हाथी लड़ावीजै छै. पाइक सिरंम साझै छै. फूलहाथा फेरीजै छै. भांति भांतिरा तमासा लाग नैं रहीआ छै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति चौमासारी छावणी हुई छै. आगम रित आवी छै. आसाढ़ धूधलांओ छै. उतराधरी घटा काली कांठलि ऊपड़ी छै. आड़ंगरी गुडलि मांहे ऊंडो गाजीओ छै. बगला पावस बैठा छै. पंखीआं माला स मारिया छै. पावस पडि नै रहीआ छै. परनाळ खाळ पहाड़ खड़कीआ छै. चात्रग मोर बोलि नैं रहीआ छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति आगै कवेसर गंगेव नींबाउतरौ बेपारो बखांणीओ छै. तिणरी उकति आंणी छै. तिण मांहे कवेसुर कहै छै. वात वणावरौ पण भेळ कियौ छै. पण उण कवेसर री उकति बराबर नहीं. हमें बरखा रित मांहे श्रावण नैं भाद्रवैरी सांध बरखा रित मंडी. दह बीजां झड़ लायो डाळ डाळ अंबर चमकिओ छै. सेहरां पाखर पड़ी भाखरांरा माल हरोआ. पांणा एकनाळ भरिआ. चोटोआळी डहकि नै रहीआ छै. परभातरै पहररी गाज आवाज हुइ नै रहा छै. राजा नै सिकाररी उमंग मनमां आंणी छै. हुसनाकां तरकसांसूं मण कपड़रो खोळी उतारि लीधो छै. कबाणां चाक कीज छै. हजार अैराकीआं आरबीआं उजबकीआं तुरकीआं ताजीआं पलाण मंडीजै छै. तिके किण भांतरा अैराकी, आरबी, तुरकी, उजबकी, ताजी जिके लंकी पाररा उतारिआ आंजणिआं आंखीआंरा मूंडीकाट अैराकी वाउ मूठ पकड़ना डाल भागा मांकड़ ज्यों डांण मांडता आडी आंकुलाटां उभळतां असील विलाती जाहरा सरीर आरीज्यां ऊजळा झांखं मुखमळी पसमरा, कंलोसो कांनरा, झूठमो द्रेठरा, कूकड़ा कंधरा, लोह में बंधरा, तोछड़ी पूंठरा, चोवडी, धूबरा, चांमरो पूंछरा, निमसो नलीरा, वाटके नस्खरा, धावणां द्रोड़रा, मूडा अिघ ज्यौं कूदता, नट ज्यों नाचता, कुळचता, अकुळणी नैण ज्यौं ऊछाछळां. आपरी छाआंसूं डरपता. बाज पंखी ज्यों ऊड़ाण झांपतां, जांणै सूरजरा रथ असमानरै फैर लागि नैं रहीआ छै. प्रिसण ज्यों मुख बांको कीआ थकां कना अणमिलीआं जारसूं छिनाळ मुख बांको करि रही, कूंभारा चाक ज्यों कूडे फिरि रहीआ छै. ढाळ सरोखा वौड़ा, उर ज्यांरा आंठुआंरा टलासूं हाथी धको खाइ सकै नहीं. माणसरा कमल ज्यों नासा फूल रही छै. नासारा फरड़का वाजि नैं रहीआ छै. वेपख सूथ जिके सालहोतरमां वखाणिया तिहड़ा इण भांतिरा तेजां. घरारा खूदणहार खुरताळांरा अधखुरांसूं धरनी धमकि नैं रही छै. तांह अैराकीआं. आरबीआं, उजबकीआं, तुरकीआं, ताजीआ पूठ पलांण मंडीआ छै. सो किण भांतिरा पलांण जिके समंकरी नीपनी मोरबो पलाणी, दामण चमकती, पिड़ांमारी लगामी आरसी आलीआंरी छालीआ पाखरां घातिआं. पलांण लगांण जींण साकति साझ-वाझ-लूंब-झूंब करि नैं श्रामणरी त्रीजणी ज्यों पांडवे सिणगार पाखर घाति चोकि आंणि हाजर कीआ छै. राजांन राजावत मारू किसो एक जीं जिसो एक खत्री धरमरी चौवीस आखड़ा वहै. कुंण कुंण आखडी कहै छै. दानरें दातार, झूझारें झूझार, परभोमि पंचायण सै देसहाथी, काछ वाच निकलंक, परनार सहोदर, आवतो जावतोरी मूठि पूठि जोआ नहीं.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



टपारी वसुत राखै नहीं. झलफलीआ झांसि मुडीआ मेर, पुलीआं पखत साररा, पाचरा लोहरी गांठि, विरदारौ भारो, घाट छराड, थाका सतरौ विसराम करड़दंत, कामरौ कोट नेठाह घरघोर, वहतौ काळ. ढहीओ काहर, तोरणरा आखा, अगनि फूल, सतीरौ नाळेर, काळीरौ बेहड़ो, रुळआरौं जोड़, रांकांरौ मालवो, कुंआरो घड़ारौ बींद, पांचसै भड़ां भाडयां भांत्रीजां लिआं हजार असवारांरी ढाळ किआं, भूखाअै लोह लिआं, काळै बरछिआंरै चूंग किआं, चड़तै सूररौ सिकार चाड़वौ छै. भेर घाउ वळिओ छै, होकारै होकारो होइ नै रहिओ छै. लाल बरछी थकी नै रहो छ. पगेज बराबर चालता घोड़ांरा हाठुआं उपरि अध लोहोअैरा झाग तजारेरी वाड़ीरी भांति विराज नैं रहिआ छै. फौज बराबर चालतां आकास उरैं खेहरा डंबर हुइ नै रहिआ छै।

तठा उपरांत करि नै राजांन सिलामति सिकार पाखती जिनावर चालिआ जाअै छै। सेत सूआ, सबज सूआ, सारों, मैनां, कोइल, तोतुर, कागा-उआ, सेत काग, सेत कबूतर, उडण गिरहवाज, लख जातिरा पंखी, भांति भांतिरी झीणी भाषा बोलता, पढता कठपिंजरै घातिआ वहै छै।

तठा उपरांत करि नै राजांन सिलामति बाज, कुही, सिकरा, सींचांणा, जुररा, तुमती, हुसनाकां सारवानांरा हाथां ऊपरांसूं सगगाट करता छूटै छै. वाइ पखरा जोरसूं नीला घास धरतीसूं लपट नैं रहिआ छै. आसमानरै फेर जितरा जिनावर चिड़ी, कमेड़ी, झाट मांही आवै छै. तितरा झपटांसूं मारिआ जाअै छै।

तठा ऊपरांत करि नै राजांन सिलामति बड़ा सिकारी सिंघळी, सादूळ, पटाळा, केहरी नवहथां, कठोरीआं. रीछीआ, तेलिआ, तीदूला, लकोरिआ, बघेरिआ, चीतरा, भांति भांतिरा, जाति जातिरा, नाहर सांकळे जड़िआ रहहुअै गाडे बैठा, कसता, करणता, बूंबाड़ करतां वहै छै।

तठा उपरांत करि नै राजांन सिलामति कावली कूतरा, लाहोरी कूतरा, विलाती कूतरा, लोलमी, लालमी जीभरा, वळिमें पूंछरा, लापड़े कानरा, दाड़मी दंतरा, सिघरा हथरा, केहरी कंधरा, झांफरै रोमरा, के विना रोमरा, इण भांतरा कूतरा, चीतरा, मुखमळो, रेसमी, मुखांरा वणाआ, सांकळीआं जडिआ, देहलां पालखिआं ऊपरे बैठा वहै छै।

तठा उपरांत करि नै राजांन सिलामति सिकारी ठौड़ पहाड़ांरी पाखती वनारा झंगार मिळि नैं रहिआ छै. जांणै घणां दिनांरा विछड़ी मीत मिळे तिण भांतिरा रूंख मिळि नै रहिआ छै. रूंखांरा झुंड महादेवरी जटा ज्यूं जुड़ि नै रहिआ छै. रूंखांरा जूट जुवान मल्ल जुटै तिण भांतिरा जुडि नै रहिआ छै. रूंखांरा जूट रामचदरी वानरी सेन्या ज्यौं रीछांरी जमात सा निजरे आवै छै. तिणि भांति दोसै छै. इण भांतरा वनझंगरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मांहै हरिण, सूअर, सांबर, रोज, खरगोस, गैंडा खग, भांति भांतिरा जानवर वनझंगरा मांहै चरै छं. सिकाररी हौंक वाजि नै रही छै।

तठा उपरांत करि नै राजांन सिलामति मांखिरा उकासिआ सूअर भाखरांरा मोढ़ा फाड़ फांड़ नै निकळिआ छै. सूअरें राते खून किआ छै. सरे गुलवाड़ि विधांसिया छै. त्यां सूरांरै मोरै अैराकी. आरबी, उजबकी, तुरकी, ताजी लगाड़ीजै छै. सतपुड़ा पहाड़ां मांहै दराजा बदूकांरा खललाट पड़मादा पड़ि नै रहिआ छै. ग्रीध पंखांरा सरांरी सोक वाजि नै रहिआ छै. सेलांरा धमोड़ा पड़ै छै. सेलांरा फळ सूरांरै मोरै भांजि भांजि रहिआ छै. सूरांरै मोरै भूखा बाज ज्यों असवार नै घोड़ो आफलि रहिआ छै. सूअरांरो सिकार माणीजै छै. एकल ढाहीजै छै. रहड़ू मंगाइजै छै. रहड़ू घाति घाति नैं चलता कीजै छै. इति फौज बंधी मसलत भारथ जुध सिकाररो तीसरो प्रस्ताव पूरो हुवो।

दोहा

फौजबंधी मिसलत जुध, भारथ हंदो भाव ।
वानस बात वणावरी, ए त्रीजो प्रस्ताव ॥

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति रातो छाके ते दारू पिआं ताखीआ त्रिखावंत हूआ. बेपारहरैरी हांस तरस माणणनूं हजार असवारां तलवारे माथेनूं वाग वाळी छै. सो किण भांति तलाव जांणै दूसरो मानसरोवर रातासी एके रडिरं माथै पांडरी नीर पवनरो मारिओ कराड़ फींण आछटतो ठेपां खाइ नै रहिआ छै. कही आंसमां पेठां पगांरा नख झांखै, दूघरै भौळै विलाव आंसै पालिरै फेर केलिरै गिरदवाइ मांहे सारसांरा टोला झींगोर करि नै रहिआ छै. मांहे सूआ कोइल मोर बपैया बोलि नै रहिआ छै. आडा डहकि नैं रहिआ छं. बतकां बकोर करिनै रहिआ छै. डेडरा डहक नैं रहिआ छै. हस कोला करि नैं रहिआ छै. कमंल पर फूल नैं रहिआ छं. पोइणी थरकि नै रहिआ छै. भवर गुंजारव करि नैं रहिआ छै. पालिरै फेर गरदवाइ उपरि वड़ नै पीपल साख मेल हुइ नै रहिआ छै. ऊपरि वड़ा नैं पीपरांरी घटा बधिजिनैं रही छै. नैं तलाव नैं ते छायारी हांस तरस माणणनूं हजार असवारांसूं राज नैं आइ पागड़ा छाडिया छै. होलि में जिहाजां पाथरीजै छं. पंच रंग बादळ होइ तिण भांति राग रंगी बिछाइत चांदणी कीजै छै. भांति-भांतिरा हुलीचा गिलमां ढाळीजै छै. फूलवाड़ीरो वणाव वणि नै रहिओ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति मुखमली जरबाफती, मखतूल, रेसमरी कलाबतू जरकस लपेटिआं लूंवा समेत गादी तकिआ विराजमान कीजै छै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति बरछियांरो चकारो उतरिग्रो छै सो किण भांतिरो बरछो जिके पांच पांच, सात सात ताकड़िग्रांरा मणगांजा सेल उवा वरिग्रां मांरा हाथारा, सेलारै टेकिया सुवरिग्रां में सेलांरासूं उतारि नैं उग्रां हीज वडा नैं पोपलारीग्रां साखासूं नागळिग्रा छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति कबाणांरो चकारो उतरै छै, सो किण भांतिरो कबांणा थेट विलाती, सींगरो सिगणीं, तूंजो हलका, अठारै टांक चिलैरो खाग्रणहार, मुलातांण उतपति, कुरबाण रहति, बारै बारै वरस दरिग्रावा माहे जेहाजां हेठो चली ग्रावो, चिलैरो तांणो, हुँकार करतो, बड़ै पठाणरो बेटो ज्यूं तूहीर करनो, इण भांतिरो कबाणांरो चकारो उतरै छै सु उग्रांहीज बड़ां नैं पीपलांरीग्रा साखासूं नांगलीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति ग्रतरा मांहै ढाला ग्रलीवंध छूटै छैं. सु किण भांतिरो ढालां सुध गैंडो घणांरो मारो बधै, सुहरतालो रंग लागै. तीर, तरवार, कटारो, बरछीरो दावो नहीं, सूग्ररो दातरड़ो लागै तो खरड़कनैं ऊतरै. गोळी लागै तो उछळ नैं पाछी पड़ै. सोनहीरो फूलां नकसी फूलां मुखमलरो गादी घातियां, सांबरा हथवासां, वुलगांरो डाबां सहित ऊग्रांस राजानांरा हाथांरो उग्रांहीज बड़ा नैं पीपलांरीग्रां साखांसूं नागळिग्रां।

तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति ग्रतरा मांहै तरकसांरा कुहटाऊ बीड़िया छै. सो किण भांतिरा तरकस कंवील, जिके मुखमली ठाठी, प्रतिकाली सकलात, मैंण कपड़ारी खोळीसूं काढ़ी, कलाबूत नोसरी सांठो, गिरमरो नीपनी, कांवड़े गजवलरा भल, काकैवर ग्रीध पर पंखारै दांतरै वढ़ारै घणै पंचरग पाट मांहै झिझकिग्रां थकां घणैं मुखमल नैं घणैं वांतमा गरकाब कोग्रां थकां, उवां राजावांरो कडिग्रारां उवांहीज वड़ां पीपलांरो साखासूं नांगळीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति ग्रतरा मांहै तरवारियांरा करमसार छूटै छै. तरवारियांरा साज खुलै छै. सु किण भांतरो तरवार थेट सिरोहीरो, सांतरो, दाणांदार, मिग्रांन घातियां बिग्रागुले बाढ़े झेरिग्रां-मिग्रांनसूं काढि नै घास में नाखी हुग्रै तो पांणीरै भोळै जिनावर ठूंक मारै. छछोही बाल नागणी चिलकै जाणैं काळोरी जीभ हालै, तिण भांतिरो ग्रांबेर, जेसलमेर, सांगानेर, महेवारो ग्रोजणी हुवै तिण भांतिरो. घणैं मुखमल नैं घणी सोनै रूपै मांहै गरकाब करो थको, इण भांतरो तरवार, घणै ककडे गोनीग्रं सांबरमां लपेटो थको तहनाळ, मुहनाळ, कड़ो, कुरसी समेत नकसी मंठि उग्रां राजादांरै हाथरो उग्रां हीज वड़ां नैं पीपलांरो साखांसूं नागळीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजान सिलामति कटारो किण भांतिरो कुनारबंधी,कुनारगामी,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



जमदाढ़ सोनहरी नकसी जड़ाव सांतरी, घणै मुखमल नैं घणैं कतीफे मांहै गरकाब कीधी थकी, उमां राजानांरी कड़ियांरी इण भांतिरो कटारो बीड़ी वटवै समेत ए जदा पगांसूं लपेट नैं उमांहीज ढाळांरी आंचांमां राखीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति अतरा मांहै वागांरा चिहुरबंध छूटै छै. सो किण भांतिरा वागां श्री साफ, भैरव चौतार हजारी, गंगाजळ खासा वामता इण भांति वागांरा चिहुरबंध छूटै छै. कडिआं लोळ लीजै छै, वीजणैं वाउ ढोळीजै छै, घांड़ां वाउठा कीजै छै. अै राकी टहलावीज, चौरंगा सोगठांरी खाट खड़ पड़ि नैं रहो छै. वे पहरौ घमहमि नैं रहिआ छै. राजेसरां, राइजादां, आलीजां जुवानां, मलूकां, कुअरांरा साथनूं कल्हारीरौ होफौ फिरै छै. हुकम हुआ छै कल्हारी. हो ठाकुरे कल्हारी. सो किण भांतिरी कल्हारी तेलगारो वाड़ीरो कमल, इकत्रीसमी तारारौ तजारौ, कोपरारै दलिगरीरै वढ़ि हाथां छूटो, पांणीमां पड़ै तौ गळि नै जावै घणै भीमसैनी कपूर वासीआ पांणीसूं केहरी कल्हारी खासां दोवड़ां छांणीजै छै. ऊजळा रूपौटा उलटाजै छै. ऊजळा खवास पासेवान हाजिर लीआं खड़ा छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति इतरा मांहेरा इतनांरा साथनां अमल कराड़ीजै छै. काळौ कंदलीवाढ़ीजै छै. भूरो मेवाती आरोड़ा अमल आगराई मिसरी आंह फींण अनै वासंग नागरै मुंहड़ेरा झाग हुआ तिण भांतिरौ नेस सींघोडा भंज कियां. आमिरी वढ़ कीआं थकां, पांच पांच. दस दस सेर देवगिरिआं थालिआंमां घातिआं थका फिरीजै छै. जो किणी ठाकुररो हांस तरस हुआ छै तिणनूं अमल आरोगाडीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति धूंधळौतजारौ, बांधलौतजारौ, पांच पांच सेर, दस दस सेर कोरा कूंडामां घातीआं थकां सांबरा प्रांचारा जुवान मचकावै छै. पवनरी मारी सिकडीजै नहीं. आं लारै अगरि आवै. आंगूठार अगरि आयां निलाड़रौ तिलक लै. इण भांतिरौ धधळौतजारौ, बांधळौतजारौ, सो किणनूंजी पाकां पाकां वरीआंमां जोधारां करड़दता, अजराइलां. खोबरां डाणां दूलाडा कीआं लोह घरड़ां लोहानां लोळी लेनां काटरै ऊगरै है करतां पचासे बोलीए. आठे आठे वढेरणि खेतरै विषै पड़ि पडि ऊपडिआ. जाहरां पांच पांच हजार बाम पाटा बेंधे खाधा तांह रजपूतांनूं अमल कराडीजै छै. अमलांरी नीमां दूणी दीजै छै. अमलांरौ तंडल रोपीजै छै. अमलांरा जमाव कीजै छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति केमरिये वागे चंदा चंदा जुआंन माहिल वाड़िआंरौ साथ ऊपड़िआं घटारा चुवता पटारा खासीआं वांहारा बोलता कहारां राजांन राजावतरै वेपारै रै वासतै वाकरा मगाड़ीजै छै. ओठी ऊंठे चाड़ीजै छै. सो किण भांतिरा ऊंठ, किण भांतिरा हांण, किण भांतिरा डांण, किण भांतिरा पलांण नै किण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



भांतिरा बखांण. जिके पंचाळी वहीरा, वालमी नहीरा, वाटली तळीरा, घाटमी नळीरा, जाडा गोड़ारा, छोटा पींडारा, घटवाजंटरा, ससा सेरिआं बगलांरा, चाकमै ईडररा, झांबरै पूंछरा, वलिमे रूआरा, नवहथी झोकरा, बाथिमें कंधरा, छत्रधारी माथैरा कोरिमै कानरा, साइमै वांनरा, तजिमा होठांरा, कसतूरिआं पटांरा, भमण मथा सांलीआं सिंह ज्यों सारसें करता सींघोड़ा सा, कूंटा काढिआं, भूखै मयंद ज्यों हूंकार करता, मद वहता, हाथी ज्यों जोहां खातां, भाद्रवैरी गाज ज्यों आवाज करतां, साठीकरै भमण ज्यूं चसळका करता, भागै गाडै ज्यों बठठाट करता, आगले झाग नाखतां खौटहड़ीआंरा गोआंरा झूठै कूआंरा कळसिमां कपोळांरा, कमाल धड़े चड़ीआ, कड़े बाथमां थेट आडेवळे सारीखां गिरवरां पहाड़ांरा, झंगरां वनसपती सोमरा, पाखड़ा प्रतकाळो सकळात में उकू लपेटिआं थकां; पींतळरा पागड़ा, कळीझार झोळ घातिआं थकां, घणीं पीतळ नै घणी दांत मांहे गरकाब हुआ थका, रेसमी पटाटां, सांबरा उकटां, तगे अंग भीड़िआं थकां. इण भांतिरा सौ ऊंठा ऊपर सौ पलाणां मंडिआ छै. घड़िआ जोजनरा जावणहार, घरतोरा करवत जांणै जळरा जेहाज डूंघाजमाज छेंडिआ छै. ऊठीआं चड़ि वाग उठाई छै. ओठी जाए एवड़ि पहुंता छै. बाकरा पकड़ीजै छै. सो किण भांतिरा बाकरा जिके कड़कती सांघरा, बड़कती नळीरा, भाहरे सांदरा, मांदळिए पेटरा, माडि बोर काचररा, बरडणहार, घणें कूंभट नै वावळीरी टीसीआंरा त्राड़णहार, सिखिरिरा मालणहार, फिरणीआंरा बैसणहार, बालखसी बोकड़ा, बिसें बोकड़ा, खोरडे खील हरीरा चारीओडा, सो ऊंठा बिसे बोकड़ा मसकांरो भांतिसों लिड़ाइ नें घातिआ छै. ओठीए चड़ि नें वाग उपाड़िया छं. ओठिए आंणि राजांनसूं मुजरा गुदराया छै. खाजरू आए हाजर हुआ छं. रावतालानूं कहिओ छै. ठाकरे खाजरूआं नें ठरका करो. तिके रावताला घणीं केसर नें घणें कसनागर अन्तर सांवे मांहे गरकांब हुआ थका. उआं सीरोहीआं खाजरू वोझोड़ीजै छं. बाकरा फूलधारा मुहे निखाळीजै छै. बाकरा उवेड़ीजै छै. तांह खाजरूआं उवेड़िआंरो कासूएक बखांण वजाजरो हाट बास्तेरा थांनरूरी बरकी, पींजी अैरूरा गोटा, गुजरातीं कागळरा पाठ, इण भांतिरा खाजरू नीसरिया छै. भीतर वाड़िआं हुसनाकांनूं सूळांरो हुकम हुओ छं. तिके सूळा कीजै छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति बाकरां नें सूअरांरै सांटरा सूळा जोळा जोळा हुआ छं. सो किण भांतिरा सूळा पेटिमांरा खालिमार, अंतर वेढिआंरा ऊपर चेढ़रा, कालिजैरा, पेटालिजैरा, इण भांतिरा सूअरां बाकरांरा सूळा रजबेंरा मारिया घणै सुरहै घोरा झारिआ, आडीआं, पोटळिआं ऊपरि झरराट करि नै रहिआ छै, सातमैं पाताळ वासंग नागरै माथै टपूकड़ा खाइ नें रहिआ छे. त्यांरी सौंरभरी वास्तै तेत्रीस कोड़ि देवता सरगसूं हेलूस नें उतरै देवांसुरांरा विवाण हिलोरव खाइ नै रहिआ छै।

तठा उपरांति करि नें राजांन सिलामति राजांन राजावतरै बेपारह वास्तै भांगि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मंगाड़ीजै छै. तिका किण भांतिरी भांग सुध काकापुरणि वासिग नाग माथैरी नीपनी, सिंघरी गुफा मांहे नोपनी, थोहररै बिड़ेरा, भाखररै खुड़ैरी, सूअरी पांख, परड़री आंख, रोज मारि, भ्रिध मारि, भमर मारि, लटिआळी, बापरी खाधी बेटैनां आवै, काकैरी खाधी भत्रीजैनां आवै, असवाररी खाधी प्यादौ छकै, इण भांतिरी भांग मंगाड़ीजै छै. मकराणैरै पखाणरै-कूंडे घातीआं, माल कांगणींरा गोटासूं वांटीजै छै. सांबरा प्राचारां जुवांन घोटै छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति मेलवणी जोळी जोळी मंगाड़ीजै छै. सो किण भांतिरी मेलवणी लंवग, डोडा, जायफळ जावंत्रो, नागकेसर, तज, तमाल पत्र, सींगी, मुहरा, धतूरो, भूटटी, एकखांन, इहमदाबादी खांन, हाथां छूटो रायागण मैं पड़ै तौ सात सात टुकड़ा होइ जावै इण भांतिरी बत्रोसौ काढ़ीजै छै. इण भांतिरी मेलवणी जोळी जोळी मंगाड़ीजै छै. कंसूभैरी वास्तै मिसरी कोरा माटा मंगळीजै छै. कसूंबौ खासा पटोळां छांणीजै छै. कसूंबौ ऊजळां रूपोटां उळजै छै. कसूंबौ ऊचोआं बिलगिणिआं बारीजै छै. कसूंबौ रातां ओछाड़ां ओछाड़ीजै छै. कसूंबै नैं हुसनाक पवन हांकै छै. कसूंबैरो पांणिगो मडिआ छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति गोळी, चूरण, आसण, कवळ, कुटी, नागासिणी, विरंच, मुफर, तांबेसर, कामेसर, मदन कामेसर, जिता मारिआ ओखध फेरीजै छै. जांह ठाकुरांरै हांस तरस हुअै छै ताहनूं कपूर वासिआ पांणी ऊजळा रूपोटां झालिआं उजळा खवास पासेवांन हाजर लिआं ऊभा छै. इण भांतरा ओखद उआं राजांनरा साथनूं आरोगाड़ीजै छै. कितराइक तौ राजांन कपूरतररा लोचन किआं गिड़भागै मेघ ज्यों विराजमान हुइ नै रहिआ छै।

तठा उपरांति करि नैं राजांन सिलामति आटा मैदारी फांटां आणीजै छै. सिवपुरीरा देवजीर चोखा, चांवळ, कपूर सारीखा ऊजळा वीणीजै छै. नागरचालरा नीपनां गोहूँ, बजर कठकाळिआं मूंछारा. आंवारी सिलाक हुअै तिण भांतिरा, बारां बारां वरसांरा डाउडांरा कान दीधोजै. इण भांतिरा पांच पांच मण, दस दस मण गेहूं, चावळ आडिआं जाजमां धातिआं रोळीजै छै. कांकरा काढीजै छै. धूंए अंधर धूधळिआं छै. तुरीराउतें जीहीं जरै छै. जांगडिआंरी जोड़ी आडिआंर बांज झालिआं थकां हूकळिनै रही छै. वडां दांतरा सिरदारांरा खंभाइचो मांहे दूहा गाईजै छै. जस जांगड़ा गवाड़ीजै छै. ढाढिआंरो जोडी गजराज पटाझर ज्यों झाकड़ी खाइ नैं रही छै, इमिरितोरा झोला दे नैं रही छै जाणै सातम सरगै सुहागण हमामरै झरोखै झापां खाइ नै रही नैं च्यार टांक चावळ खाअै तौ सरोर अहार-विकार थाए. गीत, संगीत, तालबंध, अदंग, वीणा, सारंगो, तबूरारा साज लागि नैं रहिआ छै. इण भांतिरी आखाड़ै रंभा पात्र निरत कारणी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सोळै सिणगार कियां थकां कानरा झांझर वाजि नै रहिआ छै. श्रीमंडल राग कलावंत घमंड राग जमावि नै रहिआ छै. छै राग नै छत्रीस रागणी आलापीज रहिआ छै. तां राजानां मुंहडा आगि पंडित, मिश्रा, जोतसी, चारण, भाट बैठा छै. छभा मंडि नै रहिआ छै. कवेसुर कवित्त, गीत, छंद, दोहा, गाथा, वात कथी नै रहिआ छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति राजांन राजावत घणां अमलां किआं थकां आगै वखाणियां तिण भांतिरो दारू पिआं छकीआ उछकिआ साथसूं लांगोरी पोत किआं झालणानां पेठा छै. दरिआव मांहे घड़ नावां बांधी छै उणि होदरी हवा उवां घड़नावां ऊपरै सूरंती तंबाकू आरोगीजै छै. गुमांनरा कुरळा कीजै छै. घणीं वासावळीरो वाह लागि नै रहिओ छं. भीर वांट वांट नै पांणी उछाळीजै छै. हौकारै होंकारो हुइ नै रहिओ छै. पांणी मांहे वासावळीरो डोरो फूटि नै रहिओ छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति झलरंमि खेलि नै बारै पधारिआ छै. कपड़ा पहरीजै छै. वणाव कीजै छै हिलमी जेहाज पाथरीजै छै. बिछाइत गादी तकिआ फेर विराजमान कीजै छै. बेवड़ी, त्रेवड़ी, चौवड़ी पांत्यां जुडी छै. सूआर, पडिहार आडां डोआं, लांबां कुडछां, झालिआं थकां कछि नै रहीआ छै. चरू रहडूए घाति घाति घींसीजै छै. आडाआं डांगरां घातिआं चरू रठठाविजै छै तांह चरवांरा निहाळ्यासूं पहाड़ पड़ि सादानें रहिआ छै. देवगरी थाळें सोनें रूपेरा, सिरदारांरा मुहडा आगै मेलीजै छै. घणा मालवा पुरी काठा घहूंदा बटीजै छै. घणा केसयां मांस रजवैरा भीनां थका उधमीजै छै. घणां जोजरा रोटा, ऊजळा देवजीर जादूरा फूल हूवै तिण भांतिरा चावळ परूसीजै छै. मसकांरै मुंहडै घो नामीजै छै. अतरा मांहे सोहितै नै मांसरा चरू ऊतरिया छै. सोळा सोहिता धांधुसो पुलाब चकताळो जळचर मांस, थळचर मांस, उडणां पंखिआंरा मांस, भांति भांतिरा जुदा जुदा समार समार नै वणाया छै. प्याला मांहि परूसीजै छै. हाजर कीजै छै।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति दारूरी तूंगा लागीसूं ओछाछिआ घणें ठंढे पाणीसूं छांटि छांटि नै वडांरी साखांसूं नागळी थकी जूलें छै. पवनरो हवासूं टिप्पा खाइ नं रही छै. कोरी गागर मांहे घाति घाति ठारीजै छै. बतकां भरीजै छै. ऊजळा खवास पासेवांन करा बीड़ा झालियां हाजर खड़ा ऊभा छै. अतरा माहे दारू आय हाजर हुओ छै।

तठा उपरांति करि नं राजांन सिसामति दारूरो पाणींगो मंडियो छै. सो किण भांतिरो दारू. उलटैरो पलटै. पलटैरो अैराक, अैराकरो वैराक, वैराकरो संदली, संदलीरो, कंदली कंदलीरो कहर, कहररो जहर, जहररो कटाव, कटावरो नेस, नेसरो जेस, जेसरो मोद, मोदरो कमोद, कमोदरो हूल. घाहि लागें तो नांहि जागै, मुंहडै मैं मेल्हियां छातो लीह पड़ै चिगती भाठीरो तेज पूंज आसप अरोगीजै छै. घणां जडाव नैं चिणींरा प्याला फिर नैं रहिआ छै. इण भांतिरो दारू पांणिगो मंडिओ छै. उणि भांतिरो मांस उणि भांतिरो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सुहितो, उणि भांतिरा झररतां सूळांरो निकुल कीजै छै. साथ आरोगै छै. गोठि वडै रस आई छै. अरोगि नै चळू कीजं छं ऊपरा कपूर, पांन, बीड़ा, सोपारी, केसरि, ताड़ां, लौंग, डोडा, काथा, चूना, सजुगम, मुखवास, मुंहछण दीजं छै. सु कितरो एक साथ तौ गिड़ भागा मेघरो नांई झांख मारिआं कबूतर सा लोचनां घूमि नै रहिआ छं. सु कितरा एक तौ राजांन उछक छाक छकतां बकतां थड़ता घूमता पड़ता घोड़ा आया छै. घोड़ा आइ हाजर हुआ छै ।

तठा उपरांति करिनै राजांन सिलामति अतरा मांहे बधाईदार द्रोड़िआ छं. आगल महलांरां वणाव हुई नै रहिआ छं. सु कहै छै. ममांणी पाखांणरा महल सात खणां आमास चुणिआ थका, माळिआ, गोख, झरोखा, जाळी, बंगळा, कचवड़ी, असमानसूं लागि रही छै. औ जाळिआं चिगां ढलि नै रहो छं. कोडी चूनां कलारो छोह बंध आरीसौ झळकं तिण भांतिरौ लागं छै. आरीसंरा महल वणि नै रहिआ छं. धमलहरं कोरणो वणी छं. कछ पाचमी नै होंगल तबाकां ऊपर सोनैरी कळस इंडां झळकि नै रहिआ छं. सांझ समै रंग रंगरा वादळ दीसै छै. तिण भांतिरा महल आधोफेरे लागि नै रहिआ छं. केसरी कुम कुमें महल छटावीजं छैं. गुलाबरा छिड़काव हुवै छै. खस खान गुलाब छटावीजं छं. अगर उखेवीजं छं ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति जिके रायजादी राज कुंआर छै. त्यांरी खवास्यां देहीरी आरासि करै छै. घणां अगर, अरगजा, सूंधारो पीठी ऊगट मंजणां कीजै छै. जळ गुलाबसूं चिहुर टपकिआ छै. किण भांतिरा. जांणै मखतूलसूं मोतिआंरी लड तूटी अंगोछा धूपणां कीजै छं. खावास्यां फूल दे दे नैं चोटी गूंथै छै. फूलमांसू पाटा घूटी घूटी पाड़ै छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति नख सिख सूधो सिणगार वखाणीजै छं. वासिगां सारीखी पहपवेण ऊपरि सीसफूल मोतिआंरो वणाव वणि नै रहिओ छै. पूनिम-चंद सो मुख सोळै कला संपूरण विराजिओ छै. तिलक बीच बिंदी झिख नै रही छं. कबांण ज्यां बांकी भ्राहां भमर विलसी बिराज नै रहिआ छै. स्निघ नैणां स्निखा भळकां ज्यौ जळवालिआं टोए अणिआलोका जळ ठांसियौ छै सूं आसी नासिका बीच बेसर वणी, उजळै पांणी नरमदा मोती प्रोया सूं लटकि नै रहिआ छै, बिचै लाल मणी झलक नै रही छै. वसंत कोकिला सारीखी मधुरी वाणी बोलै. कनां जांणै पड़दं वीण वाजै छै. दाड़िम कुली सा दांतां मांही सोनांरी मेखां चमक नै रही छै. लाल प्रवालीसा अधरा रंगि लागि नै रहिओ छै पाकै अंब भोर चीटला ज्यौं हिड़की ऊपर चिबुक बणि नं रही छै. आरीसा सारीखा कपोलां जाणै सोनारा तबक विराजिआ छै. केसरिआ अलिकावलि काळा नाग ज्यौं चिटुला ज्यौं चिलक नै रही छं. चंदर थपेड़ा ज्यौं काने कुंडल झखि नै रही छै.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



गावड़ जाणें खरादी खराद उतारो छै. कमल नाळणी बांहां लाल चूड़ी वणिआ छै. विचै सोव्रन चूड़ी विराज रही छै. बाजूबंध झावी मखतूलसूं लटक रहिआ छै. लाल कमलसा हसत कमल जावक मेंहदीरें रंग लागा थकां. चोळा फळी सी आंगुळी. गोरै प्रांचै प्रांचीआं वणि रही छै. छाप मूंदड़ी नवग्रही जड़ाव वणियौ छै. उरस्थल कूंभाथ सारीखौ गजमोतोरो हार विराजियौ छै. जाणें मेरगिररा टूकां बीच गंगारी धारा धसी छै. नारंगी अणहार, सोपारी सा कठोर कुच वाटला तीखा कांचू वीच विराजिआ छै. अंगिआं ऊपरै फूलांरा चौसर पहरिआं लांधणिआं सिंघरी कटी लंक धड़े चड़ रहिआ छै. पान सारीखौ पेट पातलौ अम्रित सी नाभी कुंडली माहि पांणी पीतां ढळकतौ दीसै छै. जाणें काचरी सीसी मांहै गुलाब ढळकतौ दीसै छै. पेटरी त्रवली जांणें कामरा महलरी पाहुड़ी वणी छै. कर ले मापीजै तिण भांतिरै भमर लक ऊपरि कटि मेखळा वणि नै रही छै. सुराही गळारै घाटि सभासलं पींडी झीणें गिरीआ ऊपरि वाजणी पायलरा घूघरा रमझोळ झणकिआ जाणें कळहंसरा बच्चा बकोर करि रहिआ छै. पगरी राती पींडी खालिमी कूतरारी जीभ सारिखी, लाल कमल चरण जावक महिदी रंगसूं विराज रहिआ छै. पग अंगुळी राइवेलिरी कळी हीरा सा नख आरीसा ज्यों झांखि रहिआ छै. ऊपरै अणोटपोल पावटां विछआंरौ वणाव वणि नै रहिआ छै।

तठा तपरांत करि नै राजान सिलामत चंदावदनरी देहरी नरमाई गुलाव-फूल, तिल-फूल सारीखी. हंस गमणीरी गज गति लाड गति छै. इस भांत नख-सिख सूधा सोळै सिणगार कियां बारै आभूषण विराजिया छै. जाणें इन्द्र-लोकरी अपछरा, रूपरी रंभा आसमानरी ऊतर पड़ी. चित्रामरी पूतळी, विधाता हाथसूं समारी. कामरी केळि, विरहरी वीज, सुखरी सिळाव, सोनारी कांब हुवै तिण भांतिरी संकेळी, नख मांस मांहे ऊलाळी आकासि जावै, चावळरौ चौथो खावै, साख्यात पदमणी. वाळि वाळि नैं गांठ दीजै. इण भांतिरो तूंजी. हलका ज्यौं लचकती. रतनाळा लोचनां, अणिआळा काजळ सारींजै छै. जोहर कांचूं जड़िजै छै. भमर लंक, झीणा लंक ऊपरा चालहरा घाघरा वासिजै छै दखणो चीर ओढिजै छै पाटंबर नोलंबर जरकसीरा वणाव कीजै छै. आडिआं फणिआं मुखमली खासां विलाविआं थकां जाळौरी सांठै, खुरासाणी भळकै सांतिआं ऊंठ सौदागररै घोड़ै चालविआं पठाण अरड़ै आयै चींघडिआं रूठै, गाम-धणीरा सा लौचनां किआं, वाळि वाळि मोती आठविआं थकां, काळरा नेवर पहरिआं, केळिग्रभ चंदणरौ छेडौ, रतनारी रासि, अंधारैरौ आदीत, अरसरो अमरी, सरगरी झांप, विरहरौ समूह रूपरौ निधान, थाका हंसरी टोळी, निवायैरी हौळी, घणें हाट नैं चीरमां लपेटी थकी विराजमान होइ नै रहो छै. जाणें आसोजरी पूनमरौ चद्रमा सोळै कळा संपूरण उदित हुवौ छै. इण भांत ऊजळै पतिव्रतरी पाळणहार, ऊजळी सखिआंरो टोळीसूं राजहंस राइजादी राजकुंआरी झरोख चडो झांखै छै. बधाईदार दौड़िआ छै. वधाईदारां आइ खबर दीधी छै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तठा उपरांत करि नै राजान सिलामत घोड़ा दौड़ीजै छै. राजान राजावत मारू घरै पधारिआ छै. चौकि कलळ फूटि नै रही छै मायारा ऊबराव बहोड़ावीजै छै. कवि राजानां विदा कीजै छै. मायारा खवास पासेवान हाजर तेड़ीजै छै. गोखैं दीवा कीजै छै. महले दीविआं अगरदानिआंरी चहकि लागि नै रही छै. हाथी पगा ढोलिआ पाथरीजै छै।

तठा उपरांत करि नै राजान सिलामत राजान राजावत महले पधारिआ छै. महले आइ विराजमान हुआ छै. आगै त्रिगानैणी, अम्रित वैणी कामणी सिणगार सम्भिया छै. इणियाळा काजळ ठांसिया छै: वणाव किया छै. राजानरा मन राखै छै।

दूहा

गुण कामणि छंदो वयण. नमि नमि संधै नेह ।
पीरौ कहियौ धण करै, धणरौ कामणि अेह ।।

अमलांरा रंग-तरंग माणीजै छै. तेजपुंज आस्यपरा प्याला आरोगीजै छै।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति हमै राजान कामरा भूखिया, लांघणिया सीह ज्यों आपाळि नै रहिया छै. जाणै मदन-मयंद पछाड़ीजै छै. काछी जिमपुरी करि नै रहिया छै. विरही वाग ऊपडी छै. चौरासी आसणरा भेद कीजै छै. अस्टांग मिलण चुंबण १, अधरपान २, नखदान ३, कुच-मर्दन ४, पुड़पुड़ी ५, चुंहटी ६, चसका ७, मसका ८, हां जी, ना जी इण भांति कामरी कुहक पड़ि नै रही छै।

तठा उपरांत करि राजान सिलामत रंग-महल में प्रेम-झड़ लागि नै रही छै. सुरतांत-समय हुवौ छै: महलांरी हवा माणीजे. कांचुआंरी कस छूटी. मोत्रियांरी माळ तूटी. जाणै सुखरी लंका लूटी. इण भांत सुख-सेजे पौढिया. राति विहाणी. प्रभात हुवौ छै. रातीका काम-उजागर नैण घुळि नै रहिया छै. कपोले काम सुहागरी छाप लागी छै. खुलि नै रही छै. इण भांत सुख-विलास करतां छै रित बारै मास माणीजै छै।

दूहा

खट रित बारै मास फिरि, ज्यौं ज्यौं आवत जाइ ।
त्यौं त्यौं वात-वणावरा, दान तरंग सुहाइ ।।
.....,राज लोक सिणगार ।
ज्यारे प्रस्तावे चतुर, वणियौ भलौ विचार ।।
सुर-नर-नाग निघट्टियां, काळै केहरियां ।
जळ पुरियां पाखाण ज्यौं, गल्लां उवरियां ।।
वेटै बाप विसारिया, भाई वीसारै ।
सूरां पूरां गल्हड़ी, मागिण चीतारै ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi